मूल्य - 20

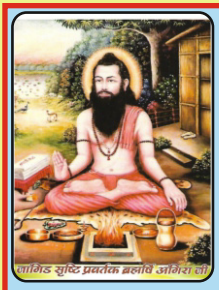

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMIN

अंगिराऽसि जंगिडः

वर्षः 119, अंकः 03, मार्च-2026 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2024-26 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

(नव संवत्सर 2083, नवरात्रि और राम नवमी की बधाई)

मैं महासभा रुपी परिवार को, 19 मार्च को , हिन्दू नव संवत्सर 2083 के मंगल आगमन पर, सूर्य की पहली किरणों के साथ ही, अन्त:करण से हार्दिक बधाई और शुभ मंगल कामनाएं देता हूँ। इस मंगलमय नव विक्रम संवत्सर के दौरान आपके जीवन में, सुख, समृद्धि , वैभव और शांति तथा खुशहाली का वास हो तथा ज्ञान के माध्यम से अज्ञान रूपी तिमिर का नाश हो और आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो और परमात्मा की अनुकम्पा सदैव ही बनी रहे।

इसके साथ ही 19 मार्च से ही शक्ति स्वरुपिणी माँ दुर्गा की अराधना के साथ ही भक्ति और शक्ति का 9 दिवसीय उत्सव, नवरात्रों के शुभारम्भ पर भी, हार्दिक बधाई देता हूँ । इन नवरात्रों के दौरान शक्ति और भक्ति की द्योतक, इन सभी देवियों की पूजा - अर्चना की जाती है, जो मनुष्यों के नैराश्य रुपी अंधकार का विनाश करके, जीवन को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। इन सभी देवियों की अनुकम्पा भी सदैव ही बनी रहे।

चैत्र शुक्ल नवमी को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का जन्मोत्सव भी है और मैं महासभा परिवार को इस पुनीत अवसर पर भी बधाई देने के साथ ही, भगवान श्री राम ने जिन, उच्च आदर्श मूल्यों की स्थापना की थी , उनका सत्य निष्ठा और समर्पण की भावना से पालन करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाने का स्तुत्य प्रयास करें। भगवान श्री राम की अनुकम्पा सदैव ही आप और आपके परिवार पर इसी तरह से बनी रहे।

महासभा प्रधान - रामपाल शर्मा

शुभलाभ
GREEN VALLEY
2&3 BHK LUXURIOUS FLAT
& SHOPS

शुभलाभ
VINTAGE
VILLA
6 BHK Luxurious Villas

THE
VINTAGE
by शुभलाभ
3 BHK Premium Living

शुभलाभ
HERITAGE
3 | 4 BHK Heritage Living
& Penthouse

शुभलाभ
SQUARE
Showrooms | Corporate
Entertainment

शुभलाभ®
GROUP

AHMEDABAD

THE VINTAGE
Naroda- Dehgam Road
Opp. Shyam Valencia Bungalow
New Naroda, A'bad-382230

Nilesh Sharma 96388 00449
Anurag Sharma 83201 68811

शुभलाभ
HEIGHTS
2 | 3 BHK Premium Living

SENTOSA
ROYAL BUNGALOW
4 BHK Royal Living Homes

PALATE
RESTAURANT & BANQUET

GRAND
Neelkanth
banquet & restaurant
100-1000 Capacity Banquet

FITNESS FUEL
365 Days Open, Luxurious Gym

गुजरात जिला के महीसागर जिला सभा , जिला महिला प्रकोष्ठ और युवा प्रकोष्ठ का शपथ ग्रहण समारोह, कैमरे की दृष्टि में।

INTERIO CRAFT

MERGER OF **ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

With its existence over three and half decades, we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.

Our Management Team

Rampal Sharma | Deepak Sharma | Jagmohan Sharma | Amith Sharma

OUR STRENGTHS

- QUALITY OF WORK
- SERVICE COMMITMENT
- ON TIME COMPLETION
- PRICING

Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

Our Franchise Stores

- N R Retails, Uspolo Store, Kammanahalli, BANGALORE
- Uspolo Store, Vega City Mall, BANGALORE
- Krishna Retails, Uspolo Store, USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM-Forum, Sujana Mall, HYDERABAD
- Uspolo Kids, USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- Uspolo Denim, USPA Denim - Sarat City Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- Krishna Ventures, Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- Third Wave Coffee, Bel Road, BANGALORE
- Wrogn Store, L&T Mall, HYDERABAD
- Swish Salon, BANGALORE

OUR SERVICES

ON SITE

- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

OFF SITE

- Production of Furniture
- Metal Works

WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS

WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL

Reach us:

Corporate Office: No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

Some of our Valuable Clients

Flying Machine, U.S. Polo Assn., Aeropostale, Arrow, LP Louis Philippe, Peter England, Nautica, GAP, trueblue, Gant, Allen Solly, Van Heusen, lifestyle, max, homecentre, ZOYA, Tanishq, Taneira, Titan, Helios, fastrack, Titan eyeplus, Mia, Melorra, Centro, Birkenstock, Third Wave Coffee, Swayamvar, Shoppers Stop, Bluestone, SBeauty, Swish, Tasva, Manyavar

''जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका'' के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित पंजीकृत सं. एस.-27/1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाष:- 9990070023

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा ''जांगिड'' - 09844026161

महामंत्री-पं.सांवरमल ''जांगिड'' - 09414003411

सम्पादक-पं.रामभगत शर्मा ''जांगिड'' - 09814681741

सह सम्पादक-पं.प्रहलाद राय शर्मा ''जांगिड''- 08140229679

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

(01-10-2018 से)

सदस्यता	रुपये
प्लैटिनम सदस्य	-1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	- 51,000/-
रजत सदस्य	- 25,000/-
विशेष सम्पोषक	- 21,000/-
सम्पोषक सदस्य	- 11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	- 2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	- 500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	- 240/-
मासिक पत्रिका शुल्क	- 20/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 201/-

महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182** , **(IFSC Code: SBIN0006814)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, मुण्डका, नई दिल्ली-41) में 25000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्त्ता से अनुरोध है कि जमापर्ची की काउण्टर फाईल मय सम्पूर्ण विवरण (पाने वाले का नाम **''अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा''** अवश्य लिखें) सहित महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें तथा प्रत्येक लेन-देन पर 60/- रूपये बैंक चार्जेज के रूप में अतिरिक्त जमा करायें, अन्यथा महासभा उस कार्य को करने में असमर्थ रहेगी। क्योंकि बैंक चार्जेज का आर्थिक बोझ महासभा पर पड़ता है। महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है। दानदाता अपनी आयकर विवरणी में दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

अरूण कुमार (अनिल जांगिड)

कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810988553

॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अनुक्रमणिका

03. गुजरात जिला के महीसागर जिला सभा, समारोह, कैमरे ..
07. संपादकीय...
09. प्रधान की कलम से...
11. महासभा कार्यकारणी की आगामी त्रैमासिक मीटिंग..
12. जीवन में प्रसन्नता का राज है, जो कुछ मिल जाए....
13. जीवन में असफलताओं पर ही सोचें अटकी रहेगी तो...
14. मेरा परिवार स्वर्ग से भी सुंदर है, जीवन में सिर्फ यही....
16. नव विक्रम संवत के दिन महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश...
17. विक्रम संवत 2083 और इसके साथ ही नवरात्रि की...
18. दुबई में होली के रंग महादेव के संग ऐतिहासिक महोत्सव
19. मानव जीवन में साधुता और विनम्रता बेहतर आचरण...
20. श्रीमती सुनीता देवी जांगिड को बहरोड़ तहसील का..
21. ईश्वर की न्याय व्यवस्था है बड़ी ही अलौकिक और..
22. 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय विश्व महिला दिवस के अवसर.
23. शीतल विश्वकर्मा को राजस्थान यूथ आईकॉन अवार्ड...
24. फरीदाबाद में ब्रह्मर्षि अंगिरा शिक्षा समिति के चेयरमैन..
25. तहसील सभा निवाई की नवनियुक्त कार्यकारिणी का..
26. नव सम्वत्सर 2083 के दौरान हर क्षण में एक नई चेतना.
27. मोहनलाल जांगिड, तहसील सभा रेनवाल के अध्यक्ष...
28. दीप विश्वकर्मा पत्रिका के रजत जयंती वर्ष पर..
29. राकेश जांगिड ने बॉडी बिल्डिंग में,
31. बढई समाज में पैदा होने वाले जसप्रीत बुमराह को....
33. जांगिड समाज के सामूहिक विवाह सम्मेलन में 58 जोड़ो
35. आत्मसंतुष्टि के लिए धैर्य, साहस और सहनशीलता की.
36. शिव जांगिड, राजकीय कालेज नारनौल में, असिस्टेंट...
38. निर्मल जांगिड ने 12 वीं कक्षा में चार बार फेल होकर,
40. अंधेरों को चीरकर निकली डोभी की, निशा बनीं...
41. बानसुर तहसील अध्यक्ष दयानन्द जांगिड बने.....
42. यश जांगिड अन्तर्राष्ट्रीय बार एसोसिएशन में क्षेत्रीय..
44. पंकज जांगिड हरियाणा शिक्षा विभाग में, हिन्दी में...
46. डॉ. अनुपमा शर्मा ने पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में पीएचडी
47. श्री विश्वकर्मा जांगिड समाज सेवा समिति पाली के.....
48. जांगिड अतिथि भवन, रतनगढ़ की नई कार्यकारिणी का.
49. माया देवी जांगिड नीमराना तहसील अध्यक्ष बनी।
50. पश्चिम बंगाल प्रदेश सभा द्वारा होली मिलन समारोह का
51. सीकर में होली स्नेह मिलन समारोह का भव्य आयोजन
52. कविता और जांगिड पत्रिका में, ज्ञानवर्धक लेख..
53. महासभा के एक लाख रुपये के प्लैटिनम ..
59. शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रुपये के..
60. वैवाहिक विज्ञापन....
61. ग्राम चौसला में आयोजित सामूहिक विवाह... चित्रावली

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)
शुभ लाभ ग्रुप
कृष्णा इंटीरियर
भारत व्हील
शर्मा एंड कंपनी
भागीरथ मोटर्स

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही है। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ है तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते है कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती है।

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्वानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें! बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे है। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है - तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6) अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

- सम्पादक

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

सम्पादकीय-------

सम्पादक, राम भगत शर्मा

जीवन में परम सन्तोष और प्रसन्नता, भगवान के प्रति समर्पण और आत्मनियंत्रण से ही प्राप्त होती है।

इस मानव जीवन में सभी लोग खुश रहना चाहते हैं और दुखी कोई भी नहीं होना चाहता है। जबकि इस मानव जीवन में, दुःख और सुख, धूप और छांव की तरह ही हैं और कई बार एक मनुष्य को न चाहते हुए भी, अपने भाग्य और कर्मो के लेख के अनुसार भोगना ही पड़ता है। अब मन में, एक यक्ष प्रश्न यह उठता है कि इस जीवन में परम सन्तोषी और खुश रहने का मूल मंत्र क्या है?, इसको गहराई से समझने और जानने के लिए सबसे पहले, अपने आप पर, आत्मविश्वास और आत्म नियंत्रण करना होगा, क्योंकि यह आत्मनियंत्रण और आत्मनियमन ही, इस मानव जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है और **इसके माध्यम से उन विवादों और आशंकाओं से बचा जा सकता है, क्योंकि आत्म-सम्मान और आत्मनियंत्रण ही, एक प्रकार का ऐसा अंकुश है, जो अनावश्यक आदतों को नियंत्रित करके हमारे मन को स्थिरता और नई ऊर्जा प्रदान करता है।**

इसलिए इस जीवन में **जो साधक अपने मन को, साधना और अभ्यास के द्वारा नियंत्रण में कर लेता है और मन की लगाम को अपने हाथ में रखता है और मन को भटकने नहीं देता है , तो ऐसा साधक सहज रूप से ही, अपने लक्ष्य को हासिल कर लेता है। इस जीवन में कई बार, अनावश्यक आशंकाओं के वशीभूत होकर , अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते हैं और मन ही मन में परिव्याप्त आशंकाओं के भय से, एक अपराध बोध का शिकार हो जाता है। इसलिए जहां तक संभव हो सके , अपनी भावनाओं को व्यक्त करने से रोकने की अपेक्षा, उनको एक दिशा देना जरुरी है** और इसी प्रक्रिया को एक प्रकार से आत्म नियमन कहते हैं और जिसने भी, अपने जीवन में आत्मनियमन और **आत्मविश्वास के बल पर अपनी भावनाओं को आत्मनियंत्रण करने में महारथ हासिल कर ली है, ऐसा व्यक्ति जीवन में सभी क्षेत्रों में आशातीत सफलता हासिल कर लेता है** और उसे प्रसन्नता और सन्तोष की अनुभूति होती है।

एक प्रकार से देखा जाए तो, इस जीवन में **आत्म नियमन ही, वह पुल है, जो हमारी वास्तविक इच्छाओं और उपलब्धि के बीच एक सेतू का कार्य करता है। जिस पर चढ़कर ही एक व्यक्ति अपने जीवन में, अपनी सहज और स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर आत्मनियंत्रण रख सकता है** और इसके साथ ही वह आत्मनियंत्रण से ही इस जीवन में, अपने भीतर की आन्तरिक ऊर्जा को बनाए रखता है और इस अन्त:करण की ऊर्जा के संतुलित उपयोग के बिना विवेक और ज्ञान भी नहीं हो सकता है। इसलिए कहा गया है कि इस जीवन में **जो व्यक्ति स्वयं की प्रवृत्तियों पर आत्मनियंत्रण रखना सीख लेता है, तो यही अन्त: करण की ऊर्जा ही, अन्त में, एक व्यक्ति की सफलता का मूलाधार बनती है।** इसलिए कहा गया है कि **जिसने खुद को साध लिया उसने इस दुनिया को भी साध लिया है।** जिस प्रकार से वसंत का महीना आते ही , प्रकृति खिल उठती है और वृक्ष फिर से हरे- भरे हो जाते हैं और पुराने सूखे पत्ते, नए पत्तों के लिए रास्ता प्रशस्त करते हैं, **उसी प्रकार इस जीवन में भी , कुछ भी नया, तभी सम्भव हो पाएगा, जिस समय हम पुराने विचारों का परित्याग करने का संकल्प लें और नए विचारों को आत्मसात करें।**

इसलिए कहा गया है कि जिस व्यक्ति में, आत्मविश्वास और आत्मनियंत्रण नहीं होगा, पुरानी विस्मृतियों और बीती हुई विषाक्त यादों, घोर अपमान और अपनी असफलताओं को मन से ही पकड़े रखता है। ऐसे व्यक्ति के मन के भीतर हमेशा ही, एक अन्तर्द्वन्द चलता ही रहता है। **जिस प्रकार से , बसन्त ऋतु में फूल खिलते हैं और वह अपनी खुशबू फैलाते रहते हैं,**

उसी प्रकार से जिस व्यक्ति ने , वसंत की तरह ही अपने जीवन में, बहना सीख लिया है, वह कभी भी टूटता नहीं है और जिसने समय के साथ अपने आपको बदल लिया है, वह कभी भी टूटता नहीं है। इसके साथ ही, जिन महानुभावों ने आत्मनियंत्रण कर लिया है उनको ही इस जीवन में, परम सन्तोष और प्रसन्नता प्राप्त होती है।

इस जीवन में आप अगर खुश रहना चाहते हो तो उसका **एक ही मूल मंत्र है और वह मूल मंत्र है, अपनी विकृत भावनाओं पर अंकुश लगाते हुए आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ अपने आपको उस परमपिता परमात्मा के प्रति पूर्ण रूप से समर्पण कर दें, क्योंकि यह शरीर हमारा किराए का घर है, और किरायेदार को कभी भी घर से निकाला जा सकता है यह बात आपको अच्छी तरह से समझनी होगी।**

जिस दिन आपके अन्तर्मन में , यह भावना प्रबल हो गई कि, हम जैसे भी अच्छे या बुरे हैं, उस परमपिता परमात्मा भगवान् के दास हैं और जो इस, परोपकार की भावना के लिए , प्रतिक्षण उस परमात्मा का हृदय के अन्तःकरण से धन्यवाद करता रहता है उसी का जीवन सार्थक है। **इसके साथ ही, जो कुछ भी परमात्मा ने , हमको जिस योग्य समझकर, जो कुछ भी दिया है, उसके लिए भी हम सदैव ही परमात्मा का हृदय के अन्तःकरण से आभार व्यक्त करें।** जीवन में यह बात हमें, अवश्य ही समझ लेनी चाहिए, कि परमात्मा हमें केवल वही देते हैं, जो परमात्मा, हमारे लिए आवश्यक समझते हैं। **इसके साथ ही इस बात का भी हमें सदैव ही परम सन्तोष रहना चाहिए कि, परमात्मा जो हमें नहीं देते हैं, वह उनकी नजर में हमारे हित के लिए उचित नहीं होगा।** जिस दिन आपकी यह धारणा बन गई, उसी दिन से आत्मज्ञान का रास्ता प्रशस्त हो जाएगा।

इस मानव जीवन में प्रसन्नता और आत्म संतोष हासिल करने के लिए परमात्मा पर अडिग भरोसा रखो और अपने आपको पूर्ण रूप से उस परमात्मा के प्रति समर्पित कर दें। इससे असीम आनन्द और सुख की अनुभूति होगी। इसलिए कहा गया है कि **जिस व्यक्ति का विश्वास हर परिस्थिति में अपने प्रभू पर बना रहता है, ईश्वर भी उस व्यक्ति का विश्वास किसी भी परिस्थिति में कभी भी टूटने नहीं देते हैं।** हर एक आदमी, जिसमें पापी-से-पापी, दुष्ट-से-दुष्ट भी शामिल हैं, वह भगवान को अपना मान सकते हैं, क्योंकि एक परमात्मा ही अनन्त और असीम तथा सच्चा है, इस दुनिया में बाकी सभी मान्यताएं झूठी हैं। गीता के अनुसार इस जीवन में कर्म करना, हर मनुष्य का धर्म माना गया है, पर वह कर्म निष्काम और बिना फल याचना के होना चाहिए और जिस व्यक्ति ने सम और विषम परिस्थितियों में भी सम रहने की कला सीख ली है, तो उससे महान साधक इस संसार में कोई भी नहीं है और उसने इस दुनिया की **असीम धन संपदा पा ली है और यही आत्मविश्वास और आत्मनियंत्रण ही, वह शक्ति है, जो शांति और सन्तोष के साम्राज्य का निर्माण करती है।**

इस मनुष्य जीवन में, यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि **कर्म ही मनुष्य को बंधन में डालते हैं और इस कर्म बंधन से छूटने का एक मात्र उपाय यह है कि जीवन में, जो भी कर्म किए जाएं, वह सभी बिना फल की इच्छा और निस्वार्थ भावना से किये जाएं और इस प्रकार से समत्वबुद्धि से युक्त होकर कर्म करने से ही , मनुष्य उन कर्मों के बन्धनों में नहीं फंसता है** और जन्म-मरण के चक्र से भी मुक्त हो जाता है और उसे प्रसन्नता और असीम सन्तोष की अनुभूति होती है और **ऐसे व्यक्ति को, अपने जीवन का अन्तिम लक्ष्य भी समझ में आ जाता है, जो वास्तव में, उसके भीतर, आनन्द और सन्तोष की भावना को जन्म देती है।**

अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे।।

अगर मनुष्य के अन्तःकरण में **आध्यात्मिकता का बीजारोपण हो जाए और अगाध विश्वास और आस्था के साथ, भगवान में अपनेपन का अहसास होने लग जाय तो , फिर परमात्मा की प्राप्ति में देरी नहीं हो सकती है और इसके लिए आत्मविश्वास और आत्मनियंत्रण की भावना का होना जरूरी है।**

******

प्रधान की कलम से.....

महासभा प्रधान- रामपाल शर्मा

सबसे पहले मैं, रंगों के पावन त्योहार होली तथा पारस्परिक सद्भाव, खुशहाली और आपसी सौहार्द और समरसता का द्योतक तथा ऊर्जा का स्रोत फागोत्सव, **अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस**, नव संवत्सर विक्रम संवत 2083 और इसके साथ ही शक्ति और भक्ति का प्रतीक, नवरात्रि, दुर्गा अष्टमी और रामनवमी के पावन अवसर पर बधाई देता हूँ । आदिशक्ति माँ दुर्गा और सभी 9 देवियों तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, आपकी सभी मनोकामनाओं को नव संवत्सर विक्रम संवत के दौरान पूरा करें और माता रानी की विशद अनुकम्पा आप और आपके परिवार पर सदैव ही इसी प्रकार से बनी रहे।

प्रधान,रामपाल शर्मा

हमारे जीवन का संचालन , भगवान की अनुकम्पा से और हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर ही होता है और उन्हीं कर्मो के लेखे - जोखे के अनुसार ही फल मिलता है और इतना ही नहीं, इस जन्म में हम जो कर्म करेंगे, उन कर्मो का फल भी अगले जन्म में, अवश्य ही भोगना पड़ेगा। लेकिन मेरी यह मान्यता है कि, जीवन में, भगवान के प्रति भक्ति का बीज, प्रस्फुटित उनकी कृपा से ही होता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की पावन नगरी, अयोध्या में, लोगों की आस्था और विश्वास तथा श्रद्धा का प्रतीक, भगवान श्री राम का भव्य मन्दिर बन कर तैयार हो चुका है और सबसे बड़ी बात यह है कि अब इस धार्मिक और आध्यात्मिक स्थल पर लोगों की आस्था और बढ़ते विश्वास के कारण ही, यहां पर दर्शन करने वाले लोगों की भीड़ निरन्तर बढ़ रही है और मैं समझता हूँ कि समाज के लोगों की सुविधा के लिए, रामलला की धरा अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की प्रेरणा से ही **महासभा ने अयोध्या में एक प्लॉट लेकर उस पर धर्मशाला और भगवान विश्वकर्मा का भव्य मंदिर बनाने का संकल्प लिया है।**

महासभा के इस संकल्प और मिशन को पूरा करने के लिए, महासभा की हैदराबाद में आयोजित की गई त्रैमासिक बैठक में, यह निर्णय लिया गया था कि अयोध्या में, धर्मशाला और भगवान विश्वकर्मा के मंदिर का निर्माण किया जाए और इस दिशा में बढ़ने के संकल्प के साथ ही, इस योजना पर कार्य शुरू कर दिया गया हैं और **मुझे विश्वास है कि किसी भी कार्य में सफलता हासिल करने का राज, हाथों की लकीरों में नही, अपितु आत्मविश्वास, समर्पण और धैर्य में छुपा हुआ है** और इसी लक्ष्य को आत्मसात करके ही हम आगे बढ़ रहे हैं। इस परिकल्पना को मूर्त रूप देने का कार्य, महासभा के सत्यनिष्ठ और समर्पित कार्यकर्ताओं द्वारा किया जा रहा है। **मुझे विश्वास है कि इन नवरात्रों के दौरान और रामनवमी तक भगवान श्री विश्वकर्मा मंदिर और धर्मशाला निर्माण के लिए भूमि आवंटित होने का शुभ समाचार समाज के लोगों को मिल जाएगा।**

मैं भी, पहली बार पिछले साल सन् 2025 में मेरी अर्धांगिनी और जीवन संगिनी, श्रीमती कृष्णा शर्मा के साथ, **भगवान श्री राम के नवनिर्मित मंदिर और भगवान श्री रामलला के दर्शन करने के लिए अयोध्या गया था और उस समय, मुझे भगवान श्री रामलला के दर्शन करने से जो असीम आनन्द की अनुभूति हुई उसका मैं, शब्दों में बयान नहीं कर सकता हूँ।** मेरे भीतर एक आध्यात्मिक चेतना का संचार हुआ है और उसके बाद तो, महासभा से जुड़े हुए समाज हितेषी लोगों का अयोध्या में निरन्तर आना जाना लगा रहा है और अन्त में, **जांगिड समाज के कोहिनूर , भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी और उत्तर प्रदेश सरकार में आयुक्त, सुभाष चन्द्र शर्मा के सहयोग से , अयोध्या में अयोध्या विकास प्राधिकरण की एक जगह चिह्नित करके, उसको खरीदने के लिए सभी औपचारिकताएं पूरी की जा रही हैं।**

मुझे विश्वास है कि इस सुखद समाचार के बाद, महासभा परिवार ही नहीं अपितु भगवान श्री राम में, आस्था और विश्वास रखने वाले, समाज के राम भक्तों में, एक नई आशा और विश्वास का संचार होगा, क्योंकि उनको भगवान श्री रामलला के दर्शन करने के बाद, भगवान श्री राम की नगरी अयोध्या में, रहने की उचित व्यवस्था उपलब्ध हो सकेगी, **क्योंकि भगवान श्री राम की पावन धरा, अयोध्या नगरी का, आज जिस प्रकार से विस्तार और सर्वांगीण विकास हो रहा है, इससे अयोध्या**

में, जमीनों के भाव आसमान छूने लगे हैं और जमीन खरीदना, आम आदमी की पहुंच से बाहर हो गया है। अयोध्या में, इस धर्मशाला और भगवान विश्वकर्मा के मन्दिर निर्माण का उद्देश्य भी यही है कि, राम भक्त श्रद्धालु,अयोध्या में भगवान श्री राम के दर्शन करके, अपनी आध्यात्मिक प्यास को बूझा सकें और इसके साथ ही भगवान विश्वकर्मा के दर्शन करने के साथ ही, यहां पर रात्रि विश्राम करके अपनी इस धार्मिक और पावन यात्रा को सफल बना सकेंगे।

मैं एक बात का स्वयं ही पक्षधर रहा हूँ कि समय से पहले और बिना भाग्य के कुछ भी नहीं मिलता है। इसलिए कहा गया है कि **होइहि सोइ जो राम रचि राखा ।** पिछले चार वर्षों के दौरान एक बात तो, **मैं यह , निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि, अगर कोई आपसे उम्मीद रखता है, तो आप भी उसके यकीन पर खरा उतरिए और मैंने समाज के लोगों की, हर उम्मीद पर सदैव खरा उतरने का प्रयास किया है।** महासभा का मुण्डका का भव्य भवन, इस बात का साक्षी है कि, किस प्रकार से समाज के लोगों ने और भामाशाहों ने मेरा हौसला उस समय बढ़ाया जिस समय, मेरे मन में निराशा छाई हुई थी और मेरे मन में, एक आशंका घर कर गई थी कि **महासभा का यह भवन शायद, मेरे कार्यकाल में पूरा नहीं हो पाएगा, लेकिन मैं भगवान का लाख - लाख शुक्रिया करता हूँ कि उन्होंने मेरे जज्बे को कभी भी, कम नहीं होने दिया और इसके साथ ही, समाज के भामाशाहों और दानदाताओं का भी हृदय से आभारी हूँ , जिन्होंने मेरे हौसलें को कभी भी कम नहीं होने दिया और दिल खोलकर मदद की और जिसका फल आज आपके सामने है।** क्योंकि इंसान उसी से उम्मीद रखता है, **जिसको वह अपने सबसे करीब मानता है और आपने मुझे, अपने करीब समझते हुए ही, इस उक्ति को चरितार्थ करके दिखलाया है और इसमें कोई भी अतिशयोक्ति नहीं है।**

अब आप सभी के भरोसे पर, **महासभा का प्रधान और मुख्य सेवक होने के नाते ही , यह संकल्प लिया गया है कि, अयोध्या में समाज की, एक धर्मशाला के साथ - साथ भगवान विश्वकर्मा के मन्दिर का भी निर्माण किया जाएगा और मुझे विश्वास है कि यह कार्य भी , महासभा के कर्मठ कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों तथा दानदाताओं के अनन्य सहयोग और समर्थन से भगवान श्री राम की जन्मभूमि में यह सपना भी पूरा हो जाएगा।** लेकिन इस भव्य योजना को मूर्त रूप देने के लिए हम सभी को एक साथ मिलकर चलना होगा तभी इस सपने को साकार किया जा सकता है। इसलिए **जा विधि राखे राम ता विधि रहिए** और इस मूल मंत्र को, आत्मसात करते हुए ही हम, सभी भगवान श्री राम और आराध्य देव भगवान विश्वकर्मा के आदर्शों और सिद्धान्तों को आत्मसात करते हुए ही इस शानदार मिशन को पूरा करने में सफल होंगे।

अन्त में, एक बात मैं पुनः दोहराना चाहता हूँ कि अब, देश में अप्रैल में, जाति जनगणना शुरू हो रही है और इस यक्ष प्रश्न के बारे में मूल प्रश्न अभी भी बना हुआ है और मूल प्रश्न यह है कि , **इस जातिगत जनगणना में, अपने नाम के आगे जांगिड शब्द का उपयोग करें क्योंकि इससे, समाज का संगठन मजबूत होगा और संगठन के आधार पर ही राजनीति में भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है। इसलिए सबसे पहले जांगिड और उसके बाद आप अपनी सुविधानुसार कुछ भी लिखवा सकते हैं।**

आओ, हम सभी एक साथ, मिलकर एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें। इसके साथ ही मैं पुनः आप सभी को बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

इसके साथ ही, फरीदाबाद हरियाणा में 5 अप्रैल को आयोजित होने वाली महासभा की त्रैमासिक बैठक और प्रदेश सभा के शपथ ग्रहण समारोह में, महासभा की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भाग लेकर इसे सफल बनाने में अपना भरसक सहयोग प्रदान करें।

विपुल धन्यवाद।

****

जय श्री विश्वकर्मणे नमः

पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023

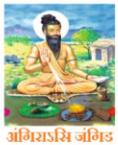

अंगिराऽसि जांगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, **E-mail:** Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2938/2026 **दिनांक 17/03/2026**

प्रेषित,

सम्माननीय, समस्त प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश प्रभारी,
समस्त महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारी,
अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा - दिल्ली

विषयः- महासभा कार्यकारिणी की आगामी त्रैमासिक बैठक फरीदाबाद में आयोजित करने बाबत

महोदय,

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के सम्माननीय समस्त प्रदेशाध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों एवं महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आगामी त्रैमासिक मीटिंग **श्री रामपाल शर्मा, प्रधान - महासभा** की अध्यक्षता में **दिनांक 05 अप्रैल, 2026, रविवार को प्रात: 9.0 बजे से Rosella by SK, प्लाट नम्बर 15/1, सेक्टर 27, मथुरा रोड, मेट्रो स्टेशन के पास, फरीदाबाद (हरियाणा)** में आयोजित की जायेगी।

अतः महासभा कार्यकारिणी के समस्त पधाधिकारीगण एवं समस्त प्रदेश अध्यक्ष / प्रदेश प्रभारी ससम्मान सादर आमंत्रित हैं, कृपया बैठक में समय पर पधार कर अपने बहुमूल्य सुझावों से समाज उत्थान के लिए महासभा को नई दिशा देने में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए सहयोग प्रदान करें।

नोट :-

1. **त्रैमासिक मीटिंग में पधारने वाले सिर्फ कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के लिए 4 अप्रैल को रात्रि में ठहरने कि व्यवस्था नईदिल्ली स्टेशन के पास पहाड़ गंज विश्वकर्मा मन्दिर एवं महासभा के मुंडका भवन में की गई है ।**
2. **मीटिंग का एजेंडा एवं मीटिंग स्थल की लोकेशन** महासभा कार्यकारिणी के ग्रुप्स में शीघ्र ही अपलोड कर दी जाएगी ।

धन्यवाद।

(सांवरमल जांगिड)
महामंत्री – महासभा

जीवन में प्रसन्नता का राज है, जो कुछ मिल जाए उसी में सन्तोष करना।

श्रीमती सविता शर्मा

इस जीवन में सभी लोग खुश रहना चाहते हैं, लेकिन खुश रहने के लिए क्या मूल मंत्र है, इसको समझने और जानने की सबसे बड़ी जरूरत है और जीवन में खुश रहने के लिए सबसे पहले अपने आप पर आत्मविश्वास और आत्म नियंत्रण करना होगा, क्योंकि आत्मनियंत्रण ही इस जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। आत्म नियमन या आत्म नियंत्रण ही जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है । क्योंकि आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान तथा आत्मनियंत्रण ही, एक प्रकार से हमारी आदतों को स्थिरता प्रदान करता है और **जो साधक अपने मन को नियंत्रण में रखता है और उसको भटकने नहीं देता है वह अपने लक्ष्य को शीघ्र ही हासिल कर लेता है। भावनाओं को रोकना नहीं अपितु उनको दिशा देना जरुरी है और यही एक प्रकार से आत्म नियमन है और जिसने आत्म नियमन में महारथ हासिल कर ली है,** वह जीवन में हर क्षेत्र में सफलता हासिल करता है।

इस जीवन में आत्म नियमन वह पुल है जो हमारी इच्छाओं और उपलब्धि के बीच बना हुआ है। इसके बिना ज्ञान भी अधूरा ही है। जीवन में जो व्यक्ति खुद की प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखता है, वह किसी भी परिस्थिति में अपनी ऊर्जा को बनाए रखता है और इस सबके बिना ज्ञान भी व्यर्थ है। इस जीवन में **जो व्यक्ति खुद की प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखता है और यही ऊर्जा वास्तव में, अन्त में, एक व्यक्ति की सफलता का आधार बनती है।** इसलिए कहा गया है कि **जिसने खुद को साध लिया उसने दुनिया को साध लिया है।**

जीवन में वसंत का महीना आते ही प्रकृति खिल उठती है। **वृक्ष फिर से हरे - भरे हो जाते हैं, लेकिन वह पुराने पत्तों को पकड़ कर नहीं रखते हैं और सुखे पत्ते अपने आप ही गिर जाते हैं, जीवन जब उससे दूर चला जाता है तो हम दुखी हो जाते हैं और दुखी होकर शोक मनाते हैं। इस जीवन में नया तभी आएगा, जिस समय आपमें पुराने को छोड़ने का साहस होगा।** जो मन बीते हुए , नुकसान, अपमान और अपनी असफलताओं को पकड़े रखता है उसके भीतर हमेशा ही अन्तर्द्वन्द चलता ही रहता है, बाहर मौसम कैसा भी हो।

इसी प्रकार बसन्त ऋतु में फूल खिलते हैं, पर वह किसी से भी आग्रह नहीं करते कि उनकी तरफ देखा जाए, वह तो सहज रूप से ही अपनी खुशबू फैलाते रहते हैं बिना किसी आसक्ति और स्वार्थ के, लेकिन इसके विपरीत मनुष्य कोई कर्म करता है तो, वह उसके फल की चिंता में उलझ जाता है। अगर वही कर्म किसी भी स्वार्थ के बिना स्वभाव बन जाए तो, उसमें रस पैदा हो जाता है और अपने उद्देश्य का पता चल जाता है। इसलिए कहा गया है कि वसंत की तरह ही जिसने बहना सीख लिया, वह टूटता नहीं है, अपितु समय के बहाव के साथ अपने आपको ढाल लेता है।

जीवन में रिश्तों में भी यही बात लागू होती है कि, जहां पर अधिकार है, वहां पर डर है और जहां अपेक्षा है, वहां पर तनाव है और जहां पर स्वीकार्यता है, वहीं पर सहजता है। इसलिए वसंत का प्रेम जीवन को बांधता नहीं है, बल्कि मुक्त करता है और प्रेम वहीं पर टिकता भी है। **अत: वसंत ऋतु जीवन में एक बहुत ही सकारात्मक संदेश देने आती है कि जीवन को जीने का सही तरीका, पकड़ना नहीं अपितु खिलना है, जिस समय मनुष्य अपने भीतर अन्त: करण में इस वास्तविक सत्य को उतार लेता है, तो उसे बाहरी परिस्थितियां बहुत ही कम प्रभावित करती हैं।।**

हम जैसे हैं, भगवान् के हैं। अच्छे हैं तो भगवान् के हैं, बुरे हैं तो भगवान् के हैं। जैसे विवाहित स्त्री पति सेवा में ही भगवान को देखती है उसी तरह भक्त भगवान् के सिवाय दूसरे को अपना मान सकता ही नहीं। झूठी बात कैसे माने ? भगवान् को हर एक आदमी अपना मान सकता है। पापी-से-पापी, दुष्ट-से-दुष्ट आदमी भी भगवान् को अपना मान सकता है। कारण कि यह मान्यता सच्ची है, दूसरी सब मान्यताएँ झूठी हैं।

आपको हजारों आदमी कह दें कि तुम भगवान् के नहीं हो तो उनसे यही कहें कि आपको पता नहीं है। **भगवान् भी कह दें कि तुम हमारे नहीं हो तो उनसे कहें कि आपको भूल हो सकती है पर मेरे को भूल नहीं हो सकती !** इतना पक्का विचार होना चाहिये ! **अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे।।**

इस तरह दृढ़ता से भगवान् में अपनापन हो जाय तो फिर परमात्मा की प्राप्ति में कभी भी देरी नहीं हो सकती है।

विपुल धन्यवाद। *******

जीवन में असफलताओं पर ही सोच अटकी रहेगी तो सफलता का वरण कैसे होगा।

महासभा के पूर्व प्रधान, कैलाश बरनेला

भगवान ने मानव को यह बहूमूल्य जीवन दिया है और इस जीवन के सफलता और असफलता नामक दो पहलू हैं। लेकिन कई बार हम असफल होने पर बदलती हुई परिस्थितियों में, अनावश्यक रूप बेचैन हो उठते हैं और यह बेचैनी और अशांति, धीरे-धीरे हमारे मन को कमजोर करने के साथ ही, सकारात्मक ऊर्जा को भी समाप्त कर देती है और मन की विस्मृतिया धुंधली होने लगती हैं इससे अनावश्यक रूप से एक व्यक्ति का ध्यान केवल असफलता पर ही टिक जाता है और इन परिस्थितियां पर व्यक्ति का नियंत्रण नहीं रहने के कारण इसका दुष्परिणाम यह होता है कि, असफल होने के बाद हम वर्तमान से निरन्तर कटते ही चले जाते हैं।

ऐसी ऊहापोह की स्थिति से छूटकारा पाने के लिए, आध्यात्मिक साधना का मार्ग एक नई दिशा दिखलाता और एक नई चेतना भी पैदा करता है। लेकिन **इस जीवन में एक बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि, जीवन का हर अनुभव चाहे वह सुखद हो, दु:खद हो या कठिन वह इस जीवन के लिए हमेशा ही एक नई सीख लेकर आता है।** लेकिन कई बार, जब हम किसी घटना को लेकर, दूसरों पर जबरदस्ती दोषारोपण थोपने का कुत्सित प्रयास करते हैं, तो हमारे अन्त:करण में एक प्रकार से असंतोष और अवसाद पनपने लगता है और निर्णय लेने की भी क्षमता कमजोर पड़ने लगती है और वह व्यक्ति सच्चाई से पूरी तरह से मुंह मोड़ लेता है और सच्चाई को देखने की उसकी क्षमता कमजोर पड़ जाती है। **लेकिन इसके विपरीत जब हम मानसिक चंचलता पर नियंत्रण करके, परिस्थितियों को समझने का सार्थक प्रयास करते हैं तो मन धीरे-धीरे वास्तविकता को समझने लगता है और जीवन में यही अनुभव एक व्यक्ति को परिपक्व बनाता है, जिससे सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है।**

जिस दिन एक व्यक्ति को , जीवन की गहराई समझ में आ जाती है और उसको वास्तविकता का पता चल जाता है , तो उसको भलीभांति समझ में, आ जाता है कि यह सफलता या कठिनाई जीवन का एक सहज और स्वाभाविक हिस्सा है। लेकिन वास्तविक शक्ति तो हमारे भीतर के संतुलन और समझ में ही छिपी हुई है और यही संतुलन और मानसिक संबंध जीवन के साथ चलते हैं पर उनका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम उन्हें कैसे देखते हैं। जब हम अपनी भावनाओं को समझना शुरू कर देते हैं तो हमारे निर्णय और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं और सफलता की ओर अग्रसर होने लगते हैं और सफलता मिलने पर जीवन की गति भी संतुलित महसूस होने लगती है। **लेकिन अगर एक आदमी की सोच डर और भय के कारण असफलताओं पर ही अटकी रहेगी तो निर्धारित लक्ष्य कभी भी हासिल नहीं किया जा सकता है।**

कई बार असफल होने के डर से, हम निराश हो जाते हैं और जीवन में कोई भी निर्णय लेने से डरने लगते हैं, लेकिन यह रुकना हार नहीं है, अपितु यह ठहरना एक प्रकार का आत्म परीक्षण है, ताकि सफलता का रास्ता आसान हो सके। **इस जीवन में, जिसको अपने आप पर भरोसा और आत्मविश्वास हो, तो ऐसा व्यक्ति ही रुकने का साहस कर सकता है और इस जीवन की वास्तविक सच्चाई भी यही है कि जो, व्यक्ति रुककर और आत्म चिंतन करने के बाद अर्थ के साथ आगे बढ़ने का कार्य करता है, वह निश्चित रूप से सफलता हासिल करता है।** जीवन में हम विषयों से भटकना सीख गए हैं और कई बार ऐसा अहसास होता है, कि अगर रुकने का प्रयास किया तो, हम पीछे रह जाएंगे।, **जबकि वास्तविकता यह है कि हम कभी भी यह नहीं देख पाते है कि बिना रूके हम कुछ भी हासिल नहीं कर पाते हैं और न ही वास्तविकता को समझ ही पाते हैं कि हम कहां पर जा रहे हैं?।**

इस जीवन में सफलता हासिल करने के लिए सोच को संकुचित करके, रुकना और ठहरना, वास्तव में सफलता का पैमाना नहीं है, **बल्कि यह एक प्रकार का आत्म निरीक्षण है और परीक्षण है और रुकने का अर्थ ही जीवन से, यह प्रश्न पूछना है कि क्या मैं अब सही दिशा में जा रहा हूँ।** जिस समय **एक व्यक्ति ठहर कर शांत भाव से सोच कर आगे बढ़ने का प्रयास करता है तो, उसे अपनी कमजोरियों का पता चलता है और वह अपने लक्ष्य में सफलता हासिल कर लेता है।**

इसलिए जीवन में **असफलता मिलने पर, अपनी सोच को नए सिरे से जागरूक करें, असफलता पर विजय प्राप्त करें तो सफलता आपके कदम जरूर चूमेगी।** इसलिए असफल होने पर भी अपनी सोच को बदलो और नए विचारों को आत्मसात करते हुए जीवन में, आगे बढ़ने का सतत प्रयास करोगे तो सफलता अवश्य ही हासिल होगी।

विपुल धन्यवाद ********

मेरा परिवार स्वर्ग से भी सुंदर है , जीवन में सिर्फ यही सकारात्मक सोच होनी।

सम्पादक, नरेंद्र शर्मा (परवाना)

यह मनुष्य जीवन , भगवान का दिया हुआ एक सर्वोच्च और अमूल्य उपहार है। इस जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर सकारात्मक सोच और चिंतन के साथ, भगवान श्री कृष्ण द्वारा श्री मद्भागवत गीता में निहित कर्म योग के सिद्धांत को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ने से ही, सफलता के साथ ही जीवन में पूर्ण परिवर्तन भी संभव है। जीवन के सभी महान प्रश्नों का, गीता के दिव्य संदेश में निहित है और यही वास्तविक समाधान है। जो मनुष्यों को अवसाद के विचारों से निकालकर लक्ष्यपूर्ण, सकारात्मक और कृतज्ञ जीवन की तरफ ले जाने में सक्षम है।

मनुष्य का जीवन अनमोल है। पर सबसे बड़ा प्रश्न हमेशा यही रहता है—

मैं जीवित क्यों हूँ? मेरा उद्देश्य क्या है? इस जीवन में, जब तक एक सर्वोच्च लक्ष्य निर्धारित नहीं होता है, तब तक व्यक्ति उस दिशाहीन नाव की तरह ईधर - उधर भटकता ही रहता है। ठीक यही मनोस्थिति महाभारत के युद्ध के समय रणभूमि में खड़े अर्जुन की थी-, वह दिग्भ्रमित, हताश निराश तथा निर्णयहीन थे। उस समय भगवान श्रीकृष्ण ने उनसे कहा— **पहले निश्चय करो... तुम्हारा परम लक्ष्य क्या है।** गीता से हमें शिक्षा मिलती है कि, जीवन एक लक्ष्य से नहीं, एक सर्वोच्च लक्ष्य से बदलता है। **जब मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ और कर्म सब एक ही दिशा में लग जाते हैं, तब जीवन में चमत्कार घटता है-इसे ही सम्पूर्ण परिवर्तन कहते हैं।** गीता के दूसरे अध्याय के 41 वें श्लोक में लिखा हुआ है कि -

व्यवसायात्मिका बुद्धिर् एकेह कुरुनन्दन। बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्॥

इसका अर्थ है कि— **निश्चयात्मक बुद्धि एक ही होती है, लेकिन अनिश्चित लोगों की बुद्धि हजार दिशाओं में भटकती रहती है।** वास्तव में यह लेख, यह संदेश, यह पूरा अभियान-इसी श्लोक पर आधारित है। **एक लक्ष्य, एक बुद्धि, एक जीवन है।**

खंड-1: सर्वोच्च लक्ष्य निर्धारित करना — जीवन की दिशा तय होना और लक्ष्य वह है , जिसे हम रोज जीते हैं। **जीवन में एक ऐसा लक्ष्य होना चाहिए जो—परिवार को जोड़ दे, मन को शांत कर दे और हमें उत्कृष्ट मनुष्य बना दे।** यहाँ 12 मुख्य आधार स्तंभ दिए जा रहे हैं, जिनको आत्मसात करने से ही जीवन का निर्धारित लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

1. लक्ष्य लिखित हो, स्पष्ट हो, समयबद्ध हो, लक्ष्य चार स्तरों पर—भौतिक, मानसिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक, लक्ष्य "मैं" नहीं, "हम"-परिवार एवं समाज केंद्रित, सुबह उठते ही 5 बार लक्ष्य बोलें, दीवार पर बड़े अक्षरों में लक्ष्य लिखकर टाँगें, दिनभर लक्ष्य की स्मृति बनाए रखें, **लक्ष्य-विरोधी विचार आते ही त्याग दें, लक्ष्य को भगवान को समर्पित करें, रोज लक्ष्य की दिशा में एक छोटा कर्म ज़रूर करें, रात में लक्ष्य-सिद्धि का मानसिक चित्र बनाएं, नकारात्मक मित्र, नकारात्मक विचार-दूरी बनाएं, लक्ष्य बदलें नहीं-केवल और स्पष्ट करें।** जिस समय एक मनुष्य यह 12 बिंदु अपने जीवन में उतर लेता है तो **तब व्यक्ति असंभव को भी संभव बना देता है।**

खंड-2: मेरा परिवार स्वर्ग से भी सुंदर है - दृष्टिकोण का चमत्कार, परिवार बदलने से पहले दृष्टिकोण बदलता है। परिवार स्वर्ग जैसा इसलिए नहीं बनता कि सभी परफेक्ट हैं- परिवार स्वर्ग इसलिए बनता है कि सभी एक-दूसरे को प्रेम, सम्मान और समझ देते हैं। गीता कहती है कि- **ज्ञानी व्यक्ति बाहरी दोष नहीं देखता, वह भीतर की दिव्यता को पहचानता है।** अब मैं यहां पर परिवार को स्वर्ग बनाने के 9 सरल क़दमों का उल्लेख करना चाहता हूँ। गीता के 5 वें अध्याय के 21 वें श्लोक में लिखा है **परिवार को दोष से नहीं, अपितु गुण के आधार पर देखें। 2. हर सदस्य में ईश्वर का अंश देखें। 3. प्रतिदिन 10 मिनट पारिवारिक सकारात्मक चर्चा। 4. क्रोध आने पर 10 तक गिनकर मौन रहें। 5. रात में एक-दूसरे की**

तीन अच्छाइयाँ बोलें। 6. रोज एक गीता श्लोक + 2 मिनट चिंतन। 7. बच्चों को डाँटने के बजाय प्रेरित करें। 8. पति-पत्नी रोज कहें- तुम मेरे लिए स्वर्ग हो। 9. घर में नकारात्मक शब्द वर्जित-केवल सकारात्मक विकल्प। यह उपाय करने से ही आपको साक्षात चमत्कार नजर आने लगेगा और घर और वातावरण तथा संबंध बदलने लगते हैं।

खंड-3: मैं विश्व का सबसे खुशहाल व्यक्ति हूँ - आंतरिक सेटिंग (इनर सैटिंग) जीवन में एक बात को गांठ बांध कर रख लेना चाहिए कि **सुख बाहर से नहीं अपितु भीतर से मिलता है—सुख अन्त:करण के भीतर एक प्रोग्राम होता है।** सुबह का पहला वाक्य आपका पूरा दिन निर्धारित करता है। इसलिए प्रतिदिन प्रातः उठते ही कहें- **आज का दिन मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन है।** खुश रहने की गीता-आधारित आंतरिक तकनीकें: (गीता 2.14) हर घटना में अच्छाई देखना, कृतज्ञता डायरी-रोज 5 बातें लिखें। **ऐसी सोच विकसित करें कि , यह मेरे लिए बेहतर ही होगा।** 10 मिनट ध्यान-"मैं आनंद स्वरूप हूँ, **दूसरों की सफलता पर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए बल्कि प्रशंसा करो।** सात्त्विक भोजन, सात्त्विक विचार, **सात्त्विक कर्म करने से धीरे-धीरे मन शुद्ध, हल्का, सकारात्मक और आनंदमय होने लगता है।**

खंड-4: सकारात्मक चिंतन की वैज्ञानिक + आध्यात्मिक तकनीकें। यह केवल आध्यात्मिक बात नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक सत्य है कि सोच बदलते ही मस्तिष्क भी बदल जाता है। 1. आर ए एस सिस्टम एक्टीवेशन के अनुसार दिमाग केवल वही परिकल्पना करते हुए दिखलाता है, जिसके बारे में हम निरंतर सोचते ही रहते हैं।

2. लगातार 21 दिन तक रोज एक ही सकारात्मक वाक्य दोहराएं। 3. विजुलाइजेशन , परिवार को स्वर्ग जैसा, जीवन को श्रेष्ठ जैसा कल्पना में देखें। 4 अफरमेशन + भावना + विश्वास + कर्म = जो कि साक्षात्कार एक चमत्कार के समान है। 5. समत्व योग , सबके प्रति प्रेम और समभाव रखना-यह सकारात्मकता की पराकाष्ठा है। **जीवन में इन तकनीकों का अभ्यास करने से एक व्यक्ति को अवसाद, नकारात्मकता और आत्महत्या जैसे विचारों से कोसों दूर ले जाता है और मानव जीवन में अर्थ, उद्देश्य और ऊर्जा लौट आती है।**

खंड-5: दैनिक दिनचर्या, एक सुव्यवस्थित दिनचर्या जीवन को चमत्कारिक रूप से बदल देती है। सुबह 4:30 से रात 10:00 तक, ब्रह्ममुहूर्त ध्यान, योग और व्यायाम, गीता पाठ, धन्यवाद प्रार्थना, परिवार के लिए समय, कार्य-केंद्रित फोकस, लक्ष्य समीक्षा, रात्रि कृतज्ञता अभ्यास, इस प्रकार से दिनचर्या बदलने से ही जीवन वास्तविक रूप में ही बदल जाता है।

अंतिम सिद्धांत इस जीवन को अन्तिम रूप से बदलने का एक ही सिद्धान्त है और वह सिद्धांत है कि **एक निश्चित लक्ष्य ही जीवन है, बाकी सब भ्रम की स्थिति है।** इसलिए यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि **बिना लक्ष्य के व्यक्ति का कोई सार्थक जीवन नहीं जीता है,** वह अपने जीवन को केवल काटता है, क्योंकि उसके जीवन में भीतर से जो खालीपन बढ़ता है, तो निराशा उसको घेर लेती है और कभी-कभी एक व्यक्ति निराशा के गर्त में डूब जाता है और उसको अपना जीवन व्यर्थ ही लगने लगता है। किन्तु-जैसे ही **एक सर्वोच्च लक्ष्य निर्धारित होता है—ब्रह्माण्ड, ईश्वर, परिस्थितियाँ-सब आपके पक्ष में खड़ी हो जाती हैं।** गीता कहती है-

"योगक्षेमं वहाम्यहम्"(जो मुझे निस्संदेह लक्ष्यपूर्वक भजता है, उसका योगक्षेम मैं उठाता हूँ।)आज ही कागज़ पर बड़े अक्षरों में लिखिए **मेरा परिवार स्वर्ग से भी सुंदर है। मैं विश्व का सबसे खुशहाल और सकारात्मक व्यक्ति हूँ, इसे दीवार पर टांग देना। हर रोज 108 बार दोहराएं, आपका जीवन खुद श्रीकृष्ण की लीला बन जाएगा। आपका परिवार स्वर्ग बने, आपका मन आनंद का सागर बने और आप इसमें गोते लगाकर आनन्द रुपी मोती हासिल करें। ऐसी मेरी मनस्कामना है।**

विपुल धन्यवाद।

****

नव विक्रम संवत के दिन , महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश सहित अनेक प्रदेशों में गुड़ी पड़वा का त्योहार मनाया जाता है।

हमारे वेदों और पुराणों तथा शास्त्रों में , हिन्दू नववर्ष नव संवत्सर का उल्लेख किया गया और 19 मार्च को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव विक्रम संवत्सर मनाया गया, जबकि महाराष्ट्र सहित कई राज्यों में इसी दिन गुड़ी पड़वा का त्योहार मनाते हैं। इस गुडी पड़वा त्योहार का पौराणिक महत्त्व है। गुड़ी का अर्थ **विजय पताका है** और ऐसी मान्यता है कि **इस दिन भगवान ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी और यह रचना, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में आने वाली प्रतिपदा तिथि को शुरू की गई थी।** प्रतिपदा को तिथि को प्रवरा या सर्वोत्तम तिथि माना गया है। यह दिन जीवन में समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक माना गया है। **इस दिन महाराष्ट्र सहित कई अन्य प्रदेशों में भी नए साल का श्रीगणेश होता है।** इस दिन से ही संवत्सर का पूजन और चैत्र के नवरात्र का शुभारंभ होता है।

विगत को करके नमस्कार, आगत का करते अभिनन्दन यश और कीर्ति चहुं दिशा महके सबका, जैसे मलय गिरी का चंदन । गुड़ी पड़वा का पर्व चैत्रमास की शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाता है। इसे वर्ष प्रतिपदा या उगादि भी कहते है। चैत्र ही एक ऐसा महिना है , जिसमें वृक्ष तथा लताएं पल्लवित और पुष्पित होती है। शुक्ल प्रतिपदा का दिन चन्द्रमा की कला का प्रथम दिन माना जाता है। जीवन का मुख्य आधार वनस्पतियों को सौमरस चन्द्रमा ही प्रदान करता है। इसे औषधियों और वनस्पतियों का राजा कहा गया है। इसलिए इस दिन को वर्षारंभ माना जाता है। हिन्दू धर्म में गुड़ी पड़वा को एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। **सामान्यत: इस दिन गुड़ी या झण्डे की पूजा करके इसे घर के द्वार पर लगाया जाता है और घर के दरवाजों पर आम के पत्तों की बादनवार सजाई जाती है तथा नीम की पत्ती और मिश्री का प्रसाद पाकर इस पर्व को मनाने की शुरूआत की जाती है।** यह संवत या वर्ष एक प्रकार से नया है, इसलिए नई उम्मीदें, नए सपनों, नए लक्ष्यों तथा नए संकल्पों के साथ इसका स्वागत किया जाता है।

भारतीय संस्कृति में, तीज त्योहार भारत देश की एक अमूल्य धरोहर हैं। भारत में ऐसे कई त्योहार और उत्सव हैं, जो पौराणिक है तथा जिनसें हमारी गहन आस्था और श्रृद्धा जुड़ी हुई है। गुड़ी पड़वा का त्योहार भी उनमें से एक है। गुड़ी पड़वा के दिन, भगवान शिव व माता पार्वती की पूजा अर्चना की जाती है तथा भगवान श्रीराम, श्री हनुमान एवं भगवान सूर्य देव की भी आराधना की जाती है और सुन्दरकाण्ड, रामरक्षास्त्रोत तथा देवी भगवती के मंत्रो का जाप भी किया जाता है। **गुड़ी पड़वा का यह उत्सव , हमारे सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के अनुष्ठान की धूरी के रूप में एक विशेष तिथि बनकर मान्यता प्राप्त कर चुका है।**

यह हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक धरोहर का द्योतक है और यह आस्था से जुड़ा हुआ एक पवित्र दिन है। **पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन आदि शक्ति भी प्रकट हुई थी, इसलिए इस दिन माँ दुर्गा के मंगल सूचक घट की स्थापना की जाती है। कुछ लोग इस दिन , गणगौर माता का विवाह रचते हैं। सृष्टि के निर्माण का यह दिन हमारे लिए बहुत अहम है। जिसका हमारे हिन्दू धर्म में बहुत अधिक महत्व है।** गुड़ी पड़वा से पौराणिक एवं ऐतिहासिक दोनों प्रकार की अनेक मान्यताएं जुड़ी हुई है। पौराणिक कथाओं एवं लोक मान्यताओं के अनुसार भगवान ब्रह्मा जी द्वारा सृष्टि की रचना का प्रारंभ करने, के साथ-साथ भगवान विष्णु द्वारा मत्स्यावतार लेने, भगवान श्रीराम भी माता सीता के साथ वनवास से अयोध्या लौटने, त्रेता युग में भगवान श्रीराम एवं महाभारत काल में महाराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक होने, सतयुग की शुरूआत होने, भगवान श्रीराम द्वारा वानर राज बाली के अत्याचारों से दक्षिण की प्रजा को बचाने, वरूण देव के अवतार देव झुलेलाल के प्रकट होने, शालीवाहन द्वारा शालीवाहन शक प्रारंभ करने जैसे, अनेक कारणों से यह दिन अपने आप में एक बड़े पर्व का दिन है। **वास्तव में हिन्दू पंचांग का आरंभ भी गुड़ी पड़वा से ही होता है।**

ऐसा माना जाता है कि, **महान गणितज्ञ भास्कराचार्य द्वारा भी इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन मास और वर्ष की गणना कर पंचांग की रचना की गई थी।** उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य द्वारा विक्रम संवत प्रारंभ करने, छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा हिन्दू साम्राज्य की नींव रखने, महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना करने, सिख परम्परा के गुरू अंगद देव का जन्म दिवस होने, जैसी अनेक मान्यताओं के कारण भी इस दिन का अपना विशेष महत्व है। **गुड़ी पड़वा पर्व को हम अलग-अलग कारणों से मनाते हैं, पर सबसे बड़ा कारण जो सबसे श्रेष्ठ है कि इस दिन भगवान ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी और समय ने इस**

दिन से चलना प्रारंभ किया था। तब से समय अपनी गति से चला और चल ही रहा है। दिन और रात के दौरान वह करवट बदल रहा है। समय करवट बदलकर मनाता नजर आ जाए तो, समझें की गुड़ी पड़वा आ गया है। यह समय दो ऋतुओं के संधि काल का माना जाता है , जिसमें प्रकृति का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। मनुष्य, जीव और प्रकृति आलस्य को छोड़कर सचेतन हो जाते हैं तथा वसंत ऋतु का आगमन पूरी तरह से हो जाता है। पेड़ों पर नये पत्ते लग जाते हैं और पूरे वातावरण में एक प्रकार से नवीनता सी छा जाती है।

यह गुड़ी पड़वा वास्तव में, एक ऐसा पर्व एवं त्यौहार है, जो समय को जानने, पहचानने और उसमें मिल जाने का है। गुड़ी पड़वा एक ओर आनन्द का उत्सव है , तो दूसरी ओर विजय और परिवर्तन का प्रतीक भी है। इसे मनाने से हम में नई स्फूर्ति, सम्प्रेरणा तथा उत्साह और नवीन आशाओं के प्रति जागृति पैदा होती है। इस दिन इष्ट मित्रों को नए वर्ष की शुभकामनाएं भेजते हैं और नए संकल्प करें कि, यह वर्ष मंगलमय एवं कल्याणकारी हो और इस संवत्सर के मध्य आने वाले सभी अनिष्ट और विघ्न समाप्त हो जाएं। **सूर्य संवेदना पुष्पे:, दीप्ति कारूण्यगंधेने। लब्धना शुभम नववर्षे अस्मिन कुर्यात्सर्वस्य मंगलम"** अर्थात जिस तरह सूर्य प्रकाश देता है, पुष्प देता है, संवेदना देता है और हमें दया भाव सिखाता है, उसी तरह यह , नव वर्ष हमें हर पल ज्ञान दे और हमारा हर दिन, हर पल मंगलकारी हो। गुड़ी पड़वा पर्व हमारे लिये एक प्रेरणा दायक एवं नव स्फूर्ति का दाता बने, हमारी यही मनस्कामना होनी चाहिए। यह पर्व हमारी सभ्यता एवं संस्कृति की एक विशेष पहचान है। अतः हमें इस पर्व को निष्ठा और श्रृद्धा के साथ प्रसन्नता पूर्वक मनाना चाहिए जिससे हम अपने धर्म एवं संस्कृति की रक्षा कर सके।

इन्ही भावनाओं के साथ सभी को नव संवत्सर , गुड़ी पड़वा और नवरात्रि तथा रामनवमी की हार्दिक की बधाई और शुभकामनाएं...।

☆☆☆

प्रवीण शर्मा, नीमच

विक्रम संवत 2083 और इसके साथ ही नवरात्रि की भी हार्दिक बधाई।

महासभा प्रधान-रामपाल शर्मा

भारत की सांस्कृतिक विरासत बड़ी महान् है और इस धरा पर ऋषि - मुनियों और सन्त - महात्माओं ने आध्यात्मिकता की धारा प्रवाहित की, जिसमें डूबकी लगाने से मनुष्य भवसागर से पार उतर जाता है और इसी परम्परा का द्योतक है, नव विक्रम संवत , चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी संवत 2083 और यह नव विक्रम संवत 19 मार्च से शुरू हो रहा है। हमारे हिंदू धर्म के जितने भी धर्म ग्रंथ, वेदों, पुराणों और शास्त्रों में नववर्ष का प्रारंभ , पहली जनवरी की अपेक्षा विक्रम संवत से ही माना गया है, जो हमारी प्राचीन संस्कृति का द्योतक है।

इसलिए यह विक्रम संवत, हमारी धार्मिक आस्था और विश्वास से जुड़ा हुआ हैं और **इस विक्रम संवत 2083 के शुभारंभ के पुनीत अवसर पर, मैं महासभा रुपी परिवार को नव विक्रम संवत (नव वर्ष) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रमी संवत 2083 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।** मेरी यह मनस्कामना है कि यह विक्रम संवत आपके जीवन के , सभी सपनों को साकार करने के साथ - साथ ही सुख - समृद्धि वैभव और नई आशा तथा नई उम्मीदों और नव ऊर्जा शक्ति का भरपूर संचार करे और भविष्य के लिए आपने जो भी, सपने संजोए हैं, वह सभी भगवान की असीम अनुकम्पा से पूर्ण हों। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपके और हमारे बीच में, नव विक्रम संवत के दौरान भी यह आपसी सहयोग, तादात्म्य और प्रगाढ़ सम्बन्ध सदैव ही इसी प्रकार से बने रहें।

इसके साथ ही मैं, आज से शुरू हो रहे, भक्ति और शक्ति का अनूठा पर्व, आध्यात्मिकता का स्रोत , नवरात्रि के पावन अवसर पर भी सभी को बधाई और मंगल कामनाएं देता हूँ। वैभव और सम्पूर्ण शक्तियों से परिपूर्ण , माँ दुर्गा सहित सभी देवियां, आपकी मनोकामना पूरी करें। आज नव संवत के साथ ही, नवरात्र का पहला दिन भी है और इस दिन **माँ शैलपुत्री की पूजा अर्चना भी की जाती है।** माँ शैलपुत्री की अनुकम्पा और आशीर्वाद की वर्षा आप और आपके परिवार पर सदैव ही, इसी प्रकार से बनी रहे और माँ का आपके अन्तःकरण में, सदैव ही वास बना रहे।

विपुल धन्यवाद।

☆☆☆

दुबई में होली के रंग महादेव के संग ऐतिहासिक महोत्सव बना

दुबई में राजस्थान बिजनेस एंड प्रोफेशनल ग्रुप यूएई (आरबीपीजी) द्वारा होली-महाशिवरात्रि का महोत्सव बड़े ही मनोहारी और हर्षोल्लास पूर्वक तरीके से मनाया गया, जो उत्सव अपनी ऐतिहासिक छाप छोड़ने में सफल रहा।

पेम्पाराम सुथार ने बताया कि **राजस्थान बिज़नेस एंड प्रोफेशनल ग्रुप यूएई (आरबीपीजी) द्वारा शारजाह के कोरल बीच पर "होली के रंग भोलेनाथ के संग" थीम के साथ भव्य होली एवं मकर संक्रांति महोत्सव का आयोजन किया गया।**

इस अवसर पर यूएई में रह रहे हजारों प्रवासी राजस्थानी परिवारों ने , इस समारोह की गरिमा को द्विगुणित करने के लिए सभी ने मिलकर उत्साहपूर्वक भाग लिया और **रंग, गुलाल, पिचकारी तथा पतंगों के साथ भारत के इस सांस्कृतिक पर्व का आनंद लिया और इस उत्सव के अवसर पर पूरा परिसर राजस्थानी थीम से सुसज्जित था, जिससे "मिनी राजस्थान" का दृश्य प्रस्तुत हुआ।**

प्रवासी भारतीय, पेम्पाराम सुथार ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, चौकी ढाणी की टीम द्वारा रावण हत्ता, कच्छी घोड़ी और ढोल वादन की प्रस्तुतियां बड़े ही मनोहारी ढंग से दी गई। राजस्थानी गीतों पर समूह नृत्य तथा बाल कलाकार रक्षा सुथार के एकल नृत्य ने, सभी का मन मोह लिया और उपस्थित महानुभावों ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना भी की ।, **महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर भगवान शिव की पूजा अर्चना की गई और अभिषेक भी किया गया, जिसमें लोगों ने अपनी अगाध आस्था और विश्वास का परिचय देते हुए भगवान शिव के प्रति अपनी श्रद्धा और विश्वास व्यक्त किया। इसके अलावा पारंपरिक खेल, "संस्कार तंबोला" और लकी ड्रॉ भी आकर्षण का विशेष रूप से केंद्र रहे।**

दुबई में, आर बी पी जी, ग्रुप द्वारा होली उत्सव और महाशिवरात्रि मनाई गई

कार्यक्रम को सफल बनाने में आरबीपीजी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का विशेष सहयोग और योगदान रहा। अध्यक्ष डॉ. रोमित पुरोहित, उपाध्यक्ष सीए तिरुपत मेहता, महासचिव दिव्या गांधी सहित पूरी टीम की सक्रिय भूमिका रही। इस भव्य आयोजन की सफलता में सभी प्रायोजकों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। जिनमें मुख्य रूप से बीएनडब्ल्यू रीयल एस्टेट मुख्य प्रायोजक रहे। पर्ल स्पॉन्सर बोतल रीयल एस्टेट, डायमंड स्पॉन्सर देहली प्राईवेट स्कूल सन मैनैजमैन्ट, कैन्सलटैन्ट, सतगुरु ट्रैवल सुपरटैक तथा गोदारा ब्रदर्स रहे और गोल्ड स्पॉन्सर में श्री जी आर महता, प्रलम्ब एग्रीकल्चर,एस के बीच प्रीमियर ब्रैनज एकाउंटिंग एण्ड ओ, स्टोकीफाई, एस बी सी एवं आर के जी रहे। इसी प्रकार सिल्वर स्पॉन्सर आनन्द राठी इंटरनैशनल बिजनेस रहा।

उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त प्राईम मैडीकल सैन्टर (हेल्थकेयर पार्टनर), पूजा स्टूडियो(मीडिया पार्टनर), ब्रांड 4 यू आऊटलैट (गिफ्टिंग पार्टनर) तथा चौकी ढाणी एवं मैक्स टैक्नीकल (इवेंट पार्टनर) का भी इस उत्सव को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। **आरबीपीजी परिवार ने सभी प्रायोजकों, सहयोगियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके सहयोग से ही यह सांस्कृतिक महोत्सव सफल एवं यादगार बन सका है।** यह आयोजन यूएई में बसे प्रवासी राजस्थानियों के लिए एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायी अवसर सिद्ध हुआ है। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अमरा राम जांगिड ने अपना बधाई संदेश भेजा था, क्योंकि वह उस समय डाक्टरों की सलाह पर दुबई में ही आराम फरमा रहे थे।

आर सी पी जी के, मीडिया प्रभारी पैम्पा राम सुथार

मानव जीवन में साधुता और विनम्रता बेहतर आचरण से ही आती है।

पी एल शास्त्री, गुरुग्राम, माइक्रोमैक्स

आपने जीवन में कई बार यह अनुभव किया होगा कि , कई व्यक्ति जो भी बोलते हैं , उनका आचरण उनके व्यवहार के बिल्कुल ही विपरीत होता है और ऐसे लोग जो कुछ भी बोलते हैं, वह स्वंय उस पर आचरण नहीं करते हैं। **लेकिन एक व्यक्ति की विश्वसनीयता कब स्थापित होगी, जिस समय वह अपने आचरण और व्यवहार में सत्य आचरण करते हुए अपनी बात पर खरा उतरने का प्रयास करता है। सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र का उदाहरण आपके सामने हैं उसको सत्य का पालन करने के लिए ही अनेक यातनाएं सहन करनी पड़ी और उन्होंने कभी भी झूठ का सहारा लेकर अपने आचरण पर कभी भी आंच नहीं आने दी और आज उसका नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ है।**

भगवान ने मनुष्य को यह जीवन इसलिए दिया है कि, वह स्वयं सत्य का आचरण करते हुए, दूसरों के लिए भी एक उदाहरण प्रस्तुत करें। जब कोई भी व्यक्ति पहले स्वयं ही उच्च आचरण करेगा, तभी वह दूसरों को ऐसा आचरण करने का आदेश दे सकता है। एक पिता जो, स्वयं ही, सभी प्रकार के बूरे व्यसनों का आदि है, वह अपने बच्चों को उन बुरी आदतों को छोड़ने के लिए कैसे अभिप्रेरित कर सकता है ? उदाहरण के लिए **आप दिन में 18 घण्टे मोबाइल पर लगे रहते हैं और बच्चों से बात करने का समय नहीं है, तो अपने बच्चों से कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वह आपकी भावनाओं की कद्र करते हुए , आपके सभी आदेश मानेंगे। अपनी बात मनवाने के लिए पहली शर्त यही है कि आपको पहले स्वयं ही त्याग करना पडेगा।**

यही बात सभी प्राणियों पर एक साथ ही लागू होती है। कई बार ऐसा देखा गया है कि एक व्यक्ति बड़ी - बड़ी बातें कहता है, लेकिन वह स्वयं ही उस आचरण पर खरा नहीं उतरता है और समय के साथ - साथ ही, लोग उसके व्यवहार और आचरण को अच्छी तरह से समझ जाते हैं, कि **ऐसा व्यक्ति केवल अपनी शेखी बघारने के साथ - साथ बहुत बड़ी-बड़ी बातें ही करता है, जो सच्चाई और सद आचरण से कोसों दूर है और ऐसे व्यक्ति की बातों पर अधिकतर लोग विश्वास नहीं रखते हैं और उसके विचार बहुत अधिक सार्थक नहीं होते हैं।** उस व्यक्ति की सोच की विश्वनीयता विशेष रूप से तभी **विशेष सार्थकता होगी, जिस समय वह व्यक्ति भी, उन उत्तम विचारों पर स्वयं ही आचरण करते हुए, अपनी विश्वसनीयता को अक्षुण्ण बनाए रखे।**

यह समय बड़ा ही परिवर्तनशील है और जो लोग अपने आचरण में परिपक्व नहीं हैं और ऐसे व्यक्तियों को, जिस समय हम नजदीक से देखने का स्तुत्य प्रयास करते हैं तो, उनके जीवन के वास्तविक व्यवहार और आचरण के बारे में सच्चाई का सहज रूप से ही पता चलता है, तो निराशा हाथ लगना सहज और स्वाभाविक ही है और उसके बाद से ही ऐसे गलत आचरण वाले विचारों के पोषक महानुभावों का प्रभाव भी , इस समाज में धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है और ऐसे लोग उनसे से दूरियां बनाना शुरू कर देते हैं। लेकिन आप चाहते हैं कि **लोग आपके उत्तम विचारों और आचरण के बारे में सच्चाई को जानकर अधिक लंबे समय तक जुड़े रहें और आपके विचारों का समर्थन करें, तो उसके लिए सत्य के साथ - साथ उच्च आचरण भी बनाए रखना होगा तभी आपका प्रयास सार्थक होगा अन्यथा उसका कोई भी लाभ नहीं होगा।**

इस जीवन में, मैं अपने निजी अनुभव के आधार पर यह कह सकता हूँ कि **इस जीवन का कल्याण केवल और केवल मात्र हरि भजन के साथ - साथ जीवन में सद आचरण और सत्य व्यवहार को आत्मसात करते हुए, परोपकार की भावना से अभिप्रेरित होकर कार्य करने और जीवन में विनम्रता और साधुता तथा सत्य और बेहतर आचरण करने से ही अभ्युदय होगा।** लेकिन आधुनिक युग में, लोग अपनी कुण्ठा, हताशा और निराशा को छिपाने के लिए ही, झूठ का सहारा लेकर, जीवन की वास्तविकता को छिपाने का कुत्सित प्रयास करते हैं और इस ऊहापोह की स्थिति में, मानवीय संवेदनाओं , नैतिक मूल्यों तथा सज्जनता का ह्रास होता है। **लेकिन जो व्यक्ति इस जीवन में, सत्यता पर अडिग रहता है , उससे उस व्यक्ति के जीवन में, नैतिक मूल्यों की प्रचुरता होने के साथ ही समाज की अनेक बुराईया भी विलुप्त हो जाती है।** लेकिन आजकल यह दुष्प्रवृत्ति पैदा हो रही है कि अधिकांश लोग झूठ का सहारा लेकर ही , अपना कार्य सिद्ध करने में विश्वास रखते हैं। लेकिन वास्तव में यह प्रवृत्ति वास्तविक आचरण के खिलाफ है।

मैं एक बात को सहज रूप से स्वीकार करता हूँ कि अधिकतर लोग अपने गुनाहों को छिपाने के लिए ही, झूठ का सहारा लेते हैं और यह केवल भीरुता और कायरता के लक्षण के सिवाय कुछ भी नहीं है। कई बार ऐसा देखा गया है कि बिना कोई विचार किए हुए जब कोई व्यक्ति अनुचित कर्म कर बैठता है , तब उसे भय होता है कि लोग उसके बारे में क्या कहेंगे और उसकी यह धारणा बन जाती है कि दोष स्वीकार करने पर मुझे सजा मिलेगी और पड़ोसी मुझे घृणा की दृष्टि से देखेंगे, इसके विपरित जो लोग, सत्य भाषी हैं, उनके मन में शान्ति, हृदय में साहस, बोली में स्पष्टता और दृष्टि में तेज भरा रहता है और सभ्य समाज में उनका आदर होता है। किन्तु इस जीवन में शुद्ध आचरण को आत्मसात करने से जीवन में , जहां विनम्रता और सौम्यता तथा सात्विक गुणों का विकास होता है। **जो मनुष्य जीवन की वास्तविक पूंजी है। इसलिए जीवन को सुखमय बनाने के लिए सबसे पहले अपने आचरण के साथ - साथ सत्य को आत्मसात करो और इस जीवन में दृढ़तापूर्वक और सत्य निष्ठा पूर्वक तरीके से प्रतिज्ञा करो कि- मैं कभी भी झूठ नहीं बोलूँगा और यही जीवन का एक मूल मंत्र है जो विनम्रता और उच्च आचरण की आधारशिला रखता है और बस एक सत्य का आश्रय ग्रहण करने ही से अन्य जितने भी गुण हैं, उन सभी गुणों का समावेश आपके भीतर अपने आप ही हो जाएगा तथा आपका जीवन सार्थक हो जाएगा।** विपुल धन्यवाद

****

श्रीमती सुनीता देवी जांगिड को बहरोड़ तहसील का निर्विरोध अध्यक्ष बनाया गया है।

जांगिड छात्रावास बहरोड़ में, 15 मार्च को आयोजित तहसील अध्यक्ष के चुनाव में खोहर निवासी, श्रीमती सुनीता देवी धर्मपत्नी लीला राम जांगिड को, बहरोड़ तहसील का सर्वसम्मति से , निर्विरोध रूप से अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस चुनाव में, तीन उम्मीदवारों ने तहसील अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन पत्र भरा था, लेकिन दो उम्मीदवारों मदनलाल पहाड़ी और राजेंद्र प्रसाद ने, सामाजिक सौहार्द और आपसी सहयोग और सौहार्द की भावना को प्राथमिकता देते हुए , और बड़ा दिल और उदात्त भावना का परिचय देते हुए ही उन्होंने सुनीता देवी जांगिड के निर्विरोध रुप से निर्वाचित होने का रास्ता प्रशस्त करते हुए अपने नामांकन वापस ले लिए। चुनाव अधिकारी मुकेश कुमार गंडाला और मुकेश जांगिड रैवना द्वारा सुनीता देवी जांगिड को निर्विरोध रुप से निर्वाचित घोषित किया गया और दोनों चुनाव अधिकारियों के समाज में आपसी सौहार्द बनाए रखने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना करते हुए,उनका आभार व्यक्त किया गया।

15 मार्च को बहरोड़ तहसील के चुनाव में श्रीमती सुनीता देवी जांगिड, निर्विरोध रुप से तहसील अध्यक्ष बनी

मदनलाल पहाड़ी ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि यह चुनाव समाज की एकता और भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए निर्विरोध रुप से सम्पन्न किया जाना चाहिए और उन्होंने परिपक्वता दिखलाते हुए अपना नामांकन वापस ले लिया और समाज तथा संगठन को महत्त्व दिया ताकि समाज की गरिमा बनी रहे। उपस्थित सभी लोगों ने उनके इस मृदु व्यवहार की भूरि - भूरि प्रशंसा करते हुए सभी लोगों ने तालियां बजाकर उनके इस फैसले के प्रति आभार जताया।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा के दिशा निर्देशों और उनके आदेशों को ध्यान में रखते हुए ही इस चुनाव प्रक्रिया को एक पहल के रूप में, निर्विरोध निर्वाचन करके उनके भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ही यह कदम बढ़ाया गया है और जिला कोटपूतली बहरोड़ ने , प्रधान रामपाल शर्मा की इस परम्परा को आगे बढ़ाया है। महासभा के उप प्रधान ऊजेन्द्र जांगिड ने श्रीमती सुनीता जांगिड को तहसील अध्यक्ष बनने पर बधाई देते हुए कहा कि , यह महिला सशक्तिकरण का एक अनूठा उदाहरण है और मेरा मानना है कि मातृशक्ति आगे बढ़ेगी तो, समाज भी आगे बढ़ेगा और अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का यही संदेश है। राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार का कथन है कि चुनाव शांति पूर्ण तरीके से और आपसी समन्वय से हों, कोटपुतली बहरोड़ जिलाध्यक्ष, नेकीराम जांगिड ने सबका साथ सबका सम्मान की परम्परा का उदाहरण दिया और पूर्व अलवर जिलाध्यक्ष रतनलाल शर्मा का मार्गदर्शन भी विशेष रूप से सराहनीय रहा।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने सुनीता जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि मेरे कार्यकाल में अधिकतर चुनावों में निर्विरोध निर्वाचन पर विशेष बल दिया जा रहा है , क्योंकि इससे जहां एक ओर समाज में आपसी एकता और सहयोग बना रहेगा, वहीं पैसे की भी बचत होगी। मैं उनको , बेहतर कार्यकाल के लिए बधाई देता हूँ।

कोटपुतली बहरोड़ जिला , महामंत्री सत्य प्रकाश जांगिड

ईश्वर की न्याय व्यवस्था है बड़ी ही अलौकिक और सटीक।

मानव जीवन ईश्वर की दी हुई, एक अनमोल और दिव्य धरोहर है। मनुष्य के जीवन में उसको, अपने भाग्य और कर्मो के अनुसार ही सब कुछ हासिल होता है तथा समय से पहले कभी भी कुछ नहीं मिलता है। लेकिन कई बार एक व्यक्ति, अपने अंहम और अंहकार के वशीभूत होकर इस सच को सिरे से नकार देता है और कई बार वह अपने अंहकार और घमंड के वशीभूत होकर, ऐसा दुर्व्यवहार और गलत आचरण कर बैठता है , जिसकी उसने भी कभी कल्पना नहीं की होगी। लेकिन, यह कहावत बड़ी ही प्रसिद्ध है **कि ईश्वर के घर में देर है , पर अंधेर नहीं है और वास्तव में, यह इस जीवन की एक सच्चाई के साथ ही एक अकाट्य सत्य भी है।** भगवान ने, अपना एक रजिस्टर रखा हुआ है और जो भी मनुष्य, गलत आचरण, दुर्व्यवहार या किसी के साथ अन्याय करता है और वह अन्याय या गलत आचरण चाहे , वह दिन के उजाले में करे या रात के भयावह अंधेरे में, या वह कर्म रात में, चुपके से छुपते - छुपाते हुए करे , या कोई भी शुभ - अशुभ कर्म हो, वह सभी, ईश्वर के सी. सी. कैमरे में कैद हो जाते हैं और समय आने पर उन सभी कर्मों का भोग, भगवान अपनी न्याय अवस्था के अनुसार अवश्य ही करता है।

कई बार एक मनुष्य अपने अज्ञान और गलत आचरण के कारण ही , गलत कार्य करते हुए दिग्भ्रमित होकर यह समझ बैठता है कि, उसको तो कोई भी देख ही नहीं रहा है, लेकिन वह यह भूल जाता है कि उसके समूचे क्रिया कलाप , भगवान ने जो सूक्ष्मदर्शी कैमरा , लगाया हुआ है, उसमें उसकी सभी हरकतें कैद होती रहती हैं, लेकिन वह व्यक्ति अपने अंहकार के वशीभूत होकर, दूर्भाग्यवश , भगवान की इस दिव्य दृष्टि से अनभिज्ञ ही बना रहता है। मनुष्य अपने जीवन काल में, चाहे वह किसी भी अवस्था में, हमारे सामने ही, हमारी उपस्थिति में, कोई भी अपराध, हत्या, नशा, भ्रष्टाचार होते हुए गुपचुप देखता है, वास्तव में वह भी अपराध की श्रेणी में ही आता है, और इसके साथ ही किसी के बारे में गलत सोच रखना या मन में किसी के बारे में, गलत विचारों के आने से भी पाप का भागीदार बनना पड़ता है।

इसका एक बड़ा ही स्टीक उदाहरण है। भगवान शिव ने, पार्वती से कहा कि एक बार एक मंत्री ने अपने राजा को मारकर , उस राज्य के राज सिंहासन पर कब्जा करने की योजना बनाई और इस बीच वह हैजे का शिकार हो कर मर गया और इस गलत सोच के कारण ही, उसका हाथी की योनि में जन्म हुआ और बाद में, उसी राजा के आशीर्वाद से उसको हाथी की योनि से मुक्ति मिली। इसलिए आदमी को यह भ्रम कभी भी नहीं पालना चाहिए कि, उसको बूरे कर्मों का फल कभी भी नहीं मिलेगा। **इसलिए एक व्यक्ति को, समय आने पर हर कर्म का भुगतान, ईश्वरीय न्याय की अदालत में देर सवेर अवश्य ही देना पड़ता है। सबसे बड़ी विडंबना और आश्चर्यजनक बात यह है कि भगवान की इस अदालत की न तो दीवारी है और ना ही कोई उस व्यक्ति के कर्मों और लेखा जोखा की ग्वाही देने वाला हाजिर होता है** और ना ही कोई सबूत करने के लिए कोई रिकॉर्ड भी अपने साथ ले जाना पड़ता है। लेकिन यह सब कुछ सिर्फ और सिर्फ ईश्वर के द्वारा स्वयं चलित व्यवस्था के अन्तर्गत ही होता है और यहां से ही, अपने - अपने कर्मों का **"कर्मफल"** सुखदाई या दुखदाई समय पाकर अवश्य अदृश्य फरमान जरुर सुनाया जाता है और उसी के अनुरुप ही, उस जीव को अपना कर्मफल भोगना ही पड़ता है।

भगवान भी अपना कर्मफल भोगने के लिए अछूते नहीं हैं और यही तो **"कर्मसत्ता"** (ईश्वरीय न्याय व्यवस्था) कहलाती है। शास्त्रों में भी न्याय की दृष्टि एवं ईश्वर की कर्मशील व्यवस्था में हम सभी किसी ना किसी कारण वश दोषी व अपराधी है। हमारे जीवित अवस्था में हमारी नजरों के सामने कोई हत्या, अपराध, नशा, भ्रष्टाचार व अन्य किसी प्रकार का कुकृत्य घटित होता है और जो लोग उसका विरोध नहीं करते हैं,तब भी वह ईश्वर की न्याय की, अदालत में भी दंड के भागी अवश्य ही बनते हैं और दंड से केवल वही बच सकते हैं, जो अन्याय का विरोध करते हैं और उसे रोकने में आत्मविश्वास और हौसला दिखलाते हैं।

कवि दूलीचंद जांगिड सतारा, महाराष्ट्र

8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय विश्व महिला दिवस के अवसर पर, नारी शक्ति को सलाम।

नारी शक्ति को नमन है, जिसने अपने धैर्य, सहनशीलता, करुणा और दया की प्रतिमूर्ति ने, आज प्रत्येक क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। मनु स्मृति में कहा गया है कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:। यत्रैतास्तु न पूज्जन्ते सर्वास्तत्रा फला: क्रिया:।।

जहां पर नारी शक्ति की पूजा होती है वहां पर देवताओं का वास होता है और उस कुल में दिव्य गुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान जन्म लेती हैं और इसके विपरित जिस कुल में स्त्रियों का मान और पूजा नहीं होती है, उस परिवार में सब क्रिया निष्फल रहती है। नारी शक्ति की जहां, प्राचीन काल से ही पूजा और आराधना होती रही है और जिस प्रकार से, माँ लक्ष्मी, पार्वती और ब्रह्माणी की पूजा के साथ-साथ नवरात्रि के दौरान भी, देवी के 9 विभिन्न स्वरुपों की पूजा अर्चना की जाती है और इनमें, शैलपुत्री, माँ ब्रह्मचारिणी, माँ चंद्रघंटा, माँ कुष्मांडा, माँ स्कंदमाता, माँ कात्यायनी, माँ कालरात्रि, माँ महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा अर्चना की जाती रही है, जो हमारी आस्था और विश्वास का प्रतीक हैं। हमारे वेदों , शास्त्रों और पुराणों में भी महिलाओं को, अर्धांगिनी का सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है और बदलते हुए इस परिवेश में भी महिलाओं ने अपनी असीम बुद्धिमत्ता , दक्षता और प्रतिभा के आधार पर न केवल पुरुषों की बराबरी की है, अपितु प्रत्येक क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान भी स्थापित किए हैं। आपको मैं याद दिलाना चाहती हूँ कि , **भारतीय मूल की अमेरिकी , सुनीता विलियम ने अंतरिक्ष में 283 दिन बताएं और अंतरिक्ष के बारे में नए-नए रहस्यों की खोज की , जो भविष्य में विज्ञान के क्षेत्र में एक अतुलनीय अनुसंधान के लिए एक मिल का पत्थर सिद्ध होगा। इसी प्रकार 28 वर्षीय मानद कर्नल पार्वती जांगिड को भी पिछले वर्ष विश्व महिला दिवस के अवसर पर हार्वर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा विश्व की 100 महिलाओं में स्थान दिया गया था। वह भी पैसे के आधार पर नहीं अपितु सशस्त्र सेनाओं की बहन बनकर यह सम्मान हासिल किया।**

आज **अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस,** एक औपचारिक महिला दिवस उत्सव नहीं रहा , बल्कि इस दिवस का वास्तविक उद्देश्य नारी के समान अधिकार , मान और प्रतिष्ठा के साथ-साथ नारी शक्ति को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने की प्रेरणा देने का दिन भी है। **आज नारी को जो उच्च सम्मान दिया जा रहा है, वह इसलिए दिया जा रहा है कि नारी समाज और संस्कृति की एक मजबूत धूरी है।** आज शिक्षा , स्वास्थ्य, प्रशासन, न्यायपालिका तथा राजनीति सहित कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है, जहां पर नारी ने अपनी प्रतिभा के बल पर अनेक कीर्तिमान स्थापित न किए हों, आज महिलाएं समाज को एक नई दिशा दे रही है, लेकिन आज समाज में आध्यात्मिक चेतना, नैतिक मूल्यों और संस्कार युक्त शिक्षा का विस्तार करने की जरूरत है, **मेरा मानना है कि शिक्षा केवल ज्ञान तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए , बल्कि संस्कारों को भी, शिक्षा का आधार बनाना चाहिए तभी नारी का सम्मान केवल शब्दों में नहीं बल्कि वास्तविक जीवन के व्यवहार में भी परिलक्षित होगा ।** इस सबके साथ ही मैं, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी जाति और मातृशक्ति को बधाई और मुबारकबाद देती हूँ , कि उन्होंने अपने अथक परिश्रम और मेहनत से न केवल नए-नए आयाम स्थापित किए हैं, अपितु अपने मातृत्व की रक्षा के लिए अनेक कष्टों का सामना भी करना पड़ा, लेकिन अपने ममत्व की रक्षा के साथ कोई भी समझौता नहीं किया, अपितु प्रत्येक क्षेत्र में, अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए अथक प्रयास किए गए हैं और आज चाहे वह जल सेना हो, वायु सेना हो, शोध अनुसंधान संस्थान हों, शिक्षा हो या न्यायपालिका या राजनीति हो , ऐसा कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है, जहां महिलाओं ने अपनी पहुंच नहीं बनाई हो। देश में अनेक महिलाएं हुई हैं, जिन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है, इनमें रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होलकर, सरोजिनी नायडू, लता मंगेशकर और कल्पना चावला जैसी प्रख्यात महिलाएं शामिल हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस नारी शक्ति चेतना का द्योतक है। इसके इतिहास के बारे में पीछे मुड़कर देखते हैं , तो पता चलता है कि सन् 1917 में रुस की महिलाओं ने पहली बार **रोटी और शांति की मांग करते हुए, अपनी एकता का परिचय देते हुए, ऐतिहासिक हड़ताल की थी और सरकार को विवश होकर महिलाओं को वोट का अधिकार देना पड़ा और ग्रेगोरियन कैलैण्डर के अनुसार वह तारीख 8 मार्च के समान थी और उसके बाद संयुक्त राष्ट्र ने भी अधिकारिक तौर पर भी इसे मान्यता**

दी गई थी और उसके बाद प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को विश्व महिला दिवस मनाया जा रहा है। श्रीमद्भागवत गीता में , नारी को प्रकृति का पर्याय कहा गया है , जो शिशु का पालन कर उसे मनुष्य बनाती है और वंश परंपरा का सूत्र, पुरुष से चलता है। इसी प्रकार घर में भी, हवन -यज्ञ आदि शुभ कार्य के समय पर पत्नी - पति के वाम-अंग में बैठती है , इसलिए वह "वामा" कहलाती है ,वामा की उपस्थिति के बिना शुभ कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है। इसी प्रकार हमारी परंपरा में पाणिग्रहण संस्कार हवन के साथ सम्पन्न होता है जो सूर्योदय और सूर्यास्त की संधि-वेला में सूर्य की साक्षी में होता है।

इसीलिए आप सभी महिलाओं को **अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस में यह संकल्प लेना चाहिए कि इस प्रतिस्पर्धा के युग में , न केवल पुरुषों और अपने जीवनसाथी को सम्मान देंगे , अपितु नारी शक्ति के उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी मिलजुल कर काम करेंगे और अपने सम्मान और अस्तित्व को बचाने के लिए जो भी कुर्बानी देनी पड़े उसके लिए भी सदैव ही अपने आपको तैयार रखना चाहिए तभी अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध हो सकती है** इसके साथ ही, मैं पुनः अपनी सभी बहनों को धन्यवाद देती हूँ और सभी का आभार व्यक्त करती हूँ कि, आपने अपने परिश्रम से, देश में न केवल पुरुषों की बराबरी की है , अपितु नए - नए शोध करके, कीर्तिमान स्थापित किया है। भगवान शिव को भी अर्धनारीश्वर कहा जाता है। आदिशक्ति माँ और भगवान शंकर दोनों की एक ही स्वरुप है। इसके अनुसार आधा शरीर नारी का और आधा शरीर पुरुष का है। इसका आशय यही है कि नारी और पुरुष के एकाकार होने से ही पूर्णता प्राप्त होती है। इसलिए नारी और पुरुष दोनों को मिलकर ही अपनी सार्थकता सिद्ध करनी होगी और तभी अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का मनोरथ सिद्ध होगा। इसी विश्वास के साथ। विपुल धन्यवाद।

अनूसुईया शर्मा, शास्त्री, गुरुग्राम

शीतल विश्वकर्मा को राजस्थान यूथ आईकॉन अवार्ड 2026 मिला।

नीरज कुमार जांगिड, दौसा

युवाओं को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक करने वाली और सकारात्मक सोच की धनी तथा उदात्त दृष्टिकोण की द्योतक, दौसा जिले की रहने वाली शीतल विश्वकर्मा को, वर्ष 2026 के लिए **राजस्थान सरकार द्वारा आईकॉन अवार्ड 2026 देकर सम्मानित किया गया है।** शीतल विश्वकर्मा को यह सम्मान , राजस्थान के मुख्य मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और कैबिनेट मंत्री हर्षवर्धन राठौर द्वारा जयपुर में एस एम एस स्टेडियम में आयोजित युवा महोत्सव कार्यक्रम के दौरान दिया गया। **राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल द्वारा इस अवसर पर शीतल विश्वकर्मा को एक लाख रुपए का चैक और एक सर्टिफिकेट एवं ट्राफी भी प्रदान की गई।**

राजस्थान के मुख्य मन्त्री भजनलाल शर्मा , शीतल विश्वकर्मा को सम्मानित करने के बाद, उससे बातचीत करते हुए।

शीतल विश्वकर्मा को, यह प्रतिष्ठित सम्मान समाज, के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और उत्कृष्ट सेवाओं और समाज में दिए गए, उनके निरंतर योगदान , नेतृत्व क्षमता और सकारात्मक सोच को देखते हुए ही दिया गया है। उल्लेखनीय है कि इस पुरस्कार के लिए, पूरे राजस्थान से 13 युवाओं को ही, इस यूथ आईकॉन अवार्ड 2026 के लिए चुना गया था। शीतल विश्वकर्मा ने, अपनी इस उपलब्धि का श्रेय अपने माता-पिता को देते हुए कहा कि, उनके द्वारा दिए गए बेहतर संस्कारों का ही आज यह प्रतिफल है, जिससे कारण ही यह विशेष उपलब्धि हासिल हुई है। **उन्होंने कहा कि यह माता - पिता द्वारा उनको समाज सेवा के लिए दिए गए , अमूल्य टिप्स और बेहतर प्रेरणा का ही प्रतिफल है कि, जिसके कारण ही मुझ में भी समाज सेवा करने के लिए एक उत्कट जिजीविषा की भावना प्रज्वलित हुई और यह प्रतिष्ठित यूथ आईकॉन अवार्ड, मैं अपने माता-पिता को समर्पित करती हूँ।**

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने शीतल विश्वकर्मा को बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और समाज तथा देश के लिए उसके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करते हुए समाज के सभी युवाओं को इनसे प्रेरणा लेने के सलाह दी।

****

फरीदाबाद में ब्रह्मर्षि अंगिरा शिक्षा समिति के चेयरमैन बलबीर शर्मा बने।

फरीदाबाद में जांगिड ब्राह्मण समाज द्वारा संचालित सामाजिक एकता और आपसी भाईचारे का द्योतक, जवाहर कालोनी फरीदाबाद में, समाज के द्वारा बनाया गया ब्रह्मर्षि अंगिरा सीनियर सेकेंडरी स्कूल के त्रिवार्षिक चुनाव, 14 मार्च को सम्पन्न और इस चुनाव में, फरीदाबाद के रहने वाले, बलबीर शर्मा को सर्वसम्मति से स्कूल का चेयरमैन बनाया गया है। इस चुनाव को निर्विरोध रुप से सम्पन्न करवाने के लिए पूर्व प्रधान , लालसिंह जांगिड की अध्यक्षता में आयोजित की गई एक बैठक में, समाज में आपसी एकता का शंखनाद करते हुए, इस सभा में उपस्थित , शिक्षा समिति के सभी गणमान्य सदस्यों ने, एक मत होकर विगत कुछ वर्षों से इस समिति के कोषाध्यक्ष पद पर ईमानदारी और सत्य निष्ठा से कार्य कर रहे, बलबीर शर्मा के नाम का , सर्वसम्मति से प्रस्ताव रखा गया और सभी उपस्थित महानुभावों ने, एकता का परिचय देते हुए, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सभी सदस्यों ने इस प्रस्ताव अनुमोदन करते हुए, बलबीर शर्मा के, निर्विरोध निर्वाचित होने का रास्ता प्रशस्त किया।

इस अवसर पर निवर्तमान चेयरमैन रविन्द्र शर्मा ने, नवनियुक्त चेयरमैन बलबीर शर्मा को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मैं, नवनियुक्त चेयरमैन को हर संभव सहयोग प्रदान करुंगा ताकि यह समाज इसी प्रकार से आगे बढ़ता रहे। इस समिति के महासचिव पद पर जयसिंह जांगिड और कोषाध्यक्ष प्रतीक शर्मा को चुना गया है। इस अवसर पर हरियाणा प्रदेश सभा के अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड, समिति के पूर्व चेयरमैन टेक चन्द जांगिड, शिवनारायण शर्मा, समिति के उपाध्यक्ष सुनील शर्मा , बालकिशन, जिला सचिव राजेंद्र जांगिड, शाखा सचिव राजेंद्र, ईश्वर आर्य, अशोक जांगिड , शाखा उपाध्यक्ष नेतराम , दिनेश जांगिड, राम कुमार, उमेश जांगिड एवं सुरेश जांगिड उपस्थित थे।

नवनिर्वाचित चेयरमैन बलबीर शर्मा, ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए भावुक हो कर कहा कि, आपने मुझे जो, यह दायित्व सौंपा है, उस दायित्व को मैं, समाज के सभी बुद्धिजीवियों के सहयोग और अनन्य समर्थन से, सत्य निष्ठा पूर्वक तरीके से कार्य करते हुए स्कूल और समाज की सेवा करने का भरपूर प्रयत्न करुंगा। उन्होंने जांगिड ब्राह्मण समाज फरीदाबाद के सभी महानुभावों का भी कोटि - कोटि आभार व्यक्त करते हुए, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने ब्रह्मर्षि अंगिरा शिक्षा समिति के चेयरमैन बलबीर शर्मा को बधाई देते हुए कहा कि उनके कुशल नेतृत्व में यह शिक्षा समिति महर्षि अंगिरा के आदर्शों और सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने के साथ ही समाज के छात्र-छात्राओं को आधुनिक शिक्षा और संस्कार देकर देश और समाज के निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करने का अवसर प्रदान करेगी।

टेक चन्द जांगिड ,फरीदाबाद

इंदौर की विदुषी जांगिड ने भारोत्तोलन प्रतियोगिता में रजत पदक जीता

अपनी असीम प्रतिभा, उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन और दक्षता का परिचय देते हुए जनवरी में, चंडीगढ़ में आयोजित किए गए, भारोत्तोलन प्रतियोगिता में इन्दौर की रहने वाली,जांगिड ब्राह्मण समाज इंदौर के रहने वाले, छितरमल जांगिड मण्डावाले की सुपुत्री विदुषी जांगिड ने , चंडीगढ़ में 26 जनवरी से 30 जनवरी तक आयोजित , अखिल भारतीय इन्टर विश्वविद्यालय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में , दूसरा स्थान हासिल करके इस प्रतियोगिता में रजत पदक जीतकर , समाज और परिवार का नाम रोशन किया है।

इस प्रतियोगिता का आयोजन , पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के खेल निदेशालय द्वारा किया गया था। मध्य प्रदेश सभा और जांगिड समाज इंदौर ,उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता है और आशा है कि वह भविष्य में भी, भगवान श्री विश्वकर्मा के आशीर्वाद से इसी तरह से मेडल, जीतकर अपने देश, समाज और परिवार का नाम रोशन करती रहेगी।

इन्दौर की विदुषी जांगिड ने चंडीगढ़ में आयोजित भारोत्तोलन प्रतियोगिता में रजत पदक जीता

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, विदूषी जांगिड को रजत पदक हासिल करने पर बधाई देते हुए कहा कि जिस प्रकार का उनका (विदुषी) नाम है, उसी के अनुरुप ही उसने प्रदर्शन करते हुए भारोत्तोलन में, रजत पदक हासिल किया है और भविष्य में भी वह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पुरस्कार हासिल करके, समाज और देश का नाम गौरवान्वित करेगी। मैं, उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

मध्य प्रदेश सभा अध्यक्ष, प्रभु दयाल बरनेला

तहसील सभा निवाई की नवनियुक्त कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह 16 मार्च को आयोजित किया गया।

श्री विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष और राज्य मंत्री का दर्जा प्राप्त, मुख्य अतिथि राज्यमंत्री रामगोपाल सुथार ने कहा कि किसी भी , समाज की आशातीत प्रगति और उन्नति का प्रमुख आधार, उस समाज की आपसी एकता और सामाजिक सद्भाव तथा मजबूत संगठन है और यही समाज की प्रगति के सबसे अनिवार्य और सुदृढ़ स्तंभ हैं। उन्होंने नवनियुक्त कार्यकारिणी को अन्त: करण से बधाई देते हुए कहा कि समाज के नेतृत्व का अर्थ, केवल पद प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास और सहायता पहुँचाने के लिए निरन्तर स्तुत्य प्रयास करना जरूरी है।

तहसील निवाई , जिला टोंक की कार्यकारिणी को 16 मार्च को तहसील अध्यक्ष कन्हैयालाल जांगिड और उसकी कार्यकारिणी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई।

विश्वकर्मा विकास कौशल बोर्ड के अध्यक्ष रामगोपाल सुथार ने, यह उद्गार भगवान श्री विश्वकर्मा मंदिर निवाई में, 16 मार्च को, नवनियुक्त निवाई तहसील अध्यक्ष कन्हैयालाल जांगिड और कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह में बोलते हुए व्यक्त किए। समारोह में पदाधिकारियों को अतिथियों द्वारा समाज सेवा के संकल्प के साथ ही पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई।

राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार ने कहा कि, आधुनिक युग में, महिला शक्ति को आगे आना चाहिए और समाजहित के कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। उन्होंने याद दिलाया कि पहली बार कोटपुतली बहरोड़ ज़िले में माया देवी जांगिड तहसील नीमराना और सविता देवी जांगिड बहरोड़ तहसील अध्यक्ष बनी हैं और यह महिलाओं में जागृति का द्योतक है। उन्होंने मातृशक्ति का आह्वान कि वह बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने के साथ - साथ ही उनको बेहतर संस्कार प्रदान करें।

निवाई पीपलू के पूर्व विधायक रामसहाय वर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप ईसरानी ने इस समारोह में, समाज के लोगों को आश्वासन दिया कि वह तन, मन व धन से जांगिड समाज के साथ है, क्योंकि इस समाज ने अपने अथक परिश्रम और साधना करते हुए और सृष्टि रचना कर्ता भगवान विश्वकर्मा के द्वारा प्रदत्त कला के माध्यम से देश में प्रतिष्ठित हासिल की है।

नवनियुक्त तहसील अध्यक्ष कन्हैयालाल जांगिड सिरस ने, अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आपके मार्गदर्शन में समाज की सत्य निष्ठा पूर्वक सेवा करते हुए अपने दायित्व का भलीभांति निर्वहन किया जाएगा।

महासभा के राजनैतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राकेश जांगिड, तहसील सभा सचिव मनीष बहकवा, प्रवक्ता प्रेम प्रकाश खंडवा, कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष राजाराम जांगिड, राजस्थान महिला प्रकोष्ठ की पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और भाजपा जिलामंत्री नीलू शर्मा और कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे टोंक जिलाध्यक्ष एडवोकेट हनुमान प्रसाद जांगिड रानोली ने अपने अपने विचार व्यक्त करते हुए,समाज में एकजुटता बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि, समाज की प्रगति का मूलाधार, सामाजिक सद्भाव और संगठन की मजबूती है और यह लक्ष्य एकजुटता के बिना हासिल नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि एक दूसरे की टांग खिचाई से समाज का विकास होना कदापि संभव नही है।

इस समारोह में समिति के संरक्षक लल्लूलाल सेदरिया, राधेश्याम बांसड़ा, कार्यकारी अध्यक्ष कैलाश चैनपुरा, महामंत्री बाबूलाल सेदरिया, शशिकांत मोहम्मद गढ, कोषाध्यक्ष कैलाश , सलाहकार प्रहलाद, कैलाश आराधना, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रहलाद चैनपुरा सहित 80 से अधिक पदाधिकारियों ने शपथ ग्रहण की और सभी आगंतुक मेहमानों को बतौर करते हुए, तहसील सभा की तरफ से हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

इस अवसर पर हरिशंकर जांगिड, टोंक छात्रावास कालूराम जांगिड, कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष परमेश्वर जांगिड, राजेन्द्र पराणा, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष संजय हर्षवाल, विकास समिति के अध्यक्ष, रामेश्वरप्रसाद जांगिड, कजोड़, रामलाल, राधेश्याम, हनुमान, सुरेश, रमेश, दिनेश, शंभू, चौथमल सहित पूर्व जिला एवं सभी तहसीलों के तहसील अध्यक्ष, पदाधिकारी व वर्तमान अध्यक्ष मय कार्यकारिणी एवं निवाई के सभी गांवों से सैंकड़ों लोग मौजूद थे।

पत्रकार, कृष्ण कुमार जांगिड पीपलू

नव संवत्सर 2083 के दौरान हर क्षण में एक नई चेतना की शुरुआत करें।

सम्पादक ज्ञान ज्योति दर्पण, अजीत जांगिड

जिस प्रकार से अंग्रेजी में गणना के आधार पर नववर्ष 1 जनवरी को मनाया जाता है, उसी प्रकार से हिन्दू नववर्ष, हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार और वेदों और शास्त्रों के अनुसार नव विक्रम संवत की शुरुआत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाता है और इस वर्ष विक्रमी संवत 2083 की शुरुआत 19 मार्च से हो रही और इस दिन पहला नवरात्र, गुड़ी पड़वा भी है। मैं इस पुनीत अवसर पर अपने हृदय के अन्तःकरण से सभी को , हार्दिक बधाई देता हूँ और सुख समृद्धि और उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

जैसा कि मान्यता है कि समय के बहाव को कोई भी नहीं रोक सकता है और सतयुग , त्रेता और द्वापर तथा आधुनिक युग कलियुग में भी समय , अपनी गति से निरन्तर जारी है। आज नववर्ष हो या नव संवत्सर, यह हमारी एक सोच का हिस्सा बन गया है और कई ऊर्जावान महानुभाव इस अवसर को, एक संकल्प के रूप में लेते हैं और उस पर चलते हुए, उस संकल्प को पूरा करने का निर्णय ले लेते हैं और कई बार वह सफल भी हो जाते हैं। **वैसे तो हर दिन एक नया दिन है और हमारी आयु का एक दिन कम होता रहता है। लेकिन जिस समय नव वर्ष में हमारी सोच बदलती है तो, हम प्रायः एक नई डायरी, नया कैलेंडर और कुछ अधूरे संकल्पों के साथ आगे बढ़ने का निर्णय ले लेते हैं।** उसी प्रकार यह नव विक्रम संवत 2083 भी, इसी परंपरा का द्योतक बन सकता है, यदि हम इसे भी केवल मात्र तारीखों का एक परिवर्तन मान लें। **किंतु फिर वहीं एक प्रश्न हमारे मन को कचोटता है कि, जब जीवन की हर एक सांस नई है, हर क्षण नया है, तो केवल नया वर्ष या नव संवत्सर आने पर ही नया काम करने की आवश्यकता क्यों महसूस होती है?।**

इस जीवन में, यदि हम हर सांस को नए संकल्प की तरह जीना सीख लें, **तो चाहे सन् 2026 का वर्ष हो, या नव विक्रम संवत हो, हमारे लिए केवल एक नया साल नहीं, बल्कि नया जीवन और दृष्टिकोण बन सकता है। इसको पढ़ने के पश्चात आप थोड़ा सा मनन, चिंतन और मंथन अवश्य ही करें, और यदि संभव हो सके तो, इसे व्यवहारिकता के साथ जीवन में आत्मसात करने का स्तुत्य प्रयास करें।** मनुष्य को यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करना होगा कि यह जीवन भगवान का, दिया हुआ एक मकान है और हम इसमें एक किरायेदार हैं इसलिए यह कभी भी मालिक द्वारा खाली करवाया जा सकता है और इसलिए इस जीवन में सुधार की भी पर्याप्त गुंजाइश सदैव ही बनी रहती है।

लेकिन यह भी सच्चाई है कि जब हम हर सांस को, एक नए भाव से, स्वीकार करते हैं, तो जीवन में कभी भी क्रोध , अहंकार और निराशा स्थायी नहीं रहती है। क्योंकि मानव संवेदनाओं और अन्त:करण में नई चेतना का सृजन होने के कारण ही, **मनुष्य के व्यवहार में बदलाव आता है और यह सोच व्यक्ति को आंतरिक रूप से मुक्त करती है। नई परिधि में सोचने वाला व्यक्ति दूसरों को दोष देने के स्थान पर अपनी भूमिका में कमियों को तलाशते हुए उनको दूर करने का सदैव ही प्रयास करता रहता है** और नव वर्ष या नव विक्रम संवत के बहाने ही सही चेतना, यदि समाज में फैले, तो संघर्ष की जगह संवाद और प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग जन्म लेता है।

आज के युवाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती है- **विचारों की गुणवत्ता और नई चिंतन प्रकिया** आज के इस कृत्रिम बुद्धिमत्ता, व्हाट्सएप तथा सोशल मीडिया के युग में इनके माध्यम से बहुत कुछ परोसा जा रहा है, जिस पर पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता है, इससे युवाओं की चिंतन क्षमता और आन्तरिक विवेक कम हो रहा है। **इसलिए चिंतन और मनन का पुनर्जागरण बहुत ही आवश्यक है। नई चिंतन - प्रक्रिया द्वारा ही, वैश्विक सुधार संभव है। मननशील मानव, न केवल अपने लिए जीता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग भी बनाता है।**

इस जीवन में सामाजिक और आर्थिक प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए हर सांस को नए संकल्प के रूप में जिए, तो उसका सीधा प्रभाव समाज और अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। सामाजिक स्तर पर, संवेदनशीलता बढ़ेगी, हिंसा और वैमनस्य में कमी आएगी, परिवार और मानव कल्याण की भावना सुदृढ़ होगी और आर्थिक स्तर पर उपभोग के स्थान पर संतुलन आएगा और आज विश्व को ऐसे

नागरिकों की आवश्यकता है, जो केवल लाभ नहीं बल्कि अपने उत्तरदायित्व को भी भली-भांति समझें। इसी प्रकार जीवन में सांस्कृतिक प्रभाव भी है और इस महान देश भारत की, संस्कृति और विरासत, केवल एक परंपरा नहीं, अपितु एक जीवन-शैली है। **आज कृत्रिम इंटैलीजैंस के युग में, सबसे बड़ा खतरा हमारी सांस्कृतिक विरासत और धरोहर की विस्मृति का है।** आज की नई पीढ़ी इस नई तकनीक से जुड़ रही है, पर दुर्भाग्यवश वह अपनी जड़ों से कटती जा रही है। यदि हम हर सांस को नए सम्मान के साथ जीने का संकल्प लें तो, तो भाषा, लोकाचार, परिवार-संस्कार और सह-अस्तित्व की भावना को जीवंत बनाए रखना और देश की महान संस्कृति का संरक्षण किसी एक वर्ग का दायित्व नहीं, बल्कि हर जागरूक और संवेदनशील मानव की यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

अन्त में, मैं यही कहना चाहता हूँ कि **जब तक यह जीवन है, इसका हर क्षण एक नवजीवन ही है, चाहे व नया वर्ष हो या नव संवत्सर, लेकिन आज जरुरत इस बात की है कि आपने इस दौरान क्या लक्ष्य निर्धारित किया है और क्या संकल्प लिया है? जिसको पूरा करने के लिए अपने आचरण और व्यवहार में क्या विशेष परिवर्तन किया है।** इसलिए लिए मनुष्य के जीवन में चुनौतिया बाहरी नहीं, अपितु आंतरिक भी हैं। **जिस समय एक व्यक्ति यह समझ लेता है कि परिवर्तन किसी वर्ष या नव संवत्सर का इंतजार नहीं करता, बल्कि यह नव जागृति और नवचेतना की मांग है।** जब मनुष्य स्वयं अपने आचरण में सहजता को आत्मसात करते हुए, हर क्षण, हर सांस और प्रत्येक कर्म में , अपने आपको जोड़ने का प्रयास करेंगे, तभी नव वर्ष या नव संवत्सर मनाने का औचित्य सार्थक होगा।

****

मोहनलाल जांगिड, तहसील सभा रेनवाल के अध्यक्ष बने।

रेनवाल तहसील सभा का चुनाव 8 फरवरी को सम्पन्न हुआ और इसमें मोहन लाल जांगिड, सीलक को अध्यक्ष बनाया गया है। चुनाव अधिकारी सुरेश गोगोरिया ने कहा कि यह चुनाव सुव्यवस्थित व शांतिपूर्वक तरीके से संपन्न हुए, इसमें अध्यक्ष पद के लिए तीन प्रत्याशियों ने अपना भाग्य आजमाने का प्रयास किया था, जिनमें बजरंग लाल जांगिड, मोहनलाल जांगिड और रामेश्वर लाल जांगिड शामिल थे , लेकिन समाज में आपसी सौहार्द बनाए रखने के उद्देश्य से बाद में, रामेश्वर लाल जांगिड ने, मोहनलाल जांगिड के पक्ष मे अपना नामांकन पत्र वापस ले लिया और उनका समर्थन कर दिया।

मोहनलाल जांगिड रेनवाल ,तहसील अध्यक्ष बने।

चुनाव अधिकारी ने बताया कि इस चुनाव में कुल 503 मतदाता थे इसमें से 230 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का उपयोग किया और इस चुनाव में, मोहन लाल को 156 मत और बजरंग लाल जांगिड को कुल 71, मत मिले और इस प्रकार मोहनलाल जांगिड , निर्वाचित घोषित किए गए। चुनाव अधिकारी सुरेश गोगोरिया ने कहा कि चुनाव मतदान अधिकारियों ने, इस मतदान प्रक्रिया को शांति पूर्वक तरीके से संपन्न करवाने का हर सम्भव भरसक प्रयास किया और इसमें सफलता भी हासिल हुई।

मोहन लाल जांगिड ने तहसील अध्यक्ष बनने पर भावुक होते हुए कहा कि **मैं समाज की भावनाओं के अनुकूल उन पर, सदैव ही खरा उतरने की भरसक कोशिश करूंगा तथा सभी को साथ लेकर टीम भावना से समाज हितार्थ काम करुंगा। उन्होंने तहसील सभा रेनवाल सहित समस्त जांगिड समाज के लोगों का आभार व्यक्त किया और कहा कि सदैव ही मुझ पर इसी प्रकार से आत्मिक प्रेम, स्नेह एवं सहयोग बनाए रखना।**

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, मोहनलाल जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि वह , अपने पद की गरिमा को बनाए रखते हुए , समाज सेवा के कार्य को पूर्ण निष्ठा और लगन के साथ करते रहेंगे और वह लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का हर सम्भव प्रयास करेंगे। मैं उसके सुखमय और उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

महासभा , उप प्रधान राधेश्याम जांगिड

जय श्री विश्वकर्मणे नमः

पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023

अंगिराऽसि जांगिड

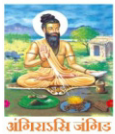

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2918/2026 दिनांक 31/01/2026

प्रेषित,

श्रीमान हरीराम जांगिड,
सम्पादक, दीप विश्वकर्मा,
जयपुर (राजस्थान)
मोबाइल नम्बर 9414816740

*** शुभकामना संदेश ***

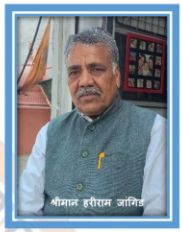

महोदय,

जांगिड ब्राह्मण समाज में प्रकाशित होने वाली विभिन्न पत्रिकाओं में से **"दीप विश्वकर्मा पत्रिका"** पत्रिका पिछले काफी समय से प्रकाशित होने वाली एक जानी मानी एवं प्रतिष्ठित पत्रिका है। इस पत्रिका ने समाज को एक नई पहचान देने के साथ ही नई दिशा भी प्रदान की है। आपने, **दीप विश्वकर्मा पत्रिका** के माध्यम, से सामयिक एवं ज्वलंत तथा गम्भीर विषयों पर समय-समय पर समाज को प्रेरणादायक दिशा देकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। आपकी लेखनी एवं कलम की ताकत कि समस्त समाज बन्धुओं ने उदार मन से प्रशंसा की है। सामाजिक गतिविधियों कि जानकारी के साथ ज्ञानप्रद लेख एवं महत्वपूर्ण जानकारियाँ देने के साथ ही नव युवक - युवतियों के परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह जैसे आयोजनों से पत्रिका को एक सम्मानजनक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

मैं, आपको **"दीप विश्वकर्मा पत्रिका"** के **लगातार 24 वर्ष पूर्ण करके 25वें वर्ष** में प्रकाशन कि शुरुआत करने पर कोटि-कोटि हार्दिक बधाई और शुभकामनाऐं देते हुए पत्रिका की उत्तरोत्तर वृद्धि एवं प्रसिद्धि की कामना करता हूँ।

।। जय श्री विश्वकर्मा ।।

शुभेच्छू

रामपालशर्मा

(रामपाल जांगिड)
प्रधान - महासभा

राकेश जांगिड ने बॉडी बिल्डिंग में, आल इंडिया सिविल सर्विसेज खेलों में स्वर्ण पदक जीता।

जीवन में आशातीत सफलता और अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने का एक ही रास्ता है और वह रास्ता, मेहनत परिश्रम और पुरुषार्थ की गलियों से होकर ही गुजरता है और अपने दृढ़ संकल्प और जीवन में अग्रसर होने की उत्कट जिजीविषा से अभिप्रेरित होकर, अपने बुलन्द होंसलों, अथक परिश्रम और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ते हैं, तो निश्चित रूप से सफलता उसके कदम चूमेगी और इसी प्रकार जिसके मन में, आसमां को छूने की हसरत तो फिर लक्ष्य दूर नहीं होता है और अपने हौसले से, यह सिद्ध करके दिखलाया है, बुलन्द हौसलों की जीवन्त मिसाल और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित, पानीपत जिले के एक छोटे से गांव डिकाडला के रहने वाले, राकेश जांगिड ने, जिन्होंने दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में 17 फरवरी से 19 फरवरी तक आयोजित आल इंडिया सिविल सर्विसेज गेम्स 2025- 2026 में स्वर्ण पदक हासिल करके , जांगिड समाज के साथ-साथ ही , हरियाणा रोडवेज और प्रदेश का नाम भी गौरवान्वित किया है।

दिल्ली में 17 से 19 फरवरी तक आयोजित आल इंडिया सिविल सर्विसेज खेलों में राकेश जांगिड ने, स्वर्ण पदक हासिल किया

राकेश जांगिड का परिचय किसी का मोहताज नहीं हैं, वह हरियाणा रोडवेज में , परिचालक के पद पर कार्यरत हैं, खेलों के प्रति उनकी रुचि ने ही , उनको आज यह विशेष ख्याति दिलवाई है। उन्होंने अपनी असीम बौद्धिक प्रतिभा का परिचय देते हुए बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में, अनेक पुरस्कार अपने नाम किए हैं। उन्होंने पिछले वर्ष सन् 2025 में भी , विदेशी धरा थाईलैंड में, आयोजित की गई , सीनियर बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में 60 किलोग्राम भार वर्ग में, दो मेडल जीतकर भारत का परचम लहराया और देश का नाम गौरवान्वित किया है। गांव डिकाडला, जिला पानीपत में पिता कर्मवीर जांगिड और माता श्रीमती सुदेश देवी जांगिड के घर 4 दिसम्बर 1989 को पैदा हुए , राकेश जांगिड ने बताया कि अभी फरवरी 2026 में ही, नई दिल्ली में 17 से 19 फरवरी तक , जो आल इंडिया सिविल सर्विसेज गेम्स आयोजित किए गए थे, उसमें उन्होंने 65 किलोग्राम भार वर्ग में हिस्सा लिया और इस प्रतियोगिता में, स्वर्ण पदक हासिल किया है। इस प्रतिस्पर्धा में देश के विभिन्न प्रदेशों से कुल 34 प्रतियोगियों ने भाग लिया था।

राकेश जांगिड ने भावुक होते हुए कहा कि, बॉडी बिल्डिंग में मैडल जीतना तो मेरे लिए एक संयोग ही कहा जाएगा, क्योंकि इससे पहले तो मैं, दौड़ लगाने का अभ्यास करता था और उसमें भी **मैंने अपनी प्रतिभा और दक्षता के बल पर अनेक पुरस्कार हासिल किए, लेकिन पिछले तीन सालों में मेरा रुझान बॉडी बिल्डिंग के प्रति बढ़ा , जिसके कारण यह विशेष उपलब्धि बॉडी बिल्डिंग खेल में हासिल हुई है** और मुझे गर्व है कि विगत तीन वर्षों के दौरान ही मैंने, बॉडी बिल्डिंग में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। उन्होंने याद दिलाया कि वह एक छोटे से गांव में पैदा हुए हैं , जहां मूलभूत सुविधाओं का अभाव है और उन्होंने अपनी 12 वीं कक्षा चौधरी छोटूराम जमींदार स्कूल (सी आर जैड) सोनीपत, स्नातक की डिग्री डी ए वी कालेज चंडीगढ़ से पास और योगा में डिप्लोमा मानव भारती विश्वविद्यालय सोलन हिमाचल से किया। अपनी प्रतिभा के बल पर ही, पिछले वर्ष सन् 2025 में उन्होंने बैंकॉक

के पटाया शहर में, आयोजित इंटरनेशनल बॉडीबिल्डिंग और क्लासिक बॉडीबिल्डिंग चैंपियनशिप में, दो मेडल जीतकर इतिहास रचने का काम किया था।

राकेश जांगिड ने कहा कि बैंकाक के पटाया बॉडी बिल्डिंग स्पोर्ट्स एसोसिएशन की तरफ से , इस इंटरनैशनल बॉडी बिल्डिंग चैंपियनशिप का आयोजन 10 से 13 मई 2025 के दौरान किया गया था और उन्होंने यह दोनों मेडल 11 मई को ही जीते थे और इस प्रतियोगिता में देश के काफी खिलाड़ियों ने बढ़ - चढ़कर भाग लिया था और इसके साथ ही इस प्रतियोगिता में 60 किलोग्राम भार वर्ग और उसके अलावा क्लासिक बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में, भी, मैंने कॉन्सेप्ट पदक प्राप्त किया था।

विनम्रता और सौम्यता के प्रतीक, हंसमुख स्वभाव के धनी और समाज हितेषी सोच रखने वाले, दिल्ली के रहने वाले, हंसराज जांगिड ने, राकेश के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि, मुझे फख्र है कि वह मेरा दामाद है और उसने कड़ी मेहनत परिश्रम और लगन से कार्य करते हुए यह सिद्ध कर दिया कि एक साधारण परिवार में और एक छोटे से गांव में पैदा हुआ, एक साधारण युवा भी, अपनी असीम प्रतिभा के बल पर असाधारण उपलब्धि हासिल कर सकता है।

हरियाणा के परिवहन मंत्री, अनिल विज ने, राकेश जांगिड को इस उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि , उन्होंने अपनी प्रखर बौद्धिक क्षमता को, इससे पहले भी सिद्ध करके दिखलाया है और उन्होंने न केवल हरियाणा प्रदेश अपितु, हरियाणा राज्य परिवहन विभाग की प्रतिष्ठा को भी द्विगुणित किया है। मंत्री ने भरोसा दिलाया कि, परिवहन विभाग द्वारा राकेश जांगिड को उचित मान सम्मान दिया जाएगा। उन्होनें राकेश जांगिड के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हुए कहा कि , वह भविष्य में भी, इसी प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मेडल जीता करके, सदैव ही प्रदेश का नाम गौरवान्वित करते रहेंगे।

बैंकाक में 10 से 13 भी 2025 में आयोजित बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में राकेश जांगिड ने दो मेडल जीते।

मेडल जीतने पर अपने गांव में पहुंचने पर, ग्राम वासियों ने, उनका पलक पांवड़े बिछाकर स्वागत किया गया और इन स्वागत करने वालों में, विकास सत्यनारायण , मनोज , जगमहेन्द्र, संदीप , सोनू प्रदीप, नरेश और दीपक शामिल थे। अपने बेटे द्वारा मेडल जीतकर घर पहुंचने पर, उसकी माँ श्रीमती सुदेश देवी जांगिड, भावुक हो गईं और खुशी के मारे उसके आंसू झलकने लगे और उसने बेटे के उज्ज्वल भविष्य के साथ ही, भविष्य में और अधिक मेडल जीतने का आशीर्वाद भी दिया। **राकेश ने कहा कि यह मेडल मैं अपने माता-पिता को समर्पित करता हूँ** और उन्होंने स्पष्ट कहा कि कोई भी कार्य की शुरुआत करने से पहले वह अपने इष्ट देव भगवान और माता- पिता को अवश्य ही याद रखेगें, तो सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, राकेश जांगिड को बॉडी बिल्डिंग में आल इंडिया सिविल सर्विसेज खेलों में स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई देते हुए कहा कि, उन्होंने पिछले वर्ष सन् 2025 में भी, बैंकाक में आयोजित प्रतियोगिता में भी , रजत पदक और कास्य पदक हासिल किए थे। उनके द्वारा हासिल की गई इस उपलब्धि से, यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि अगर जीवन में मनुष्य संकल्प और इच्छा शक्ति के साथ कार्य करें तो, असंभव कार्य को संभव बनाया जा सकता है और कोई भी उपलब्धि हासिल की जा सकती है। मैं राकेश जांगिड के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

महासभा कार्यालय अधीक्षक, ऋषि प्रकाश जांगिड

बढई समाज में पैदा होने वाले जसप्रीत बुमराह को अहमदाबाद में आयोजित विश्व कप टी -20 क्रिकेट मैच में, मैन ऑफ द मैच चुना गया।

जीवन में संघर्ष और उत्कट जिजीविषा के द्योतक, जसप्रीत बुमराह एक गरीब रामगढ़िया परिवार में अहमदाबाद में पिता जसबीर सिंह बुमराह और माता दलजीत कौर बुमराह के घर 6 दिसम्बर 1993 को पैदा हुए और इनका परिवार पंजाब के फगवाड़ा से आकर अहमदाबाद में बस गया था और उन पर दुःखों का पहाड़ उस समय आन पड़ा, जिस समय बुमराह की आयु केवल 5 वर्ष की थी, उस समय उनके पिता इस संसार को छोड़कर चले गए। लेकिन ऐसी विकट परिस्थितियों में, बुमराह की माँ ने, अपने बेटे को माता - पिता दोनों का प्यार दिया। दाएं हाथ का तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर, अहमदाबाद की गलियों में क्रिकेट खेलते हुए, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रामगढ़िया समाज का नाम गौरवान्वित किया है।

रामगढ़िया सिख परिवार से आने वाले जसप्रीत बुमराह को,8 मार्च को अहमदाबाद में हुए विश्व कप टी 20 में मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया

जसप्रीत बुमराह आज , किसी परिचय का मोहताज नहीं है। भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने 8 मार्च को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी खेल स्टेडियम में आयोजित विश्व कप टी 20 में, न्यूजीलैंड की टीम के खिलाफ 15 रन देकर 4 विकेट लिए और जसप्रीत बुमराह को **मैन ऑफ़ द मैच चुना गया है। बुमराह ने भारतीय गेंदबाजी की अगुवाई करते हुए इस टी- 20 विश्व कप प्रतियोगिता के क्रिकेट मैचों में कुल 14 विकेट लिए और भारत के सर्वश्रेष्ठ विकेट टेकर खिलाड़ी रहे हैं और इस वर्ल्ड कप में उनकी इकोनॉमी दर, सिर्फ 6.2 प्रतिशत रही और न्यूजीलैंड के साथ फाइनल मैच में उनका बेहतरीन प्रदर्शन 15 रन देकर 4 विकेट हासिल करने का रहा है।**

8 मार्च को अहमदाबाद में आयोजित किए गए भारतीय टीम के विश्व कप विजेता बनने पर भावुक होते हुए अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि, यह मैदान मेरी विश्वसनीयता का आधार रहा है और इसी खेल के मैदान से होते हुए ही , मैंने आज यहां तक का सफर तय किया है। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी चुनौती मेरे सामने यह थी कि अहमदाबाद के इस मैच को देखने के लिए मेरी माँ दलजीत कौर और मेरा बेटा भी आया हुआ था और मैंने अपनी माँ के दूध की लाज भी रखनी थी और भगवान ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे यह उपलब्धि हासिल करने का सौभाग्य प्रदान किया और भारत की टीम के विजेता बनने पर मेरा सीना गर्व से ऊंचा हो गया और मैं सुबह माँ का आशीर्वाद लेकर ही घर से निकला था और मुझे गर्व है कि भारत माँ के सपने को साकार करने के साथ ही मैं अपनी प्यारी माँ दलजीत कौर के सपने को भी मूर्त रूप देने में सफल रहा हूँ।

विश्व कप टी 20 जीतने के बाद, भारतीय क्रिकेट बोर्ड बीसीसीआई द्वारा एक विडियो जारी किया गया है और इस खेल के बारे में अपनी सटीक प्रतिक्रिया देते हुए , **जसप्रीत बुमराह ने कहा कि मुझे दबाव वाली परिस्थितियों में जिम्मेदारी लेना बहुत अधिक पसंद है** उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि यह मेरे करियर की सबसे खूबसूरत अनुभवों में से एक है और मुझे गर्व है कि भारतीय क्रिकेट बोर्ड बीसीसीआई ने **मुझ पर विश्वास करते हुए यह जिम्मेदारी सौंपी और मैं उनकी उम्मीदों पर खरा उतरा हूँ। बुमराह ने स्पष्ट कहा है कि मैं पर्दे के पीछे नहीं रहना चाहता हूँ। मैं हमेशा सक्रिय रूप से भाग लेना चाहता हूँ। मुझे शुरू से ही चुनौतियां पसंद है।** उन्होंने कहा कि मैंने क्रिकेट इसी मकसद से खेलना शुरू किया है और **अब मैं, कुछ बदलाव लाता हूँ तो मुझे बहुत खुशी होती है इससे बेहतर अहसास मेरे लिए कोई भी नहीं है।**

गुजरात में जन्मे, इस प्रतिभावान , तेज गेंदबाज खिलाड़ी जसप्रीत बुमराह के लिए यह जीत भावनात्मक रूप से और भी अधिक महत्वपूर्ण थी , क्योंकि यह जीत उसी स्थान पर मिली है, जहां से उसने अपनी गेंदबाजी को तेज धार देना सीखा और यह मैदान उनके क्रिकेट करियर की शुरुआत का साक्षी रहा है। उसने इसी मैदान पर पसीना बहाते हुए क्रिकेट खेलना शुरू किया और आज इसका प्रतिफल मिल गया है। उन्होंने इसी मैदान पर अपना अधिकतर क्रिकेट खेला है। **बुमराह ने कहा कि मैं यही गुजरात की तरफ से खेलते हुए ही यही से आगे बढ़ा हूँ और आज इसी मैदान पर भारत ने विश्व कप टी -20 जीतकर , मुझे मैन ऑफ द मैच बनने का गौरव हासिल हुआ है।**

आज मैं, वास्तव में बहुत ही खुश नसीब हूँ कि इस खिताबी जीत के दौरान मेरा परिवार इस विजयी क्षणों का साक्षी रहा है और इस पल को, बेहद निजी पल मानता हूँ। उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि मेरा बेटा यह मैच देखने आया था और संयोगवश वह, पिछली बार भी इसी स्टेडियम में, क्रिकेट मैच देखने आया था और मेरी माँ भी मैच देखने आई थी और वास्तव में, **यह क्षण मेरे लिए बहुत ही अविस्मरणीय अनुभव रहा है और इस पल की स्मृतियों को मैंने अपने हृदय पटल पर सदैव के लिए संजोकर रख लिया है और यह अद्भुत क्षण मेरे लिए वास्तव में एक यादगार और खास पल था और आज मैं सचमुच ही बहुत खुश हूँ।** लगातार दो विश्व कप जीतने वाली टीम का हिस्सा बनने का सौभाग्य जीवन में भाग्यशाली लोगों को ही मिलता है और मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे दो बार विश्व कप टी 20 विजयी टीम का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और यह अद्भुत क्षण जीवन में कभी कभार ही आते हैं और मैं इसके लिए ईश्वर का बहुत आभारी हूँ , क्योंकि मैं इससे अधिक की कल्पना भी नहीं कर सकता हूँ।

जसप्रीत बुमराह ने अब तक अन्तर्राष्ट्रीय मैचों में 504 से अधिक विकेट लिए हैं। उन्होंने 52 +मैच खेले और 234 +विकेट ली हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 27 रन देकर 6 विकट लेने का रहा है। उन्होंने कुल 89 +वन डे मैच और टी 20 इंटरनेशनल 94+ मैच खेले तथा 121+ विकेट लिए हैं।

मैं, जसप्रीत बुमराह को विश्व कप टी 20 में मैन ऑफ़ द मैच चुने जाने पर बधाई देता हूँ। जिस प्रकार से एक गरीब बढई परिवार में पैदा हुए और बचपन में सिर से पिता का साया उठ गया, फिर भी अपनी अप्रतिम क्षमता और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ते हुए, अनेक संघर्षो के बल पर भारतीय क्रिकेट टीम में अपनी जगह बनाई है और उसको अपनी प्रतिभा के बल पर सिद्ध करके दिखलाया है कि प्रतिभा किसी का मोहताज नहीं है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि वह एक दिन भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान बनकर रामगढ़िया, जांगिड और जांगड़ा समाज का नाम गौरवान्वित करते हुए , देश का नाम बुलन्द करेगा।

मैं जसप्रीत बुमराह के बुलन्द हौसलों को सलाम करते हुए , उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा

(मन का भार जितना बढेगा, उतना ही हम वर्तमान से दूर हो जाते हैं)

जीवन में हम , अनावश्यक विचारों और व्यर्थ की मान्यताओं का वजन उठाते रहते हैं और उतना ही हम वर्तमान से दूर होते चले जाते हैं। मन हल्का उस समय होगा, जिस समय हम अनचाहे भावों को पकड़ कर नहीं रखते हैं, अपितु व्यक्त करते रहते हैं। जिस समय मन हल्का होगा तो उसमें नई कल्पनाओं का सृजन होगा और हल्के मन में ही आनंद की अनुभूति होगी।

*जीवन में मन से भार को छोड़ना कमजोरी नहीं है, बल्कि यह एक आत्मिक बुद्धिमत्ता है। **मन का स्थान सीमित होता है और मन जितना खाली होगा , उतना ही वह नया स्वीकार करेगा।** इसलिए पुराने विचारों का परित्याग जल्दी से जल्दी करके, नए विचारों को आने की अनुमति दें ताकि आपका जीवन सार्थक हो सके।*

****

जांगिड समाज के सामूहिक विवाह सम्मेलन में 58 जोड़ो ने थामा एक दूजे का हाथ।

जीवन में शादी को, सात जन्मों का सम्बन्ध माना जाता है और वेदों और शास्त्रों में उल्लेखित है कि विवाह संस्कार पूर्व निर्धारित भाग्य के अनुसार ही होते हैं। लेकिन आधुनिक युग में शादी और विवाह, संस्कारों की अपेक्षा एक दिखावा बनता जा रहा है और अधिकांश युवाओं ने , शादी जैसे पवित्र बंधन को एक पैकेज के साथ जोड़ दिया है और यही कारण है कि समाज के गरीब बच्चों की शादी होना, निरन्तर एक गम्भीर समस्या बनता जा रहा है। आज आधुनिक युग में, विवाह का स्वरूप बिल्कुल बदल गया है, आज विवाह ने एक नया स्वरूप धारण कर लिया है। आजकल पहले प्री वेडिंग फोटो शूट होता है और हल्दी की रस्मों सहित नए - नए स्वरूप धारण कर रही है।

लेकिन गरीब व्यक्तियों के लिए शादी करना एक गम्भीर समस्या बन गया है और इस समस्या के समाधान के लिए सामूहिक विवाह एक रामबाण सिद्ध हो सकता है, क्योंकि सादगी, सरलता और सहजता तथा बिना दिखावे और आडम्बर के सामूहिक विवाह आपसी सहयोग और सौहार्द का द्योतक हैं। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के तत्वावधान में, **ग्राम चौसला में, 18 फरवरी को शुभ मुहूर्त में, जांगिड समाज का प्रथम आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। इस पुनीत अवसर पर जांगिड समाज के 58 जोड़ो का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ।**

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने **नव दम्पतियों को आशीर्वाद दिया और उनके सुखद भविष्य की मनोकामना करते हुए नव दम्पतियों को बधाई संदेश भेजा है।** इस कार्यक्रम में, पी एच डी मंत्री कन्हैयालाल चौधरी की धर्मपत्नी श्रीमती राधा देवी एवं टोंक सवाईमाधोपुर के पूर्व सांसद सुखबीर सिंह जौनपुरिया ने भी, इस समारोह में पहुंच कर नव दम्पतियों और वर - वधुओं को आशीर्वाद दिया और पूर्व सांसद ने प्रत्येक वधु को 1100 रुपए की राशि कन्या दान के रूप में देकर , उनको आशीर्वाद भी दिया और उनके सुखद और उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि राजस्थान प्रदेश सभा के अध्यक्ष, घनश्याम शर्मा पंवार ने **नव दम्पतियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज का यह , सामूहिक विवाह सम्मेलन इस बात का द्योतक है कि इस प्रकार के आयोजन से, समाज में एक प्रकार से जहां, दहेज प्रथा व फिजूल खर्ची पर विशेष रूप से अंकुश लगेगा** वहीं इसके साथ ही, समाज के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को एक विशेष संबल मिलता है और विशेषकर गरीब युवाओं के सपने साकार होंगे। **मैं हृदय के अन्त:करण से, इस संस्था और विशेषकर इसके अध्यक्ष को बधाई देता हूँ और इसके साथ ही मेरा व्यक्तिगत रूप से सुझाव है कि इस सामूहिक विवाह सम्मेलन की बचत राशि को जिला सभा के माध्यम से इकट्ठा कर समाज के गरीब बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए खर्च करना चाहिए** और इस बचत राशि की पारदर्शिता को बनाए रखने के लिए यह राशि जिला सभा के माध्यम से ही , अनिवार्य रूप से एकत्रित की जानी चाहिए।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष एडवोकेट हनुमान प्रसाद जांगिड ने करते हुए कहा कि, सामाजिक स्तर पर आयोजित होने वाले, इस प्रकार के सामूहिक विवाह सम्मेलनों से समाज में आपसी एकता और भाईचारे की भावना बढ़ती है और एक तरफ जहां पैसे की बचत होती है वहीं अपनी मनपसंद जीवन साथी ढूंढने में विशेष रूप से मदद मिलती है। **सम्मेलन समिति के अध्यक्ष, ओमप्रकाश ने बताया कि इस मनोहारी कार्यक्रम की , शुरुआत प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश एवं भगवान श्री विश्वकर्मा पूजन एवं आरती के साथ की गई।** उपस्थित समाज के भामाशाहों का स्वागत सम्मान करने के साथ-साथ ही दूल्हों की निकासी, निकालकर तोरण की रस्म भी पूरी की गई।

इन वर-वधुओ का पाणिग्रहण संस्कार विद्वान पण्डितों द्वारा मंत्रोचार के साथ किया गया। जिला मिडिया प्रभारी कृष्ण कुमार जांगिड पीपलू ने बताया कि इस अवसर को द्विगुणित करने वालों में, राजस्थान प्रदेश युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष धर्मवीर जांगिड, पूर्व जिलाध्यक्ष बद्रीलाल बिडोली, सहायक अभियंता अशोक कुमार जांगिड, बालिका छात्रावास अध्यक्ष पप्पूलाल, कार्यकारी जिलाध्यक्ष नेहनूलाल ढिकोलिया, उपाध्यक्ष राधेश्याम, ओमप्रकाश जांगिड, रमेश, प्रवक्ता सियाराम कुरथल, महामंत्री महेंद्र चूली व रामबिलास चैनपुरिया, शिक्षा प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष सत्यनारायण जांगिड, मुख्य सलाहकार बद्रीलाल बिडोली, कमलेश बरवास, तहसील अध्यक्षों में कृष्ण कुमार जांगिड, गौरीशंकर लावा और कन्हैयालाल, विकास समिति अध्यक्ष रामेश्वर, लल्लूराम, महेन्द्र, शंकर, नंदकिशोर जांगिड, अवधेश, कृष्णगोपाल सहित सम्मेलन समिति प्रधान लालाराम गोठवाल, कार्यकारी अध्यक्ष प्रेमचंद बावडी, अध्यक्ष ओमप्रकाश आसल्या, कोषाध्यक्ष नाथूलाल बरडवा, महामंत्री रामबाबू आसल्या, सलाहकार सीताराम गोठवाल, किशनलाल, सुमित, प्रहलाद भराणिया, गणेश, सीताराम, दौलतराम, कानाराम, दिनेश, रामप्रसाद चैनपुरा, बंशीलाल, मोहनलाल, नरेश, महावीर, ब्राह्म, सुरजीत शामिल हैं।

पत्रकार कृष्ण कुमार जांगिड पीपलू

आत्मसंतुष्टि के लिए धैर्य, साहस और सहनशीलता की जरूरत है

इस मानव जीवन में आत्मसंतुष्टि से बढ़कर कोई धन नहीं है और यह आत्मसंतुष्टि ही, एक प्रकार से भावनात्मक और संज्ञानात्मक अवस्था का ही नाम है, जिससे व्यक्ति स्वयं के साथ - साथ ही अपने परिवेश और अपने जीवन के विकल्पों के साथ, शांति के साथ ही आनन्द का भी अनुभव करता हैं और **यह भी कटू सत्य है कि, इस जीवन में आत्मसंतुष्टि एक बाह्य वस्तु नहीं अपितु व्यक्ति के अन्त:करण से ही पैदा होती है, यह बाह्य वस्तु नहीं है और यह व्यक्ति के मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित होती है और आत्मसंतुष्टि ही सुख की प्रमुख आधारशिला है।** आधुनिक युग में लोग वैभव के पीछे दौड़ रहे हैं और सुख और शांति पीछे छूटती चली जा रही है।

मानवीय जीवन में आत्मसंतुष्टि हासिल करने के लिए , सबसे पहले परमात्मा से संतुष्ट और अपने आपसे आत्म-संतुष्ट होना पड़ेगा , क्योंकि जिसने परमात्मा के बारे में वास्तविकता को जान लिया है, उसकी सोच ही बदल जाती है। वास्तव में, इस जीवन में संतोष ही खुशियों की कुंजी है:-- यदि मनुष्य अपने जीवन में स्वयं से संतुष्ट है, तो उसे किसी भी तरह का दु:ख या चिंता परेशान नहीं कर सकती है। **जीवन में परिश्रम से कमाया धन और उसका न्यायपूर्ण तरीके से खर्च ही मनुष्य को वास्तविक रूप में आत्मिक संतोष प्रदान करता है।** जो उपलब्ध से संतुष्ट है उसको परम-सुख मिलता है और जीवन में अधिक की चाह ही असंतोष की जड़ है। **जिस समय असंतोष की जड़ अपने पैर फैलाती है तो मनुष्य अनुचित कार्यों में फंसकर अपनी शान्ति और सुकून को खो देता है और यह असंतोष की ज्वाला उसके धैर्य और विवेक को जला कर नष्ट कर देती है।**

जीवन में संतोष ही, सबसे बड़ा धन है। लोभी व्यक्ति अपने जीवन में कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकता है, जबकि बुद्धिमान व्यक्ति की सबसे बड़ी पूंजी आत्मसंतुष्टि ही है। **संतोष परम धनम अस्ति** अर्थात सन्तोष सबसे बड़ा धन है अर्थात् जो व्यक्ति जितना ही संतोषी होगा, उतना ही अधिक सुखी और परमानंद की अनुभूति महसूस करेगा। **जीवन में अधिक हासिल करने की मनोकामना ही, लोभ को जन्म देती है और लोभ मनुष्य के अन्त:करण की सुख-शांति का ही हरण कर लेता है।** मन को संतुष्ट करने के लिए सबसे सटीक तरीका ध्यान और मेडिटेशन ही है। अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने के साथ ही उन्हें सही दिशा दे और जीवन में अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी पूर्वक तरीके से करें। जीवन में किसी भी वस्तु को पाने की इच्छा एक सामान्य प्रक्रिया है, लेकिन अगर वह अनियंत्रित हो जाए, तो ऐसी परिस्थिति में, वह बेचैनी का कारण बन जाती है। इसलिए जीवन मे संतोष को हासिल करने के लिए जो कुछ भी आपके पास है उससे ही खुश रहना चाहिए।

जीवन की वास्तविक सच्चाई भी यही है कि, महलों में रहने वाला एक अमीर व्यक्ति भी खुश नहीं रह सकता है, जबकि एक झोपड़ी में रहने वाला व्यक्ति खुश रह सकता है, क्योंकि उसने अपनी इच्छाओं का दमन कर लिया है। आत्मसंतुष्टि ही एक मनुष्य को असंतोष, भय और लालच से मुक्त करती है और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करती है। आत्मसंतुष्टि मन की एक सकारात्मक, भावनात्मक स्थिति है और आत्मसंतुष्टि के लिए धैर्य सबसे पहली सीढ़ी है। **इस तरह के सकारात्मक, सदाचारी, सद्विचार रुपी दृष्टिकोण रखने के साथ ही धैर्य, साहस और सहनशीलता भी जरूरी है। इस जीवन में, अधिक पाने की जरूरत ही इच्छाओं को जन्म देती है।**

इस जीवन में अपने सौभाग्य को याद रखना और जो नहीं मिला है, उसे भूल जाना, यही इस सुखी जीवन का मूल रहस्य है। आज कुछ लोग, सब कुछ होते हुए भी, संतुष्ट नहीं है और निरन्तर नई - नई इच्छाएं रखना ही उनके दु:ख का सबसे बड़ा कारण है। **जीवन में संतुष्टि ही एक दिशा और अपने लक्ष्यों को पाने की प्रेरणा देती है और वहीं पर, जो आपके पास है और आप जैसे हैं, उससे ही संतुष्ट रहें, तो यह सुख की पहली पहचान है।** दूसरों से कभी भी अपनी तुलना न करें और अपने जीवन के अनुभवों को ही सर्वाधिक महत्त्व दें। संतुष्ट रहना मन की एक ऐसी अवस्था है, जो व्यक्ति के भविष्य, वर्तमान और अतीत को देखने के नजरिए को ही बदल देती है। व्यक्ति को अतीत में की गई गलतियों पर विचार करने के बजाय, संतुष्टि आपको वर्तमान-क्षण और उसमें मौजूद हर वस्तु की कदर करने का मौका देती है।

इसलिए कहा गया है कि आत्म संतुष्टि के लिए अपार धैर्य, साहस और सहनशीलता की जरूरत है।

सूबेदार मेजर बी.के.रामसिंह जांगिड, रेवाड़ी

शिव जांगिड , राजकीय कालेज नारनौल में, असिस्टेंट प्रोफेसर बने।

शिक्षा जीवन का एक ऐसा मूलाधार है, जिसको आत्मसात करते हुए अपने आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प तथा समर्पण के बल पर असंभव को संभव बनाया जा सकता है और अपने दृढ़ संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने का कार्य किया है, भिवानी जिले के एक छोटे से गांव इंदीवाली, में पैदा हुए, शिव जांगिड ने। उनकी कहानी यह सिद्ध करती है कि संसाधनों की कमी कभी भी, सपनों की उड़ान को रोक नहीं सकती है और शिव ने, एक साधारण परिवार से निकलकर, असाधारण उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने, हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा पास करके, प्राणी शास्त्र में सहायक प्रोफेसर के पद पर, राजकीय कालेज नारनौल में 1 मार्च को अपनी ज्वाइनिंग दी है।

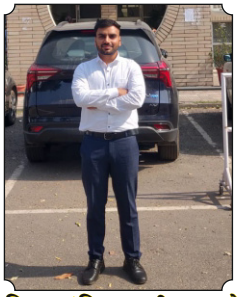

शिव जांगिड प्राणी शास्त्र में सहायक प्रोफेसर बने।

संघर्षों में जन्मी सफलता 12 अगस्त 1996, को, **शिवरात्रि के पावन दिवस पर, पिता मोहन लाल जांगिड और माता श्रीमती रामरती जांगिड के घर जन्मे, शिव जांगिड ने, बचपन से ही , संघर्षों को बहुत करीब से देखने का अवसर मिला। पिता मोहन लाल जांगिड गांव में ही एक छोटी सी किरयाने की दुकान चलाते थे,** जिससे परिवार का गुजारा बड़ी ही मुश्किल से होता था, लेकिन उसमें भी उस समय ग्रहण लग गया, जिस समय वर्ष 2014 में एक सड़क दुर्घटना में पिता जी को, गहरी शारीरिक चोट पहुंची, जिसके कारण दुकान बंद करनी पड़ी और परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी, लेकिन शिव के सपनों की उड़ान कभी भी कुंद नहीं पड़ी और हमेशा ही अपने लक्ष्य पर फोकस रखा। संघर्ष की कहानी यहीं खत्म नहीं हुई, बेटे के अरमानों को मूर्त रूप देने के लिए ही पिता ने, कर्ज लेकर बेटे की पढ़ाई जारी रखी। इतना ही नहीं इनकी माता भी, विभिन्न गंभीर बीमारियों से ग्रसित रहीं है, जिसमें सरवाईकल, बिनाईन कैंसर मुख्य हैं और परिवार का अधिकतर पैसा इन सभी, बीमारियों के इलाज में खर्च होता था। गरीब पृष्ठभूमि से आने वाले **शिव अपने परिवार के पहले , शिक्षित सदस्य फर्स्ट जनरेशन लर्नर हैं।** उनका जन्म शिवरात्रि को हुआ, इसलिए उनका नाम शिव रखा गया। शिक्षा का सफर गांव से लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय तक रहा है। शिव ने , प्राथमिक स्कूली शिक्षा अपने गांव के सरकारी स्कूल में पूरी की, लेकिन आसपास मेडिकल की पढ़ाई न होने के कारण, शिव ने अपने गांव से 20 किलोमीटर दूर, बहल कस्बे का रुख किया तथा सन् 2014 में अपनी स्कूली शिक्षा बहल से पूरी की और 12 वीं कक्षा में, बेहतर अंक हासिल किए थे इसलिए, उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय में दाखिला मिल गया। सन् 2017 में, आचार्य नरेन्द्र देव कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से , प्राणीशास्त्र में बीएससी की परीक्षा पास की और बीएससी के द्वितीय वर्ष के दौरान सिलिऐट बायलाजी पर **एक साल तक गहन शोध किया और जिसका परिणाम यह हुआ कि, एक अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल में उनका यह शोधपत्र भी प्रकाशित हुआ और यह छोटी सी उम्र में उनकी यह एक बड़ी उपलब्धि थी।**

शिव जांगिड की, ज्ञान पिपासा यही पर शांत नहीं हुई और सन् 2020 में उन्होंने किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राणीशास्त्र में एमएससी की डिग्री प्राप्त की और इसके साथ ही **एम्स दिल्ली में सरीबर्ल पालसी** नामक बीमारी पर शोध करने के लिए दो महीने की इन्टर्नशिप में भी चयन हुआ था। अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाते हुए सन् 2022 में बी.एड. पास की तथा इसके साथ ही सी टी ई टी एवं एच टी ई टी,टी जी टी एवं पी जी टी की पात्रता पाकर , शिक्षण के क्षेत्र में, अपनी मजबूत नींव रखी। उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता को 2 साल तक संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जाने वाली सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी भी की, परंतु घर की अर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए ही अगस्त 2022 में एक प्राइवेट कॉलेज में नौकरी करनी शुरू कर दी। इतना ही नहीं वर्ष 2022 में ही उनका एम्स दिल्ली में , पीएचडी में दाखिला भी हुआ था, परन्तु आर्थिक हालत आढे आ गए और 2 महीने बाद ही वहां से, ड्रॉप करके पूरी तरह से आर पी एस कालेज में शिक्षण कार्य शुरू कर दिया। लेकिन उनकी ज्ञान पिपासा यही शान्त नहीं हुई और **शिव पिछले 2.5 साल से, पार्ट टाईम माध्यम से नौकरी के साथ अभी पीएचडी कर रहे हैं और उनकी रिसर्च अभी अपने अंतिम चरणों में है।**

बिना कोचिंग, सिर्फ आत्मविश्वास शिव जांगिड ने अपने जीवन में कभी किसी कोचिंग संस्थान का सहारा नहीं लिया। केवल सेल्फ-स्टडी, सीमित संसाधन और अथक परिश्रम के दम पर, सन् 2021 में ही एस आई आर-नैट, जे आर एफ परीक्षा , ऑल इंडिया रैंक 119 के साथ उत्तीर्ण की। यह उपलब्धि किसी भी विद्यार्थी के लिए गर्व की बात है। इसके साथ ही बहुत सी पात्रता परीक्षाएं

जैसेकि एच टी ई टी , सी टी ई टी, गैट की परीक्षा भी पास की। **शिक्षण से प्रशासन तक** अगस्त 2022 से अक्टूबर 2024 तक शिव ने आरपीएस डिग्री कॉलेज, महेंद्रगढ़ में प्राणीशास्त्र के असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं दीं और अक्टूबर 2024 में उनका चयन हरियाणा सरकार में पंचायत अधिकारी के पद पर हो गया। वहां पर भी सत्य निष्ठा पूर्वक कार्य किया। लेकिन लक्ष्य अभी अधूरा था। पंचायत अधिकारी रहते हुए भी शिव ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और कठिन परिश्रम, मेहनत करते हुए अब वह हरियाणा लोक सेवा आयोग के माध्यम से प्राणी शास्त्र, में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर चयनित हुए हैं। उन्होंने अपने तथा अपने अभिभावकों के सपनों को साकार किया है। उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि **मुझे एक पटवारी के हाथों सामाजिक तिरस्कार का भी सामना करना पड़ा था और तभी मैंने संकल्प लिया था और कसम खाई थी कि भविष्य में एक दिन वह भी सरकारी सिस्टम का हिस्सा बनेंगे, पहले पंचायत अधिकारी और अब एसोसिएट प्रोफेसर बनकर भगवान की अनुकम्पा से अपना संकल्प पूरा किया है।** शिव को बचपन से हिंदी की कविताएं , लेख तथा कहानियाँ लिखते हैं, जो अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि **माता-पिता के त्याग और विश्वास ने ही मेरा हौसला बनाए रखा और इस सफलता की नींव रखी। आर्थिक तंगी, पिता की दुर्घटनाग्रस्त होना और कर्ज के बोझ के बावजूद परिवार ने अपनी जरूरतों को कम करके, मुझे आगे बढ़ने के लिए अभिप्रेरित किया और यह पूरे परिवार की तपस्या का फल है।** उन्होंने युवाओं को सफलता का मूल मंत्र देते हुए कहा कि कोचिंग जरूरी नहीं है , **बल्कि कोचिंग , जैसी लगन जरूरी है।** यदि इरादे मजबूत हों तो गांव की गलियों से निकलकर भी , राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाएं पास की जा सकती हैं। **आज कल की युवा पीढ़ी, कोचिंग के बल पर सफलता में विश्वास रखती है , परंतु वास्तव में मजबूत इरादे और लक्ष्य के प्रति मेहनत और समर्पण ही सफलता का मूल आधार बनता है।**

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, शिव जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि दादरी जिले के एक छोटे से **गांव इंदीवाली का यह युवा आज हर , उस छात्र के लिए एक प्रेरणा है, जो आर्थिक तंगी या संसाधनों की कमी को अपनी असफलता का कारण मानता है** और शिव जांगिड ने यह सिद्ध कर दिया कि , वास्तव में संघर्ष ही सफलता का सबसे बड़ा शिक्षक है। **यह कहानी सिर्फ एक युवा की नहीं है, बल्कि उस विश्वास की है कि जो, अपने सपनों को पंख देने के लिए , महंगे संसाधनों की नहीं, अपितु मजबूत हौसलों और समर्पण की भावना की जरूरत है।**

मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

उप मण्डल अधिकारी, पर्यावरण विभाग, प्रतीक जांगिड

विश्वकर्मा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन 26 अप्रैल को आयोजित की जा रही है।

महासभा प्रधान- रामपाल शर्मा

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने कहा है कि राज्य स्तरीय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता जो 26 अप्रैल 2026 को आयोजित की जा रही है और इस प्रतियोगिता में, समाज के युवाओं को अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय देने के साथ ही , प्रतिस्पर्धा के इस आधुनिक युग में अपना लक्ष्य निर्धारित करने का एक स्वर्णिम अवसर भी प्रदान होगा। इसलिए इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार 3 अप्रैल 2026 तक विश्वकर्मा युवा मित्र मण्डल की वेबसाइट पर आनलाइन आवेदन कर सकते हैं। मैं इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

निर्मल जांगिड ने 12 वीं कक्षा में चार बार फेल होकर, असिस्टेंट प्रोफेसर बन कर सफलता का परचम लहराया।

निर्मल जांगिड 5 फरवरी को हरियाणा लोक सेवा आयोग के माध्यम से, हिन्दी में एसिस्टेंट प्रोफेसर बनी।

कहते हैं कि इस जीवन में जो पुरुषार्थी, मछली की तरह अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करके अपना लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ने की जिजीविषा को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करता है, उसके जीवन में आने वाली सभी विघ्न और बाधाएं उसका , रास्ता रोकने की बजाय उसका रास्ता प्रशस्त करती है और असफलता ही सफलता की सीढ़ी बनती है, जिस पर चढ़कर वह इतिहास में अपना नाम दर्ज करवा लेती है। ऐसी ही एक साहसी आत्मविश्वासी, महत्वाकांक्षी और लक्ष्य के प्रति समर्पण भाव से कार्य करने वाली समाज की एक होनहार बेटी है, जिसने छोटी सी 17 साल की आयु में विवाह होने पर मातृत्व और शिक्षा में सामंजस्य बनाए रखते हुए, 12 वीं कक्षा में चार बार फेल होने के बावजूद भी 25 साल की साधना और अथक परिश्रम के बाद 42 साल की आयु में, अपना लक्ष्य हासिल कर लिया और हरियाणा सरकार में, राजकीय कालेज में क्लास वन अधिकारी, सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति पाकर यह सिद्ध कर दिया है कि अपने परिवार और पढ़ाई के बीच सामंजस्य बनाए रखते हुए , जीवन में किस प्रकार से आशातीत सफलता हासिल की जा सकती है।

वास्तव में, यह संघर्ष से संकल्प और संकल्प से सिद्धि की कहानी है, निर्मल जांगिड की, जिनका जन्म 31 जुलाई 1984 को गांव मंगाली , जिला हिसार, पिता रामपाल जांगिड और माता श्रीमती रामबाई जांगिड के घर हुआ। पारंपरिक परिस्थितियों के कारण , चार भाई - बहनों में सबसे बड़ी होने के कारण उनके, माता-पिता ने उनका विवाह केवल 17 वर्ष की आयु में ही 10 अप्रैल 2001 को , गांव राखीगढ़ी, जिला हिसार के, राकेश जांगिड के साथ कर दिया गया और जिस समय उनका विवाह हुआ, उस समय वह 12वीं कक्षा में, विज्ञान संकाय में मेडिकल की छात्रा थी और विवाह के दौरान बोर्ड की परीक्षाएं चल रही थी और दुर्भाग्यवश वह अपनी प्रैक्टिकल की परीक्षा नहीं दे पाई थी और 12वीं कक्षा में फेल हो गई। लेकिन इस असफलता ने उसको झकझोर कर रख दिया और सन् 2002 में दोबारा प्रयास किया लेकिन संयोगवश बड़े बेटे शुभम का जन्म होने के कारण , फिर भी वह परीक्षा नहीं दे पाई और पुनः 2003 में फिर प्रयास किया और इस बार,फिजिक्स के पेपर में कंपार्टमेंट आया और वर्ष 2004 में फिर प्रयास किया और विज्ञान संकाय, मेडिकल में 12 वीं की परीक्षा पास की और इससे एक हौसला बढ़ा और अपने भविष्य की, परिकल्पना करनी शुरू कर दी।

निर्मल जांगिड ने भावुक और भाव-विह्वल होते हुए कहा कि, जिस दिन मैं 12 वीं कक्षा में चौथे प्रयास में पास हुई तो, **मुझे अहसास हुआ कि भगवान मेरी परीक्षा ले रहा था और उस दिन मुझे लगा कि मुझे ईश्वर की प्राप्ति हो गई है और जो मुझे अपना भविष्य अंधकारमय लग रहा था, अब मुझे आशा की एक नई किरण दिखाई दी,** और मुझे अहसास हुआ कि विवाह और संतान प्राप्ति के कारण मेरी जो, पढ़ाई खत्म हो गई है, उसमें एक नई आशा का संचार हुआ और 4 वर्ष के बाद 12 वीं की परीक्षा, विज्ञान संकाय में ही, पास करने की जिद और सकारात्मक सोच ने, मुझे यह अहसास करवा दिया कि , सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए **उमर की कोई भी सीमा नहीं होती है और इसी दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास ने मुझे सदैव ही आगे बढ़ने के लिए अभिप्रेरित किया और मेरे अन्तर्मन ने एक आवाज दी कि , अगर मैं चाहूं तो, कितना भी समय लगे अपने सपनों को पंख लगाकर, उस उड़ान को पूरा कर सकती हूँ और फिर इसके बाद मैने कभी भी पीछे मुड़कर के नहीं देखा और आज इसका परिणाम सामने है।**

निर्मल जांगिड ने , अपने सफर को जारी रखते हुए सन् 2007 में स्नातक, सन् 2009 में पीजीडीसीए कोर्स, सन् 2011 में एम एस सी कंप्यूटर साइंस, सन् 2013 में अंग्रेजी परास्नातक सन् 2015 बी एड कोर्स, सन् 2017 में हिंदी परास्नातक और जून 2021 में, नेट की परीक्षा, एच टी ई टी,सी टी ई टी सहित सभी परीक्षाएं पास की और निरंतर राज्य सरकार और केंद्रीय विद्यालय की भर्तियों के लिए तैयारी करती रही और सन् 2009 में पीजीडीसीए कोर्स करते ही, **सरकारी स्कूल में अस्थाई कंप्यूटर टीचर के नियुक्त हो गई और सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि 120 रुपए प्रतिदिन की इस नौकरी ने मुझे यह सिखला दिया कि, जीवन में, इस प्रकार का, नौकरी में शोषण न हो, मेरे अंदर एक जुनून भर दिया** कि बहुत कुछ हासिल करने के लिए अनेक तरह असफलताओं का सामना भी करना पड़ता है और एक दो जगह प्रयास भी किए गए लेकिन निराशा ही हाथ लगी।

उन्होंने वेदना पूर्ण शब्दों में अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि असफलता भीतर से तोड़ देती है और उस असफलता के बाद, नए संकल्प को साकार करने के लिए, दोबारा से , इस संघर्ष की, फिर नए सिरे से शुरुआत दोगुने जोश और जुनून के साथ ही करनी पड़ती है और अपने सपनों को पूरा करने के लिए, फिर से प्रयास शुरू कर देती और **मुझे अहसास होने लगा था कि सफलता प्राय: एकान्त में, आपका सम्मान करती है, जबकि असफलता भरे बाजार में, आपको थप्पड़ मारती है।** यही कारण है कि सामाजिक ताने-बाने के कारण ही, बहुत सारे आक्षेप -कटाक्ष सहन करने पड़े **कि बच्चे बड़े हो गए हैं अभी भी परीक्षाएं दे रही हैं इसका कुछ नहीं होगा, लेकिन मेरा खुद पर विश्वास और भगवान पर भरोसा ही था, जिसने मुझे आशा की किरणों से बांधे रखा** और यही कारण था कि मेरा विश्वास इस सफर में कभी भी नहीं डगमगाया।

निर्मल जांगिड ने अपनी वेदना को सांझा करते हुए कहा कि सन् 2023 में चंडीगढ़ प्रशासन में, पीजीटी भर्ती में सिलेक्शन हुआ उम्र 40 होने की वजह से चंडीगढ़ प्रशासन ने, आरक्षण देने से मना कर दिया और अन्ततः मुझे निराशा ही हाथ लगी, जबकि हरियाणा में नौकरी लगने की आयु 45 वर्ष तक है। लेकिन भाग्य में लिखे हुए कौन मिटा सकता है और मेरे भाग्य में, सहायक प्रोफेसर बनना लिखा हुआ था, इसलिए थोड़े ही दिन बाद, असिस्टेंट प्रोफेसर की भर्ती निकली और परमात्मा की अनुकम्पा और दिन रात परिश्रम करके इस संघर्ष के अंतिम प्रयास में बहुत मेहनत की और बहुत अच्छे अंकों से मैंने असिस्टेंट प्रोफेसर की परीक्षा में, अंतिम रूप से चयन हुआ और जो संघर्ष 25 सालों से चल रहा था उस पर विजय हासिल करके समाज का नाम गौरवान्वित किया है।

उन्होंने कहा कि इस लम्बे संघर्ष में, मेरे माता-पिता मेरे भाई बहन के सहयोग के साथ ही , सबसे बड़ा सहयोग और समर्थन तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा,मेरे जीवन साथी, राकेश कुमार जांगिड से मिली है , जिन्होंने हर असफलता के बाद, मुझे दोबारा खड़े होने का साहस, हिम्मत और ढांढस बंधाया और एक 17 वर्ष की लड़की जो, अपना घर बार छोड़कर आती है और 12वीं में चार - चार बार फेल होती है और उसकी भावनाओं को समझते हुए, पूरा साथ देते हैं और 25 वर्षों तक पढ़ाई का सारा खर्च उठाया और इसके साथ ही दोनों बेटे शुभम और संयम को भी पढ़ाई के साथ-साथ उनका भी मार्ग दर्शन किया और इतना ही आज भी वह अपने बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे हैं और अन्त में, मैं केवल इतना ही कहना चाहती हूँ कि भगवान का आशीर्वाद और मेरे पति परमेश्वर और परिवार के अनन्य सहयोग और आत्मविश्वास ने ही, मुझे अपनी कल्पनाओं को मूर्त रुप देने का सुअवसर प्रदान किया। इसके लिए परमपिता परमात्मा का हृदय के अन्तःकरण से आभार व्यक्त करती हूँ।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने निर्मल जांगिड को उसकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि , मैं, निर्मल जांगिड के असिस्टेंट प्रोफेसर बनने पर बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। वह संघर्ष की एक जीवन्त मिसाल है, जिसने विकट से विकट परिस्थितियों का सामना करते हुए भी , अपने जज्बे, हौसले और आत्मविश्वास को कम नहीं होने दिया और उसी के बल पर ही सफलता हासिल की है। **दूसरे युवाओं को उनसे यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि, लक्ष्य को हासिल करने में असफलता कोई भी बाधा नहीं है, अपितु असफलता ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है।** मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

सम्पादक, राम भगत शर्मा

श्रद्धांजलि सुमन

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि शामली जिले के पूर्व जिला अध्यक्ष महासभा, **श्री शिवदत्त जांगिड जी** का आकस्मिक स्वर्गवास 18/02/2026 को हो गया है।

जिनकी श्रद्धांजलि सभा दिनांक 01/03/2026 को देव गार्डन, माजरा रोड, शामली में रखी गई , जिसमे समाज बन्धुओं, रिश्तेदारों व परिवारजनों ने इनकी श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित होकर दिवंगत आत्मा की तस्वीर के समक्ष श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

स्वर्गीय श्री शिवदत्त जांगिड जी एक सरल स्वभाव मिलनसार, हंसमुख व्यक्तित्व के धनी थे।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली तथा समस्त कार्यकारणी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में उचित स्थान दे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्रीचरणों में श्रद्धासुमन और भावपूर्ण श्रद्धाजंलि अर्पित करते हैं।

॥ ॐशान्ति ॐशान्ति, ॐशान्ति॥

पूर्व महामंत्री महासभा, चंद्रपाल भारद्वाज

अंधेरों को चीरकर निकली डोभी की, निशा बनीं असिस्टेंट प्रोफेसर।

हिम्मत और आत्मविश्वास रुपी हथियार से , उन अंधेरों को चीर, अपने उज्ज्वल भविष्य की नींव रखने वाली, निशा ने, अपने दृढ़ संकल्प , इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास और समर्पण की भावना से ओत-प्रोत होकर पुरुषार्थ करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करके, एक इतिहास रचा है, हरियाणा के हिसार जिले के गांव डोभी की , एक छोटी सी ढाणी में रहने वाली, निशा सुथार ने, जहाँ रास्ते खत्म होते हैं, वहां से , कर्तव्य निष्ठा और समर्पण की भावना से शिक्षा के प्रति अपने प्रेम के सफर की शुरूआत की और इस डोभी गांव की सीमा से दूर बसी एक छोटी सी ढाणी, जहाँ पर आज के इस आधुनिक युग में, भी बिजली और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है और फिर भी निशा जैसे, परिवारों के बच्चे आज भी अपना भविष्य यही पर रह कर तलाशते हैं और सफलता की नई कहानी लिखते हैं।

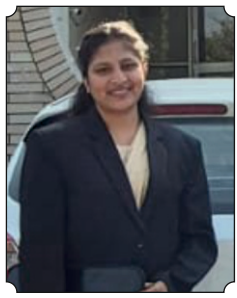

निशा सुथार फरवरी में हरियाणा लोक सेवा आयोग के माध्यम से, इतिहास में एसिस्टेंट प्रोफेसर बनी

गांव से दूर इस ढाणी में, आज भी सूरज ढलने के साथ यहां का जीवन, ठहर सा जाता है। लेकिन इसी अंधेरे और अभावों के बीच से समाज का, एक सितारा निकाला, जिसकी चकाचौंध के सामने, शहरी लोगों के सपने बोने पड़ गए और यह कहानी है, उत्कट जिजीविषा की द्योतक और प्रतिभा की धनी उस **निशा सुथार की , जिसने अपनी बुद्धिमत्ता और दक्षता से यह सिद्ध कर दिया कि , सफलता का रास्ता , आलीशान कोचिंग सेंटरों या शहरों की सुविधाओं से होकर नहीं, बल्कि मजबूत इरादों , दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास की दीवारो पर चढ़कर ही हासिल किया जा सकता है ।** पिता बलविंदर सुथार और माँ श्रीमती बाला देवी सुथार के घर 16 अगस्त 2002 को एक लक्ष्मी ने जन्म लिया और माता- पिता को धन्य कर दिया।

उल्लेखनीय है कि **महज 23 साल की उम्र में , निशा सुथार, अपने पहले ही प्रयास में, हरियाणा लोक सेवा आयोग के माध्यम से इतिहास विषय में असिस्टेंट प्रोफेसर' के पद पर चयनित हुई है और कॉलेज कैडर में इतनी कम उम्र में, राजपत्रित अधिकारी बनना भी , अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। निशा का यह सफर डोभी गांव की उन कच्ची पगडंडियों से गुजरते हुए शुरू हुआ था, जहाँ बारिश के दिनों में चलना भी दूभर हो जाता है और अन्त में, एक सुखद परिणीति के रूप में समाप्त हुआ है** और निशा सुथार का मानना है कि इस सफलता के पीछे उनके माता-पिता द्वारा दिए गए बेहतर संस्कार और उनका आशीर्वाद तथा भगवान की विशद अनुकम्पा ही रही है। निशा की प्रारम्भिक शिक्षा पास के गांव तेलनवाली के शान्ति निकेतन हाई स्कूल में हुई , जहां पर हर रोज उसे 5 किलोमीटर का रास्ता पैदल तय करना पड़ता था और वहां से शिक्षा की जो, लौ जली थी, वह डोभी के सरकारी स्कूल में आकर और अधिक प्रज्ज्वलित, प्रखर और देदीप्यमान हो गई और गांव के स्कूल से 10 वीं कक्षा सन 2017 में 90 प्रतिशत अंक और 12वीं कक्षा में 98 प्रतिशत अंक हासिल करके, न केवल अपने स्कूल, बल्कि पूरे जिले में अपनी तीक्ष्ण मेधा का लोहा मनवाया था। इसके बाद उन्होंने राजकीय कॉलेज हिसार से सन् 2021 में 80 प्रतिशत अंक के साथ स्नातक की डिग्री और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय , कुरुक्षेत्र से इतिहास में सन् 2023 में 85 प्रतिशत अंक हासिल करके स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की है और तीन बार जे आर एफ की परीक्षा पास की।

निशा ने भावुक होते हुए अपनी सफलता के बारे में बताते हुए कहा कि, इस सफलता की नींव में, उनके बड़े भाई सचिन की प्रेरणा और बड़ा योगदान भी रहा है। उन्होंने कहा कि सचिन की कहानी भी , किसी चमत्कार से कम नहीं है। सचिन ने महज **एक साल के भीतर 5 अलग-अलग सरकारी परीक्षाओं को पास करके एक ऐसा, रिकॉर्ड बनाया था, जिसे तोड़ पाना किसी भी, युवा के लिए एक बड़ी चुनौती है। भाई की इस निरंतर सफलता ने ही मुझ में, वह संकल्प और आत्मविश्वास पैदा किया कि वह भी, अपने सपनों के शिखर को उड़ान देखकर उनको छू सकती है।** डोभी की जिन ढाणियों में हमारा परिवार रहता है, वहां पर पक्की सड़क और बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है और इन धूल भरे रास्तों को पार कर , हर रोज स्कूल और कॉलेज पहुँचना ही मेरी दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

निशा के पिता बलविंदर सुथार ने कहा कि, **मैं एक कारपैन्टर का कार्य करता हूँ और मुझे गर्व है कि मेरी बेटी ने हमारा मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया। उन्होंने कहा कि यह स्वाभाविक ही है, कि हमारे पास संसाधनों की कमी थी और घर का गुजारा भी मुश्किल से होता था और किसी बड़े कोचिंग संस्थान की फीस देने के पैसे भी नहीं थे** और मेरी बेटी ने इन सभी परिस्थितियों को समझते हुए ही , केवल सेल्फ-स्टडी और सीमित किताबों के भरोसे ही , इतनी बड़ी परीक्षाओं को क्रैक करना, इस बात का द्योतक है कि **"जहाँ चाह, वहां राह"** है और इसी फार्मूले को आत्मसात करते हुए ही निशा ने, पुरुषार्थ किया और जिसका

भगवान ने उसको फल भी दिया है।

निशा की माँ , श्रीमती बाला देवी सुथार ने कहा कि बेटी निशा का पढ़ाई के प्रति अटूट समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण ही , उसकी सफलता का कारण बना है। **उन्होंने निसंकोच भाव से कहा कि हमने अपनी जरूरतों को कम किया, लेकिन अपनी बेटी को, कभी भी आर्थिक तंगी या सुविधाओं की कमी को कभी भी आड़े नहीं आने दिया। हमने अपनी मेहनत की कमाई का एक-एक पैसा बच्चों की किताबों और उनकी शिक्षा पर ही खर्च किया** और आज उनकी बेटी असिस्टेंट प्रोफेसर बन गई है, यह उनकी वर्षों की तपस्या का प्रतिफल है। उन्होंने बड़े गर्व के साथ कहा कि **आज हरियाणा के युवाओं और बेटियों के लिए भाई-बहन की जोड़ी, युवाओं के लिए रोल मॉडल है, जो संसाधनों की कमी का रोना रोते हैं और अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। निशा की सफलता विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र की उन बेटियों के लिए एक ज्वलंत मिसाल है, जो घर की चारदीवारी से निकलकर आसमान छूना चाहती हैं।**

निशा सुथार का मानना है कि **सुविधाएं आपको आराम दे सकती हैं, लेकिन काबिलियत और जीवन में निर्धारित लक्ष्य हासिल करने की उत्कट अभिलाषा को हासिल करने का जज्बा तो के केवल आत्मविश्वास और संघर्ष ही देता है। अगर आपके पास पक्की छत और बिजली नहीं है, तो समझ लीजिए कि आपके पास मेहनत करने की वजह और भी ज्यादा बड़ी है।** मेरा मानना हैं कि , सफलता केवल शहरों की बपौती नहीं है, बल्कि डोभी की ढाणियों से निकला वह उजियारा भी हो सकता है जो अपनी आभा की किरणों को चारों तरफ बिखेर कर एक संदेश दे रहा है कि, मेहनत और पुरुषार्थ की दीवारें, शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में भेदभाव नहीं करती हैं। उन्होंने कहा कि **वह भविष्य में आई ए एस बन कर समाज और देश की सेवा करना चाहती है।** इसके लिए तैयारी शुरू कर दी गई है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, निशा सुथार को एसिस्टेंट प्रोफेसर बनने पर बधाई देते हुए कहा कि उसने अपने बुलन्द हौसलों और दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास के बल पर यह सिद्ध कर दिया कि चुनौतियां कितनी भी कठिन और रास्ते में कितनी ही बाधाएं आए, उनको संकल्प और उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हासिल किया जा सकता है। मुझे विश्वास है कि वह भविष्य में एम फिल और पी एच डी की डिग्री हासिल करते हुए, समाज के युवाओं का मार्ग दर्शन करेंगी।

मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

सम्पादक, राम भगत शर्मा।

बानसुर तहसील अध्यक्ष दयानन्द जांगिड बने।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा की सोच बड़ी ही सकारात्मक है कि, समाज में आपसी भाईचारा, एकता और सामाजिक सद्भाव बना रहे हैं और इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ही महासभा के अन्तर्गत, सभी प्रदेश अध्यक्षों के चुनाव सन् 2025 में निर्विरोध रुप से सम्पन्न करवाए गए और इसका बहुत ही बेहतरीन संदेश इस समाज में गया और इस प्रक्रिया को अधिकतम जिलों और तहसील स्तर पर भी लागू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी प्रकार का प्रयास अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के अन्तर्गत आने वाले, जिला कोटपुतली बहरोड़ की, बानसुर तहसील अध्यक्ष का चुनाव 8 मार्च को निर्वाचन अधिकारी महेंद्र जांगिड की देख-रेख में निर्विरोध रुप से सम्पन्न हुआ।

निर्विरोध रुप से 8 मार्च को, बानसुर तहसील अध्यक्ष, दयानंद जांगिड बने

चुनाव अधिकारी महेंद्र जांगिड और हनुमान प्रसाद जांगिड ने बताया कि , इस तहसील अध्यक्ष के चुनाव में केवल मात्र एक ही नामांकन पत्र दाखिल किया गया था और इसीलिए सर्वसम्मति से ही दयानंद शर्मा को बानसुर तहसील अध्यक्ष बनाया गया है। उन्होंने, दयानंद शर्मा को पद एवं गोपनीयता की शपथ भी दिलवाई और उसके बेहतर कार्यकाल की मनस्कामना की है।

इस अवसर की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, डॉ मनोज, हनुमान प्रसाद जांगिड, मुकेश जांगिड, सुरेन्द्र जांगिड, घनश्याम, रामशरण, गंगा दीन, किशोरी लाल, एडवोकेट विजय कुमार सहित समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शामिल थे।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने , बानसुर तहसील अध्यक्ष दयानंद जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि, जिस प्रकार से समाज के लोगों ने उन पर विश्वास व्यक्त करते हुए, निर्विरोध निर्वाचित किया है, इससे उनका समाज के प्रति दायित्व और अधिक बढ़ गया है। मुझे विश्वास है कि वह लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं पर खरा उतरते हुए , समाज में आपसी एकता और भाईचारे का शंखनाद करेंगे। मैं उनके स्वर्णिम कार्यकाल की अपेक्षा रखता हूँ।

कोटपुतली - बहरोड़ जिला, महामंत्री सत्य प्रकाश जांगिड।

यश जांगिड अन्तर्राष्ट्रीय बार एसोसिएशन में क्षेत्रीय सम्पर्क अधिकारी बने।

इस जीवन में किसी भी क्षेत्र में आशातीत सफलता हासिल करने का एक ही मूल मंत्र है और वह मूल मंत्र है, अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण और उदात्त और सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए आगे बढ़ना और ऐसे ही एक युवा अधिवक्ता जोधपुर राजस्थान के रहने वाले, यश जांगिड हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ के बल पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। इसलिए कहा गया है कि इतिहास के पन्ने अक्सर सामान्य स्याही से नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्पों, उत्कट जिजीविषा और आत्मविश्वास से लिखे जाते हैं और अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ के बल पर यह सिद्ध करके दिखलाया है, जोधपुर राजस्थान के रहने वाले यश जांगिड ने, जो अन्तर्राष्ट्रीय बार एसोसिएशन में, राजस्थान प्रदेश से बनने वाले पहले क्षेत्रीय सम्पर्क अधिकारी हैं। यह कहावत यहां पर **सही चरितार्थ होती है कि प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं है।**

जोधपुर के यश जांगिड को, फरवरी में एशिया पेसिफिक रीजनल लायजन आफिसर नियुक्त किया गया है।

यश जांगिड ने कहा कि 12 वर्ष की अल्पायु में, जब बच्चे खेल-कूद में व्यस्त रहते हैं, उस समय जोधपुर का एक अबोध बालक, अपनी सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में भारत के भाग्य-विधाताओं को खोज रहा था और उन्होंने पढ़ा कि महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल और डॉ बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर जैसे महानायकों में, सभी में लगभग एक ही समानता थी और वह समानता यह थी कि सभी 'विधिवेत्ता' वकील थे। उसी क्षण उस बालक के मन में , यह विचार अंकुरित हुआ कि यदि **राष्ट्र के मानचित्र पर अपनी विशेष पहचान बनानी है और अमिट छाप छोड़नी है, तो उस दिशा में अग्रसर होने के लिए न्याय की भाषा और कानून का सर्वाधिक और सटीक ज्ञान अनिवार्य है और वह बालक कोई और नहीं, बल्कि मैं ही था।**

संस्कार और शैक्षणिक मेधा का महासंगम यश जांगिड का मानना है कि उनको बेहतर संस्कार और जीवन में अपने कर्त्तव्य के प्रति समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण की भावना अपने माता-पिता से ही मिली है। यश जांगिड का जन्म, 9 जून 1998 को, प्रसिद्ध फोटोग्राफर एवं व्यवसायी धर्मेन्द्र जांगिड और श्रीमती किरण जांगिड के घर हुआ और उनको संस्कार, सृजन और अनुशासन के गुण विरासत में माता - पिता से ही मिले हैं। उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता और प्रतिभा का प्रथम प्रमाण स्कूली शिक्षा में दिखाई दिया और सदैव ही कक्षा में सर्वश्रेष्ठ अंक हासिल करते रहे और इसके पश्चात, **यश जांगिड ने, सेंट्रल एकेडमी, जोधपुर से वाणिज्य वर्ग में अपनी मेधा का लोहा मनवाते हुए अकाउंटेंसी में 95 प्रतिशत और बिजनेस स्टडीज में 93 प्रतिशत और इकोनॉमिक्स में 91 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। यह केवल अंक नहीं थे, बल्कि उस सूक्ष्म और विश्लेषणात्मक मस्तिष्क की एक पहचान भी थी, जो आगे चलकर जटिल अंतर्राष्ट्रीय संधियों को सुलझाने वाला था।**

SOAS यूनिवर्सिटी, लंदन में स्थित तमिल कवि तिरुवल्लुवर की प्रतिमा जिसके पुनरुद्धार के लिए यश जांगिड ने आवाज उठाई।

पुणे का कालखंड: सिद्धांतों की कसौटी सन् 2017 में यश ने, न्यू लॉ कालेज भारती विद्यापीठ से बी बी ए और एल एल बी के लिए प्रवेश लिया और यही वह जगह थी, जहां पर उसे कानून की बारीकियों के बारे में केवल पढ़ा ही नहीं, बल्कि **उन्हें अपने अन्त:करण में उतारकर उनके साथ जीने का स्तुत्य प्रयास किया और उनकी इस रणनीति का परिणाम यह हुआ कि वह 2022 में अपनी शिक्षा पूर्ण करते-करते, एक कुशल रणनीतिकार के रूप में अपनी पहचान बना चुके थे।**

संकट में सेवा का संकल्प: एक मानवीय दृष्टिकोण वह कोविड के भयावह कालखण्ड को याद करते हुए भावुक हो गए और उन्होंने कहा कि वर्ष 2020-21 में, कोविड-19 की लहर ने पूरे देश को अपनी चपेट में लिया था, उस समय भी यश ने, समाज और मानवता की भावना से अभिप्रेरित होकर "करुणा वॉलंटियर्स प्रोग्राम" की स्थापना की और 15 से अधिक युवाओं की एक टीम गठित करके, इस टीम ने 1- अस्पतालों में बेड एवं जीवनरक्षक दवाओं की व्यवस्था 2- प्लाज्मा एवं रक्तदान के लिए संगठित नेटवर्क की स्थापना 3- प्रशासन और जनता के बीच समन्वय स्थापित किया और प्रभावित लोगों की यथा सम्भव सहायता की गई और उनकी इसी अद्वितीय 'अकादमिक और सामाजिक उपलब्धि' के संगम को पहचानते हुए ही उन्हें **राजीव गांधी स्कॉलरशिप फॉर अकादमिक एक्सीलेंस" अवार्ड प्रदान किया गया।**

लंदन अध्याय: वैश्विक पटल पर भारतीय मेधा यश जांगिड ने **सन् 2022 में क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन में कामर्शियल एण्ड कोरकोरेट में विशेषज्ञता के साथ एल एल एम की डीग्री हासिल की और डिस्टिंक्शन, सर्वोत्कृष्टता प्राप्त की।** उन्होंने कहा कि इसके साथ ही वैश्विक नेतृत्व और अकादमिक हस्तक्षेप के आइडिया फार हूमनिटी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अन्तर्गत शिक्षा का समावेश और इवोलविंग एजुकेशन नायक शीर्षक से **एआई शिखर सम्मेलन का आयोजन, क्वीन मैरी विधार्थी परिषद के साथ किया गया था, जहां पर मुझे बहुत कुछ सीखने के साथ ही, अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ।** यश ने बताया कि उन्होंने इसके बाद लंदन में, भारतीय उच्चायोग में जाकर समन्वय मंत्री , दीपक चौधरी से मुलाकात करके भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम लिखे गए इस पत्र को दीपक चौधरी को सौंपा गया।

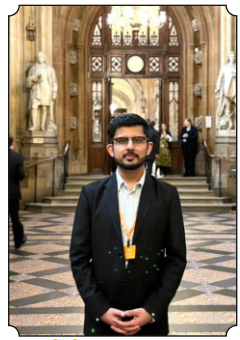

ब्रिटिश संसद, लंदन

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान और पेशेवर उत्कृष्टता यश जांगिड ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय बार एसोसिएशन द्वारा उनको वर्ष 2025 के लिए अकेडमिक एण्ड प्रोफेशनल डिवेलपमेंट स्कालरशिप' प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त उन्होंने टोरंटो (कनाडा) में अन्तर्राष्ट्रीय बार एसोसिएशन के वार्षिक सम्मेलन में भी प्रतिनिधित्व करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि उन्होंने यूके की बार परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण की हैं। उन्होंने कहा कि उनकी यह यात्रा संघर्ष पूर्ण रही है और इसी संघर्ष से प्रेरणा लेकर यहां तक पहुंचें हैं। **अब उनको फरवरी 2026 में, अन्तर्राष्ट्रीय बार (अधिवक्ता) एसोसिएशन की एकाडमिक एण्ड प्रो डिवेलपमेंट कमेटी में ऐशिया पैसेफिक रीजनल लायजन आफिसर नियुक्त किया गया है।**

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने यश जांगिड को उसकी इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि, उनकी **यह संघर्ष पूर्ण यात्रा , समाज के दूसरे युवाओं के लिए एक अनूठी मिसाल है कि एक सामान्य परिवार में पैदा हुए, इस युवा अधिवक्ता की इस यात्रा की गूंज लंदन की गलियों से होते हुए, सत्ता के केंद्रों और वैश्विक विधिक मंचों तक पहुँच चुकी है।** उन्होंने कहा कि यश जांगिड की यह कहानी यह सिद्ध करती है कि जिस समय ज्ञान और साहस आपस में मिलते हैं, तो, एक नए इतिहास की रचना होती है और इतिहास स्वयं को ही दोहराता है। समाज को आज ऐसे ही युवा अधिवक्ताओं की आवश्यकता है, जो कानून की भाषा में न्याय की नई परिभाषा लिख सकें।

सम्पादक, राम भगत शर्मा

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के जन्मोत्सव पर बधाई

महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, जिन्होंने मानवता को आध्यात्मिकता का मार्ग प्रशस्त करने के साथ ही, अपने उदात्त आचरण , नैतिक मूल्यों और संस्कारों के माध्यम से उच्च आदर्श स्थापित किए और यह महान् आदर्श, युग - युगों से , मानवता का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं और मार्गदर्शन करते रहेंगे।

आधुनिक युग में मानव को, अपने जीवन का कल्याण करने के लिए भगवान श्री राम ने जो, भाई का भाई के प्रति अनन्य स्नेह, माता-पिता और गुरु की आज्ञा का पालन और मधुर दाम्पत्य जीवन, भक्ति और त्याग का जो अनूठा उदाहरण समाज के, सामने प्रस्तुत किया है, उनको आत्मसात करते हुए समाज के सामने एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। भगवान श्री राम का जन्म चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को हुआ था।

इसकी चौपाई इस प्रकार से है - **नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता।।**
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा।।

अर्थात **पवित्र चैत्र का महीना था, नवमी तिथि थी। शुक्ल पक्ष और भगवान का प्रिय अभिजित मुहूर्त था। दोपहर का 12 बजे का समय था। और वह पवित्र समय सब लोकों को शांति देनेवाला था।** इसी समय भगवान श्री राम का अयोध्या में, अवतरण हुआ था। मानव जीवन सार्थक करने के लिए ही , भगवान श्री राम द्वारा प्रतिपादित आदर्शों को आत्मसात करना चाहिए।

******

पंकज जांगिड हरियाणा शिक्षा विभाग में, हिन्दी में एसिस्टेंट प्रोफेसर बने।

इस जीवन में एक कहावत बड़ी ही प्रसिद्ध है कि, इस जीवन में सफलता हासिल करने के लिए, सफलता हासिल करने की इच्छा, असफल होने के भय और आंशका से अधिक होनी चाहिए तभी आशातीत सफलता हासिल हो सकती है और इस फार्मूले को आत्मसात करते हुए ही, पंकज जांगिड ने विज्ञान की पढ़ाई से हिन्दी विषय की और अग्रसर होते हुए ही, आज अपने लक्ष्य में सफलता हासिल की है और उसके इस सही फैसले और उचित निर्णय का ही परिणाम है और अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ के बल पर ही, यह सिद्ध करके दिखलाया है गांव बड़वा , तहसील सिवानी और जिला भिवानी के रहने वाले एक मध्यमवर्गीय परिवार में पैदा हुए पंकज जांगिड ने, जिन्होंने हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की गई परीक्षा के 5 जनवरी को घोषित परिणाम में, हिंदी के अस्सिटेंट प्रोफेसर पद पर शिक्षा विभाग में नियुक्ति पाकर, जांगिड ब्राह्मण समाज को गौरवान्वित किया है। पंकज जांगिड पर यह पंक्तियां बड़ी ही सटीक बैठती हैं कि ----

पंकज जांगिड, हरियाणा लोक सेवा आयोग के द्वारा घोषित परिणाम में हरियाणा शिक्षा विभाग में एसिस्टेंट प्रोफेसर बने।

"हमारी राह से पत्थर उठा कर फेंक मत देना
लगी हैं ठोकरें तब जा के चलना सीख पाए हैं"!

पंकज जांगिड का मानना है कि जो **सफलता का जो आइना है , उसको हासिल करने के लिए संघर्ष और अनुभवों की धीमी आंच पर पकाना जरूरी होता है और यह सफलता मुझे, अपने अनुभवों और संघर्ष के सफर के परिणाम स्वरूप ही हासिल हुई है।** भिवानी जिले के एक छोटे से गांव बड़वा में, पिता रोहताश जांगिड और माता श्रीमती रोशनी देवी के घर 5 दिसम्बर 1996 को पैदा हुए। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा, टैगोर सीनियर सेकेंडरी स्कूल से हासिल की है और 10वीं कक्षा में, 92 प्रतिशत और 12 वीं कक्षा में 93 प्रतिशत अंक हासिल करके, अपनी बहुआयामी प्रतिभा का परिचय दिया और आसपास बेहतर शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध न होने के कारण ही , नान मैडीकल में ग्रेजुएशन, दिल्ली यूनिवर्सिटी के रामजस कॉलेज से वर्ष 2018 में 71 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की और उसके पश्चात सन् 2021 में बैचलर ऑफ एजुकेशन की डिग्री हासिल की तथा सन् 2022-2024 में सेठ मेघराज जिन्दल राजकीय कालेज सिवानी, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय भिवानी से पास की और कालेज में प्रोफेसर बनने का सपना संजोया और जिसको मूर्त रूप देने में दो वर्ष का समय लग गया।

अपने बारे में, स्पष्ट और सटीक निर्णय लेने का उल्लेख करते हुए , पंकज जांगिड ने भावुक होते हुए कहा कि, **विज्ञान से हिन्दी विषय की और अग्रसर होने का निर्णय, उनके जीवन का वह अनमोल क्षण था, जहां मुझे अपने भविष्य के बारे में उचित निर्णय लेना था और मैंने सभी के विरोध के बावजूद अपनी आत्मा की आवाज पर निर्णय लेते हुए आगे बढ़ने का निर्णय लिया और वह निर्णय , अन्त में, सही साबित हुआ और वह निर्णय हिंदी भाषा में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करने का था।** विज्ञान से साहित्य की यात्रा करने का मेरा फैसला उस समय मेरे परिवार के अधिकतर शुभचिंतकों को पसंद नहीं आया। **लेकिन मैंने भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने वालों युवाओं से सुना था कि, उन्होंने इंजीनियरिंग की परीक्षा पास करने के बावजूद भी समाज शास्त्र और राजनैतिक विज्ञान जैसे विषयों को चुना और सर्वश्रेष्ठ अंक हासिल किए।** मुझे अपने व्यक्तित्व के साथ न्याय करना था , इसलिए मैंने **अपने अन्त:करण की आवाज पर ही निर्णय लिया था और साहित्य के कारण ही, मैंने यह मुकाम हासिल किया है जिसकी बदौलत ही मेरी छोटी सी कल्पना की यह कहानी अक्षरों में मूर्त लेकर आज साकार हुई है।**

पंकज जांगिड के पिता रोहिताश जांगिड ने भावुक होते हुए कहा कि, हालांकि मैं इस बात को सहज रूप से स्वीकार करता हूँ कि मैं हरियाणा पशुपालन डेयरी विभाग से खंड पशुधन विस्तार अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुआ हूँ , **लेकिन मेरे सपने बड़े थे और मैं अन्य माता-पिता की तरह चाहता था कि मेरे बच्चे भी उच्च पदों पर पहुंचे और इसके लिए हमने, अपने सपनों का गला घोंटकर बेटे को, दिल्ली के रामजस कॉलेज में दाखिला दिलवाया और मेरी बेटी मोनिका जांगिड ने**

समाज शास्त्र में स्नातकोत्तर और एम एड की डिग्री हासिल की है और वही दूसरी बेटी निर्मला जांगिड, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय हिसार से, केमिस्ट्री में, पी एच डी कर रही है। इस संघर्ष के दौरान जीवन में कई बार ऐसे अवसर भी आए कि , **अपने बच्चों की जरुरतों को पूरा करने के लिए, हमें अपने अरमानों का गला भी घोंटना पड़ा, लेकिन उसमें भी हमें सन्तोष मिलता था।**

पंकज जांगिड ने कहा कि गरीबी रेखा से ऊपर उठने के लिए, जो संघर्ष एक पीढ़ी को करना पड़ता है वह मेरे पिताजी ने किया है और उनकी इस अथक मेहनत , पुरुषार्थ, लगन और सामाजिक मूल्यों ने ही, आर्थिक और सामाजिक तौर पर परिवार को समर्थ बनाया और सभी को उच्च दिलाने का संकल्प लिया। हालांकि आज हम मध्यमवर्गीय परिवार में आते हैं, **लेकिन पिता जी ने, अपने बच्चों को आर्थिक तंगी भी कभी भी महसूस नहीं होने दी और सबसे बड़ी पूंजी माता जी द्वारा दिए गए वह उदात्त संस्कार हैं , जिन्होंने हमें फ़िज़ूल खर्ची से बचाया।** उन्होंने कहा कि हालांकि **मैने अपने 21वें जन्मदिवस पर सरकारी नौकरी की तैयारी शुरू की थी , लेकिन अपनी मनपसंद नौकरी को पाने में मुझे 8 साल का समय लग गया** और इन 8 सालों में जिस समस्या का मैने सामना किया वह था - मानसिक दबाव। माता पिता के सपनों को पूरा करने का , समाज के बनाए गए सफलता के नियमों को पूरा करने का , साथ वाले दोस्तों की नौकरी लगने का दबाव, बेरोजगारी का दबाव , रिश्तेदारों के कटाक्षों का दबाव और वह सभी दबाव हैं, जिन्हें **आज के युग में सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाले प्रत्येक अभ्यार्थी महसूस करता है और इस प्रकार के दबाव का कोई भी अंत नहीं है, जिनका सिर्फ एक ही समाधान है वह समाधान है, भरोसा और प्रेम, जो मुझे मेरे माता पिता, बहनों और दोस्तों से मिला।** इस सबंल के आधार पर ही मैं आगे बढ़ा हूँ।

अपनी सफलता की कहानी का उल्लेख करते हुए पंकज जांगिड ने बताया कि , **उन्होंने सन् 2022 में सरकारी नौकरियों के लिए पहली बार पेपर देने शुरू कर दिए थे और हर बार निराशा और असफलता ही हाथ लगती रही और जिसका परिणाम यह हुआ कि इस निराशा ने मेरे जीवन की मस्ती व हंसी को खत्म सा कर दिया था।** मैं समझता हूँ कि इस प्रकार के अनुभवों से सिर्फ मुझे ही नहीं गुजरना पड़ा है, अपितु अधिकतर अभ्यर्थियों को , इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। **इसलिए मेरा सभी उन सभी अभिभावकों से विनम्र अनुरोध है कि वह तैयारी करने वाले अपने बच्चों पर भरोसा बनाए रखते हुए उन्हें, निराशा के क्षणों प्रोत्साहित करें और अभ्यर्थी भी स्वयं पर भरोसा रखें और दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास तथा मजबूती के साथ तैयारी करें ।** यह तैयारी जीवन की तैयारी है । सफलता का पैमाना सिर्फ कोई सरकारी नौकरी नहीं होती है। सफलता का एक ही नियम है और मैं अपनी इस यात्रा से यह जान पाया हूँ और वह है - निरंतरता आत्मविश्वास तथा निर्धारित लक्ष्य की और कछुए की चाल से चलते रहना यही सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

पंकज जांगिड की माँ श्रीमती रोशनी देवी जांगिड ने, अपने बेटे की इस उपलब्धि का उल्लेख करते हुए कहा कि, इसी यात्रा के दौरान पंकज ने अनेक शैक्षणिक परीक्षाएं भी पास की और अन्त में , पंकज ने हरियाणा सरकार में ग्रुप बी की सरकारी नौकरी अपनी योग्यता के आधार पर हासिल की है और मैं तो समझती हूँ कि हरियाणा सरकार में , अपनी योग्यता के आधार पर यह चयन मेरे परिवार के लिए एक अमृत्व औषधि के समकक्ष है।

अंत में, मैं समाज के बच्चों को यही कहना चाहती हूँ कि अपने बच्चों पर भरोसा रखते हुए उन्हें आगे बढ़ने के लिए अभिप्रेरित करें और अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए अपना 100 प्रतिशत दे और फल की चिंता भगवान पर छोड़ दें।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने , पंकज जांगिड को एसिस्टेंट प्रोफेसर बनने पर बधाई देते हुए कहा कि, जीवन में सफलता का एक ही मूल मंत्र है और वह है कि अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने के लिए समर्पित और समर्पण भाव से कार्य करते हुए और अपने फैसले पर अडिग रहते हुए आगे बढ़ना और पंकज जांगिड ने इसी मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए ही अपना लक्ष्य हासिल किया है और उसने जांगिड ब्राह्मण समाज का नाम गौरवान्वित किया है। मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

****

सम्पादक , राम भगत शर्मा

डॉ अनुपमा शर्मा ने पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में पी एच डी की डिग्री हासिल की है।

जीवन में आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प ऐसे दो अचूक मूल मंत्र हैं, जिनका पालन करने से रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं और कठिनाइयों का सामना करते हुए सहज रूप से ही सफलता हासिल की जा सकती है और इस उक्ति को अपने अथक परिश्रम और पुरुषार्थ तथा अनन्य साधना से सिद्ध करके दिखलाया है असीम प्रतिभा की धनी प्रोफेसर डॉ अनुपमा शर्मा ने, उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से न केवल पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में पी एच डी की डिग्री हासिल की है, अपितु अपनी असाधारण योग्यता और क्षमता के आधार पर, इस जांगिड समाज की बेटी ने, विद्या अध्ययन के दौरान भी अनेक पुरस्कार हासिल करके जांगिड समाज का नाम गौरवान्वित किया है। प्रोफ़ेसर डॉ अनिल शर्मा और श्रीमती सुनीता शर्मा के घर पैदा हुई। उन्होंने अपने नाम के अनुसार ही पढ़ाई के साथ गतिविधियों में भाग लेकर अनेक पुरस्कार स्वर्ण पदक हासिल करके अपनी बहुआयामी असीम प्रतिभा का परिचय दिया है।

चंडीगढ़ में, आयोजित पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के 73 वें दीक्षांत समारोह में, अनुपमा शर्मा को, पीएचडी की डिग्री, मुख्य अतिथि और अध्यक्ष, पंजाब के राज्यपाल और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक, गुलाब चंद कटारिया की उपस्थिति में, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ की कुलपति प्रोफेसर रेणु विज व रजिस्ट्रार प्रोफ़ेसर वाई. पी. वर्मा द्वारा प्रदान की गई है और वर्तमान में वह वनस्थली विद्यापीठ वनस्थली राजस्थान में, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है।

डॉ अनुपमा शर्मा ने कहा कि उनकी पीएचडी का थीसिस, कल्चर, सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड सस्टेनेबल सिटीज, ए केस स्टडी ऑफ वाराणसी सिटी, उत्तर प्रदेश, इंडिया था। मैंने यह पी एच डी की डिग्री, पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के लोक प्रशासन विभाग से हासिल की है। उन्होंने कहा कि माता-पिता ने मुझे बेहतर संस्कार दिए और बेहतर मार्गदर्शन किया है और **यही कारण है कि मुझे वर्ष 2015 में बी. ए. ऑनर्स में भी पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से स्वर्ण पदक प्राप्त किया था और इतना ही नहीं मुझे, एम. ए. पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन में 2017 में भी पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से स्वर्ण पदक प्राप्त किया था।** उन्होंने कहा कि **मेरी अभिरुचि पढ़ाई के साथ साथ ही संगीत में भी रही है और मैंने, संगीत विशारद और संगीत प्रभाकर में प्रथम श्रेणी में पास की हैं।** और इसके साथ ही मेरी सितार वादन में भी विशेष दिलचस्पी है।

अनुपमा शर्मा के पिता , प्रोफेसर डॉ अनिल शर्मा ने बताया कि, **अनुपमा शर्मा को सन् 2016 में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा युवा स्कॉलरशिप अवॉर्ड 2016 दिया गया था और इसी प्रकार सन् 2022 में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद , शिक्षा मंत्रालय द्वारा डाकटोरल फेलोशिप 2022 भी प्राप्त हुआ है।** इतना ही नहीं उसकी विख्यात प्रतिभा यही नहीं रुकी उनको, रोल ऑफ ऑनर शिक्षा और संगीत, बेस्ट ऑल राउंड स्टूडेंट् अवार्ड, स्वर रत्न अवॉर्ड, सहित कई संस्थाओं से अवॉर्ड भी मिल चुका है। उनकी माँ श्रीमती सुनीता शर्मा ने कहा कि **हमें अपनी बेटी पर गर्व है, जिन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देते हुए न, केवल माता - पिता का नाम गौरवान्वित किया है, अपितु जांगिड समाज का नाम भी गौरवान्वित किया है।**

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, डॉ अनुपमा शर्मा को ,उसकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए और पंजाब विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की डीग्री हासिल होने पर हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि , जिस प्रकार से उसने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ संगीत और गायन प्रतियोगिताओं में भी, **स्वर्ण पदक और स्वर रत्न** जैसा प्रतिष्ठित पुरस्कार, हासिल किए हैं, जो उसकी असाधारण दक्षता और तीव्र बुद्धिमता का परिचायक है। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

सम्पादक , राम भगत शर्मा

श्री विश्वकर्मा जांगिड समाज सेवा समिति पाली के चुनाव में मोहनलाल सुथार निर्विरोध अध्यक्ष बने।

समाजहित की भावना से अभिप्रेरित होकर ही, इस प्रकार की समितियों का गठन समाज हित को ध्यान में रखते हुए ही किया जाता है ताकि जरूरत के समय समाज और किसी परिवार की सहायता की जा सके और इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ही, समाज के लोगों ने मिलकर सन् 1968 में पाली में, श्री विश्वकर्मा जांगिड समाज सेवा समिति का गठन किया था और इसके पहले अध्यक्ष रीतमा नन्द जांगिड को बनाया गया था और पिछले 58 वर्षों से यह समिति निरन्तर समाज सेवा के कार्यों को शिरोधार्य करते हुए अपना दायित्व भली भांति निर्वहन कर रही है। इसके द्वारा एक छात्रावास का भी निर्माण किया गया है, जिसमें समाज के गरीब बच्चे शिक्षा ग्रहण करके अपना भविष्य उज्ज्वल बना रहे हैं।

मोहन लाल सुथार 5 मार्च को विश्वकर्मा जांगिड सेवा समिति के अध्यक्ष बने।

इस समिति के प्रचार मंत्री घेवर चन्द आर्य ने , बताया कि पाली के विश्वकर्मा जांगिड समाज सेवा समिति के चुनाव 5 मार्च को, चुनाव अधिकारी चम्पालाल नागल, बंशीवाल पाखरवड, चम्पा लाल जैपालिया, गणेश किंजा तथा दिनेश जांगिड की देखरेख में, श्री विश्वकर्मा जांगिड समाज भवन, वीर दुर्गादास नगर पाली में समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में निर्विरोध रुप से सम्पन्न हुए। मुख्य चुनाव अधिकारी चम्पालाल नागल ने बताया कि 5 मार्च को समाज की और से इस समिति के चुनाव सम्पन्न करवाने का दायित्व उनको सौंपा गया था और इस जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए ही, इस समिति के चुनाव 5 मार्च को शांति पूर्ण और सौहार्द पूर्ण वातावरण में सम्पन्न करवाए गए । उल्लेखनीय है कि अध्यक्ष रामचंद्र पेडवाल का दो वर्ष का कार्यकाल10 मार्च को पूरा हो रहा है।

इस समिति का , मोहनलाल सुथार, मंत्री ओमप्रकाश जांगिड और अमरचंद शर्मा को कोषाध्यक्ष बनाया गया है, क्योंकि इन सभी पदों के लिए एक-एक आवेदन ही प्राप्त हुआ था और इसलिए सर्वसम्मति से मोहनलाल सुथार को अध्यक्ष , शेषाराम पाखरवड, एवं मदनलाल झलुडिया को उपाध्यक्ष, ओमप्रकाश जांगिड को मंत्री, जब्बरमल जांगिड को उपमंत्री, अमरचंद शर्मा को कोषाध्यक्ष, घीसूलाल सुथार को सह कोषाध्यक्ष, वरिष्ठ पत्रकार घेवरचन्द आर्य को प्रचार मंत्री, एवं ऋषिराज त्रिपाठी को संगठन मंत्री निर्वाचित घोषित किया गया। इसके साथ ही समाज के अन्य लोगों की इसमें सहभागिता को सुनिश्चित करने के लिए चम्पालाल जैपालिया, मोहनलाल देवाण, भंवरलाल सायल, भूराराम छडिया, अशोक किंजा, ढलाराम ओस्तवाल, राजेन्द्र जोपिंग, चन्द्रप्रकाश सिघानिया, प्रकाश पिडवा, भुण्डाराय सायल, मदन लाल वाणेचा एवं गोर्धन लाल सायल को कार्यकारिणी का सदस्य बनाया गया है।

इस चुनाव उत्सव की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, **भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी और समाज सेवा की प्रतिमूर्ति दिनेश सारंग,** महान शिक्षाविद सुरेश तिराणीया, रामदयाल किंजा, ओमप्रकाश कुलरिया, कन्हैयालाल मांकड़, पूनाराम सायल, अमृतलाल कुलरिया, गोर्धन लाल किंजा गंगाराम जैपालियां, मदनलाल वाणेचा, रामेश्वर लाल चवलेरा, सायरनीर त्रिपाठी, भूराराम छड़ियां, विवेक जीलोया, प्रदीप बेगड, दीपक झालुडिया, मोतीलाल दायमा, गजेन्द्र किंजा, एडवोकेट विनोद जोपिग और हनुमान जांगिड शामिल हैं।

घेवरचन्द आर्य ,पाली

जांगिड अतिथि भवन , रतनगढ़ की नई कार्यकारिणी का 6 मार्च को गठन।

जांगिड समाज में ऐसी अनेक धर्मशालाएं और भवन हैं, जो समाज की अमूल्य धरोहर हैं और इस प्रकार की अधिकतर संस्थाओं का गठन समाज के सभी के सहयोग और समर्थन से ही होता है और इसका सबसे बड़ा ज्वलंत उदाहरण, देश की राजधानी दिल्ली, मुण्डका में बनाया गया, महासभा का वह भव्य भवन है, **जिसकी नींव महासभा के पूर्व प्रधान कैलाश बरनेला ने रखी थी और वर्तमान प्रधान रामपाल शर्मा के कार्यकाल में , सभी दानदाताओं और भामाशाहों के सहयोग से इस भवन का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ और यह समाज को समर्पित किया गया। ऐसे ही रतनगढ़ में जांगिड अतिथि भवन है** जो आपसी सौहार्द और समरसता का सजीव प्रतीक है। इस सामाजिक धरोहर के लिए सन् 2006 में जमीन खरीदी गई थी और इस जमीन की खरीद में, प्रमुख रूप से 8 व्यक्तियों का सहयोग रहा , जिनमें शंकर लाल दाढ़ीवाल, जगदीश प्रसाद दाढ़ीवाल, लिखमीचंद काला , मदनलाल धामू , श्रीमती केसर देवी, मदनलाल काला और हरीश कुमार बरवड़िया शामिल हैं।

जांगिड अतिथि भवन, रतनगढ़ के अध्यक्ष और कार्यकारिणी का 6 मार्च को, समाज के महानुभावों द्वारा सम्मान किया गया।

ओमप्रकाश जांगिड ने बताया कि , इस भवन की देखरेख और संचालन के लिए एक समिति बनाई गई है, जिसके वर्तमान में, अध्यक्ष जगदीश प्रसाद दाढ़ीवाल हैं और सचिव बजरंग लाल धामू और कोषाध्यक्ष लिखमीचंद काला हैं। **लेकिन इस समिति का कार्यकाल पूरा होने पर, अब 6 मार्च को आम सभा की बैठक हुई, जिसमें, नई कार्यकारिणी का निर्विरोध रुप से गठन किया गया है और इस समिति का अध्यक्ष , सुखराम राजोतिया , सचिव संजय कुमार बरवाडिया और कोषाध्यक्ष लिखमीचंद काला को बनाया गया है।** निवर्तमान अध्यक्ष जगदीश प्रसाद दाढ़ीवाला ने, नई कार्यकारिणी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए ,भावुक होते हुए कहा कि नई कार्यकारिणी को हर सम्भव सहयोग प्रदान किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि यह **जांगिड अतिथि भवन** समाज की एक अमूल्य धरोहर है, जो लगभग 50 लाख रुपए की लागत से बनाया गया है और वातानुकूलित इस भवन में सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं और भविष्य में सभी के सहयोग से, समाज द्वारा इसकी ऊपरी मंज़िल बनाने का भरसक प्रयास किया जाएगा ताकि, लोगों को और अधिक बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। चुरू जिले के रतनगढ़ तहसील में , इस भवन के अलावा दो और अन्य ऐतिहासिक धरोहर भी हैं , पहला होली धोरा पर, ऐतिहासिक एवं भव्य भगवान श्री विश्वकर्मा का मंदिर बना हुआ है और **आंथुना मोहल्ले में दूसरा जांगिड समाज भवन** बना हुआ है और इन दोनों भवनों में लोगों की ठहरने की उचित सुविधा उपलब्ध करवाई गई है।

संरक्षक ओम प्रकाश जांगिड ने , नवनियुक्त अध्यक्ष का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया और हार्दिक बधाई देते हुए , नई कार्यकारिणी के सदस्यों को सफल कार्यकाल की बधाई दी । **नवनियुक्त अध्यक्ष सुखराम राजोतिया ने, सभी का हृदय के अन्त:करण से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि, जो दायित्व समाज द्वारा उनको सौंपा गया है , वह उसको पूर्ण निष्ठा व लग्न के साथ पूरा करने का हर सम्भव प्रयास करेंगे।** इस अवसर को द्विगुणित करने वालों में, प्राचार्य बजरंग लाल धनु , जगदीश प्रसाद दाढ़ीवाला, शंकर लाल दाढ़ीवाल ओमप्रकाश बरवाडिया, संजय कुमार बरवाडिया, विनोद कुमार बोदलिया, विनोद कुमार, बेगराज मिशन, लिखमीचंद काला सहित भारी संख्या में समाज हितेषी सदस्य उपस्थित थे।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी, ओमप्रकाश जांगिड, रतनगढ़

माया देवी जांगिड नीमराना तहसील अध्यक्ष बनी।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के अन्तर्गत नीमराना, तहसील अध्यक्ष का चुनाव 7 मार्च को, बड़े ही सौहार्द पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। जांगिड समाज की एक बैठक 7 मार्च को तहसील अध्यक्ष के पद का चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए आयोजित की गई, जिसमें माया देवी जांगिड धर्मपत्नी सत्य प्रकाश जांगिड को, निर्विरोध रूप से नीमराना तहसील अध्यक्ष चुना गया है। महासभा के इतिहास में शायद यह पहली बार है , कि अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की तहसील इकाई में किसी महिला को पहली बार अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी दी गई है।

8 मार्च को हुए नीमराना तहसील अध्यक्ष के चुनाव में, माया देवी जांगिड को निर्विरोध रुप से अध्यक्ष बनाया गया है।

कोट पुतली-बहरोड जिला सभा के महामंत्री सत्य प्रकाश जांगिड ने बताया कि जिला अध्यक्ष, नेकी राम जांगिड की अनुशंसा पर ही , चुनाव अधिकारी राजेन्द्र प्रसाद और घनश्याम शर्मा ने पूरी चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी तरीके से संपन्न करवाने में, अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और इनकी भूरि - भूरि प्रशंसा भी की गई।

चुनाव अधिकारी राजेंद्र प्रसाद जांगिड और धनश्याम शर्मा ने बताया कि तहसील अध्यक्ष के चुनाव के लिए कुल चार प्रत्याशियों ने , अपने नामांकन पत्र दाखिल किए थे, लेकिन बाद में तीन प्रत्याशियों ने अपने नामांकन वापस ले लिए और इसके बाद माया देवी जांगिड के निर्विरोध रुप से निर्वाचित होने का रास्ता प्रशस्त हो गया और विधिवत रूप रूप से माया देवी जांगिड को, नीमराना तहसील अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया।इस अवसर पर **नवनिर्वाचित तहसील अध्यक्ष माया देवी जांगिड ने कहा कि समाज ने मुझे जो दायित्व सौंपा है और विश्वास व्यक्त किया है, उस जिम्मेदारी का निर्वहन मैं , बड़ी ही सत्य निष्ठा और ईमानदारी से पूरा करने का प्रयास करुंगी।**

इस अवसर की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष कैलाश चंद जांगिड , गजेंद्र, मालाराम, किशोरी लाल, महावीर प्रसाद, सत्यनारायण, किरोड़ीमल, जगदीश प्रसाद, शेर सिंह, पप्पू , प्रकाश चंद, मुकेश जांगिड, रविंद्र कुमार , अंगद कुमार, संदीप कुमार, जयप्रकाश, सुनील कुमार, योगेन्द्र और अक्षय कुमार सहित समाज के अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव शामिल थे। जिन्होंने इस समारोह की शोभा बढ़ाते हुए , समाज में आपसी सहयोग और सामाजिक सौहार्द का संदेश दिया।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, मायादेवी जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि आज, जिस प्रकार से महिलाएं राजनीति सहित सभी क्षेत्रों में आगे आ रही है, वह हमारे समाज के लिए एक शुभ संकेत है। उन्होंने मायादेवी जांगिड के मंगलमय कार्यकाल की मनोकामना करते हुए समाज सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया है।

कोटपुतली -बहरोड़ जिला अध्यक्ष नेकीराम जांगिड

(जीवन में सज्जनता के लक्षण)

जीवन में एक मनुष्य के व्यवहार की वास्तविक परख उसके , आचरण और सज्जनता से ही होती है। जिस समय एक व्यक्ति दूसरों के द्वारा प्रतिकूल व्यवहार और आचरण करने पर भी अपनी मर्यादा और सज्जनता को काबु रखता है तो , इसी आचरण का नाम सज्जनता है। जिस समय किसी भी सामान्य से सामान्य व्यक्ति का सम्मान और सत्कार किया जाए तो, वह सहज और स्वाभाविक रूप से प्रसन्न हो उठता है और इसी प्रकार का प्रोत्साहन मिलने पर वह सामने वाले को, मुस्करा कर धन्यवाद देना है और यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन किसी के द्वारा अभद्र और अशोभनीय व्यवहार करने पर भी वह आक्रोशित और असहज नहीं होता है, अपितु सहजता को बनाए रखता है और वास्तव में यही एक सज्जन और उदात्त दृष्टिकोण तथा सज्जनता से परिपूर्ण व्यक्ति का लक्षण है।

जो व्यक्ति दूसरों से परेशान त्रस्त और प्रताड़ित होने पर भी, सरलता और विनम्रतापूर्वक सभी कुछ सहन करते हुए उसके प्रति मंगल का भाव रखे और वास्तव में यही एक सज्जन पुरुष के लक्षण हैं और यही सज्जनता है। सज्जन का अर्थ , सम्मानित व्यक्ति नहीं है,अपितु सम्मान की इच्छा से रहित व्यक्तित्व है। जो सदैव शीलता और प्रेमरुपी आभूषणों से सुसज्जित है, वही सज्जन है। जो प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहे और दूसरों को भी प्रसन्न रखने का भाव रखे वही सज्जन पुरुष हैं और सज्जनता के भी वास्तविक यही लक्षण हैं।

पश्चिम बंगाल प्रदेश सभा द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा प्रदेश सभा पश्चिम बंगाल एवं जिला सभा कोलकाता के संयुक्त तत्वाधान में, पश्चिम बंगाल में जांगिड ब्राह्मण समाज द्वारा होली स्नेह मिलन का कार्यक्रम, गरिमा एवं भव्यता के साथ 28 फरवरी को आयोजित किया गया। समारोह का आयोजन अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा प्रदेश सभा पश्चिम बंगाल एवं जिला सभा कोलकाता ने संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इसमें फतेहपुर शेखावाटी की प्रसिद्ध ढप मंडली के साथ होली के मस्ती भरे संगीत, गीत, धमाल आदि गाते हुए, नृत्य करते हुए रंग बिरंगी पोशाकों में बड़ा सुंदर दृश्य बिखेर रहे थे। सबने एक दूसरे को होली की बधाई देते हुए, होली के रंगों की तरह ही अपने जीवन में, उमंग एवं ऊर्जा के साथ अपने जीवन में रंग बिखरने के साथ ही, एक दूसरे को आपसी प्रेम और सद्भावना के साथ जीने का सकारात्मक संदेश भी दिया गया।

पश्चिम बंगाल प्रदेश सभा के अध्यक्ष, प्रभु दयाल बरवाड़िया एवं जिला सभा कोलकाता के अध्यक्ष जगदीश राजोतिया एवं उनकी कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए भरपूर मेहनत और अथक परिश्रम किया और समाज को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पश्चिम बंगाल के इतिहास में महासभा के बैनर नीचे आयोजित किया गया यह पहला कार्यक्रम, अपनी अमिट छाप छोड़ने में सफल रहा।

इस कार्यक्रम में मातृ शक्ति भी भारी संख्या में उपस्थित रही और बच्चों ने भी डांस के साथ फागोत्सव में भरपूर मस्ती के साथ आनन्द लिया। इस समारोह का संचालन ब्रह्मदत्त बरवाड़िया ने किया।

राधेश्याम मांडण, प्रवक्ता महासभा दिल्ली

मकराना के भगवान विश्वकर्मा मन्दिर में फागोत्सव मनाया गया।

मकराना के भगवान विश्वकर्मा के मन्दिर में, होली मिलन समारोह और फागोत्सव उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें समाज में एकता और भाईचारे तथा आपसी सौहार्द का संदेश दिया गया। विश्वकर्मा मन्दिर मकराना के अध्यक्ष, किस्तूर चन्द जांगिड ने बताया कि, इस कार्यक्रम के दौरान महिलाओं द्वारा होली और भागोत्सव और समाज उत्थान से, सम्बंधित मधुर गीतों और भजनों के माध्यम से समाज में , एकजुटता कायम रखने का संदेश भी दिया गया और भारी संख्या में उपस्थित महिलाओं ने, गुलाल व फूलो की होली खेलकर, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आपसी सामाजिक सद्भाव का संदेश दिया।

इस शानदार होली मिलन समारोह में, महिला प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष ममता सिलक, विश्वकर्मा महिला मण्डल की अध्यक्ष प्रेमलता डेरोलिया, मनभरी बोदलिया, संगीता बोदलिया, बेबी लाली रोहिलीवाल, नैना जाला, उर्मिला धामू , चंदा जांगिड, मुन्नी रोहिलीवाल, सीमा बोदलिया, दीपा रोहिलीवाल, गीता चोखड़ा और पलक रोहिलीवाल सहित , युवाओं और बच्चों ने इस उत्सव का आनंद लिया।

मकराना वेदप्रकाश जांगिड

सीकर में होली स्नेह मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा जिला सभा सीकर एवं श्री विश्वकर्मा कल्याण समिति सीकर के संयुक्त तत्वाधान में 8 मार्च को सीकर में होली स्नेह मिलन समारोह संपन्न हुआ , जिसमें समाज के सैकड़ो प्रबुद्धजनों और मातृशक्ति तथा युवाओं ने भाग लेकर एक दूसरे को होली की बधाई देकर भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सजीव और जीवंत किया और भगवान श्री विश्वकर्मा से प्रार्थना की गई कि रंगों के इस त्योहार होली की तरह ही, सभी आपस में मिलकर, समाज की सुख समृद्धि केलिए एक दूसरे का सहयोग करें।

इस मनोहारी दिन को अविस्मरणीय बनाने के लिए, सामाजिक चर्चा के दौरान वक्ताओं ने समाज में परिव्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने के साथ ही, बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करने एवं बेहतर संस्कार देने तथा मोबाइल की लत एवं नशाखोरी से युवा पीढ़ी को दूर करने तथा शादी विवाह में फिजूल खर्ची और दिखावे से दूर रहने, प्रीवेडिंग एवं समाज में व्याप्त आटा - साटा जैसी कुरीतियों और जन्मदिन व एनिवर्सरी के नाम से फिजूलखर्ची जैसी नई कुरीतियों पर समाज में रोक लगाने के लिए विशेष तौर से अपील की गई। इस पर आम सहमति बनाने के लिए एक अभियान चलाने की भी पुरजोर वकालत की गई।

इन वक्ताओं में , मुख्यतः महामंत्री के महामंत्री सांवरमल, राजस्थान प्रदेश प्रभारी हरिनारायण, जिला सीकर के महामंत्री, सांवरमल लदोया, विश्वनाथ पनलावा, पूर्व आचार्य बाबूलाल, पूर्व ब्लाक विकास अधिकारी बद्रीप्रसाद, मदनलाल एंव रामकृपाल लालासी, सुरेश खेड़ी राड़ान शामिल थे।

सीकर जिला महामंत्री सांवरमल लदोया ने, महासभा की सदस्यता बढ़ाने के साथ - साथ अप्रैल माह में राजस्थान में आयोजित होने वाली कक्षा 6 से 12 तक के बच्चों के लिये सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में सीकर जिले से बच्चों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने की अभिभावकों से अपील की।

इस समारोह की अध्यक्षता जांगिड रत्न शंकरलाल लदोया ने की और मुख्य अतिथि महामंत्री महासभा सांवरमल जांगिड रहे। सीकर जिला अध्यक्ष बनवारी लाल खंडेलसर एवं कल्याण समिति अध्यक्ष रामकृपाल जांगिड लालासी एवं सांवरमल लदोया ने आगंतुक मेहमानों एवं अतिथियों का गुलाल लगाकर और दुपट्टा पहना कर स्वागत किया और होली की बधाई दी।!

इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी गंगाधर गोडिया, भंवर लाल सुटोट एवं महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती संतोष जांगिड, शिवदयाल भादवासी, बोदू दिनारपुरा, जगदीश, सीताराम मुंडवाड़ा, जगदीश कुड़ली, राजेंद्र जांगिड, डॉ अजय जांगिड, सुनील जांगिड पलसाना, मोहन जैतूसर, बलराज लक्ष्मणगढ़, भींवाराम कोलीड़ा, नन्दलाल ढांढण, बनवारीलाल लदोया सहित भारी संख्या में समाज बंधु एवं मातृ शक्ति तथा युवा उपस्थित रहे। मंच का संचालन राधेश्याम मांडण ने किया।

राधेश्याम मांडण, सीकर

कविता

नारी शक्ति की महिमा को पहचानों इसकी महिमा है अपरम्पार ।
इस शुभ दिवस की, अनन्त महिमा, हार्दिक बधाई है बारम्बार।।

युगों-युगों से है नारी की , पहचान जगत में इसकी महिमा है महान।
नारी की छवि धूमिल न हो, इसकी कोमलता और महिमा है महान।।

नारी की इस कोमलता और सरलता ने इसे, विश्व में महान बनाया है।
नारी शक्ति के रूप में ही माँ लक्ष्मी, पार्वती , दुर्गा ने सम्मान बढ़ाया है।।

सभी तीर्थों के समान है नारी इसके आंचल में है दूध और आंखों में पानी।
राष्ट्र के निर्माण की धरोहर है , प्रतिस्पर्धा के युग में , यही इसकी कहानी।।

सभी गमों को वह सहन करके , वेदना और पीड़ा अपने भीतर छुपाती है।
अपने बच्चों को, ममत्व की छांव देकर अपने भाग्य पर सदैव इठलाती है।।

भगवान की अनुपम देन है , नारी सहृदयता सदैव, इसी तरह से, बनी रहे।
अपने बच्चों को , गुणवान और चरित्रवान बनाने की छवि, सदैव बनी रहे।।

जग में सर्व गुणों से सम्पन्न है, माता स्वरूपा नारी , इसकी महिमा है न्यारी।
पूजा की थाली से ही, आरती उतारती है, तो लगती है, इसकी शोभा न्यारी।।

नारी दुःख-सुख में भी, साथ निभाती है, और घर को भी, स्वर्ग बनाती है।
माता बहन बेटी, पत्नी और सास बनकर वह सदैव अपना फ़र्ज़ निभाती है।।

नारी शक्ति के बिना विकास की, परिकल्पना और सृजन भी अभी अधूरा है।
भक्ति भाव की प्रतिमूर्ति है वह नारी, इसके बिना सारा संसार भी अधूरा है।।

नारी में वह शक्ति है, जो प्रशासन चलाने सहित, विभिन्न रोल निभा पाती है।
जरूरत पड़ने पर, वह काली का रूप धारण करके शीश काट ले जाती है।।

देश में राष्ट्रीय महिला दिवस पर, 13 फरवरी को नारी का सम्मान बढ़ाया है।
यह दिवस तभी सार्थक है ,जब मातृशक्ति ने पुरुषों का, सम्मान बढ़ाया है।।

अनुसुइया शर्मा, शास्त्री गुरुग्राम

पत्रिका में, ज्ञानवर्धक लेख और विज्ञापन भेजने के बारे में ।

नववर्ष के दौरान आपका जीवन, सुखद, मंगलमय हो तथा यह सुख - समृद्धि और सफलता की नई इबारत लिखने वाला हो और सभी नववर्ष सब प्रकार की खुशियों से परिपूर्ण और जाज्वलयमान तथा प्रकाशमान हो और नववर्ष के दौरान , जीवन के लिए निर्धारित लक्ष्य हासिल करने के साथ - साथ आपकी प्रतिष्ठा में चहुंमुखी अभिवृद्धि हो और सर्वेश्वर परमात्मा भगवान प्रभू की असीम अनुकम्पा आप और आपके परिवार पर सदैव ही इसी प्रकार से बनी रहे , ऐसी मेरी मनस्कामना है।

इसके साथ ही समाज की प्रतिष्ठित पत्रिका जो अपने प्रकाशन के 119 वें वर्ष में प्रवेश कर गई है और **इस महायज्ञ में समाज के अनेक प्रबुद्ध लेखकों , कवियों और साहित्यकारों ने , इस पत्रिका की गरिमा को चार चांद लगाने के अपने सतत प्रयास जारी रखें तथा समाज हितेषी बंन्धुओ ने, अपने लेख, प्रतिभाओं का विवरण, विज्ञापन और समाज के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के बारे में समुचित जानकारी उपलब्ध करवाकर, इस पत्रिका की गरिमा को समृद्ध बनाने के साथ ही, इसे पाठकों के लिए रुचिकर बनाने में भी अपना भरपूर सहयोग दिया है।** इसके लिए मैं आप सभी का हृदय के अन्तःकरण की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ।

अतः मेरा समाज के सभी सम्मानित बुद्धिजीवियों और विद्वानों से करबद्ध विनम्रता पूर्वक निवेदन है कि अपने समाज हितेषी और सामाजिक सरोकारों से सम्बंधित लेख और समाज के महापुरुषों के बारे में तथ्यात्मक आलेख, शिक्षाप्रद कहानियां, आदि महासभा के व्हाट्सएप नम्बर- **9990070023**, संपादक जी के व्हाट्सएप नम्बर- **9814681741** या महासभा की **E-mail:** jangid.mahasabha@gmail.com पर भेजकर, इस महायज्ञ में अपनी आहुति डालने का स्तुत्य प्रयास करें और इसमें सहभागिता सुनिश्चित करते हुए, **समाज उपयोगी आलेख, और वैवाहिक विज्ञापन तथा अपने प्रतिष्ठान को लोकप्रिय बनाने वाले विज्ञापन इस पत्रिका में भेज कर अनुग्रहित करें।** महासभा परिवार के सदस्यों का भरपूर सहयोग और समर्थन ही, असली ताकत है, इससे पत्रिका के प्रकाशन में आपकी सहभागिता सुनिश्चित हो सकेगी।

मेरा जांगिड पत्रिका के, सभी सम्मानित पाठकों से नम्र निवेदन है कि अपना आशीर्वाद और स्नेह इस पत्रिका के प्रति इसी प्रकार से सदैव ही बनाए रखते हुए , इसको इसी प्रकार से भविष्य में भी लोकप्रिय बनाए रखने में अपना भरपूर स्नेह और आशीर्वाद प्रदान करते रहे और मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आपका अनन्य स्नेह, प्रेम और प्यार भविष्य में भी इसी प्रकार से मिलता रहेगा। आपका विपुल धन्यवाद।

सम्पादक ,रामभगत शर्मा

***

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला, (इन्दौर)

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली

श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर

श्री पी.एल.शास्त्री, गुड़गांव

श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली

श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली

श्री राजेन्द्र शर्मा, इन्दौर

श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर

श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली

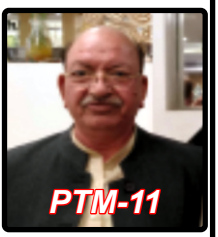

श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली

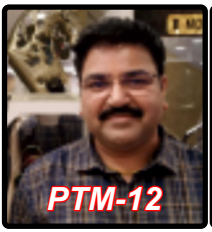

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली

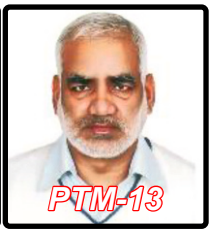

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली

श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई

श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव

श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता

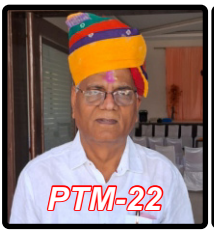

श्री सांवरमल जांगिड, सीकर

श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली

श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास

श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर

श्री ललित जड़वाल, अजमेर

श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई

श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर

श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन

श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव

श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव

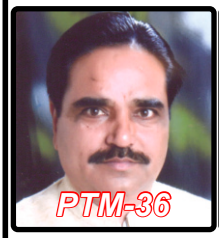

श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव

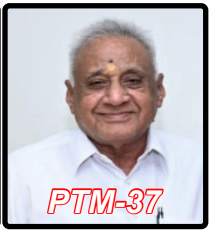

श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर

श्री किशोर जी मोखा, नागपुर

श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद

श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली

श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली

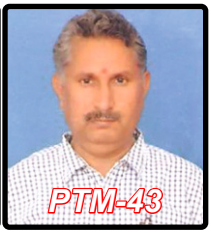

श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद

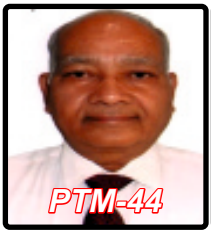

श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

श्री सत्यनारायण शर्मा, दिल्ली

श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली

श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर

श्री सुरेश शर्मा, नीमच

श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत

श्री हुकुमचन्द जांगिड, इन्दौर

श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर

श्री गजानन जांगिड, जालना

श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर

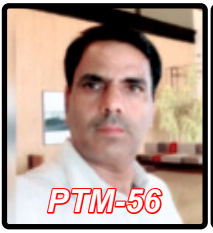

श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू

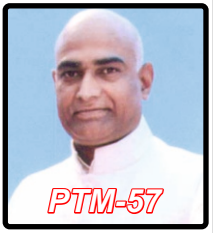

श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री फूलकुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली

श्री अमराराम जांगिड, जोधपुर

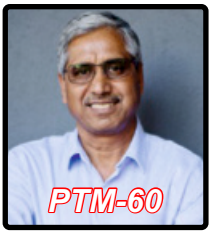

श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू

श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर

श्री यादराम जांगिड, दिल्ली

श्री बाबू लाल, बैंगलुरू

श्री अशोक दतु राम, अहमदाबाद

श्री दयानन्द शर्मा, दिल्ली

श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर

श्री राधेश्याम शर्मा, वापी

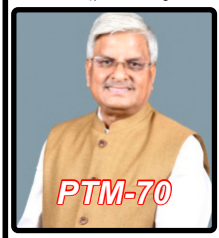

श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू

श्री गोपाल शर्मा, कोरबा

श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर

श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू

श्री भीमराज शर्मा, जयपुर

श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू

श्री भंवरलाल सुथार, गोवा

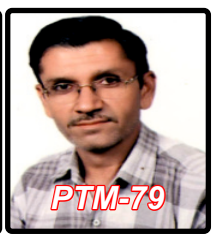

श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई

श्री शुभम शर्मा, कोरबा

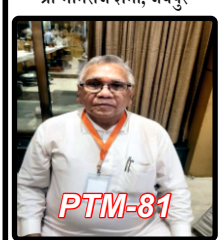

श्री नानूराम जांगिड, धुलिया

श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर

श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.

श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर

श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर

श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर

श्री अनिल शर्मा, इन्दौर

श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद

श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल

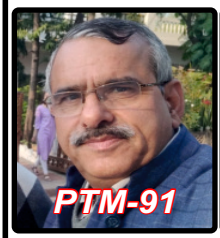

श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद

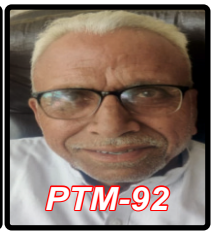

श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

श्री महावीर प्रसाद जांगिड, अहमदाबाद

श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर

श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़

श्री जगतराम भद्रेचा, बैंगलुरु

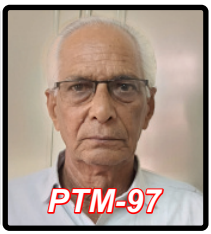

श्री पुरुषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर

श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़

श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम

श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत

श्री चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर

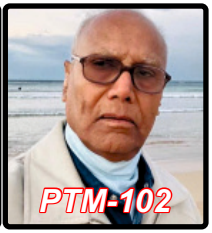

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत

श्री सत्यपाल वत्स, बहादुरगढ़

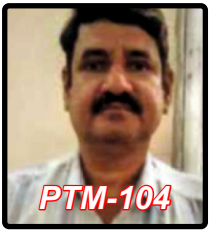

श्री सोमदत्त शर्मा, लखनऊ

श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली

श्री अनिल शर्मा, तेलंगाना

श्री मुकेश जांगिड, तेलंगाना

श्री भंवरलाल जांगिड, सूरत

श्री जगदीश खण्डेलवाल, दिल्ली

श्री भंवरलाल शर्मा, पाली,राज0

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री प्रहलाद चन्द शर्मा, बैंगलुरू

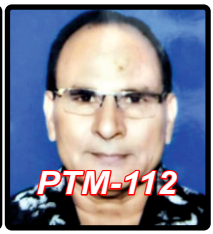

श्री नानूराम जांगिड, हिंगोली,

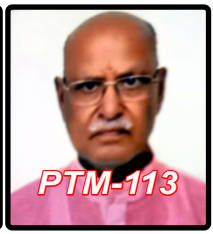

श्री रामानन्द शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

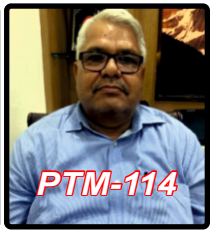

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

श्री कैलाश जांगिड, सूरत

श्री मदन लाल शर्मा, वडोदरा

श्री गजानन्द जांगिड, सूरत

श्री हरिराम शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

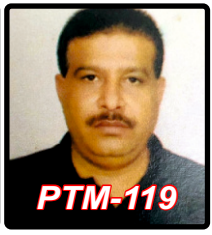

श्री सतवीर शर्मा, गुरूग्राम

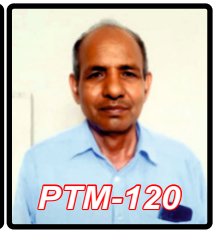

श्री किशोरी लाल शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

श्री सुनील सिद्धड़, चिड़ावा, झुंझुनू

श्री सुरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़

श्री मोहन पंवार, सागरपुर दिल्ली

श्री रामावतार जांगिड, सरदारशहर, चूरू

श्री राजील कुमार जांगिड, सूरत

श्री सादीराम जांगिड, हनुमानगढ़,रा0

श्री मामराज मिस्त्री, सूरत

श्री सागरमल जांगिड, वडोदरा

श्री सुनील कुमार जांगिड, महाराष्ट्र

श्री महेश कुमार शर्मा, दिल्ली

श्री किशन लाल जांगिड, जयपुर

श्री एकलिंग प्रसाद सुथार, सूरत

श्री राजेश जांगिड, हैदराबाद

श्री सियाराम जांगिड, हैदराबाद

श्री रामवतार शर्मा, तिरूवल्लुर,तमिलनाडु

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री सतीश कुमार जांगिड,(किशनगढ़ बास) वलसाड

श्री शंकरलाल माकड़, हैदराबाद

श्री महेश चन्द शर्मा, साध नगर, दिल्ली

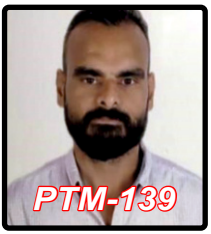

श्री राकेश जांगिड, सूरत

श्री देवकरण जांगिड, हैदराबाद

श्री सुभाष शर्मा, भरूच

श्री महेश शर्मा, बैंगलुरू

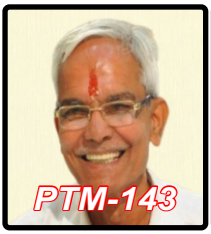

श्री चंद्र प्रकाश शर्मा, गांधीधाम,कच्छ

श्री सतवीर जांगिड, बैंगलुरू

श्री महेन्द्र सिंह जांगिड, धारूहेड़ा रेवाड़ी

श्री पूरनमल जांगिड, सूरत

स्वर्गीय श्री नरेश शर्मा, भरूच

श्री बंशीधर जांगिड, भरूच

श्री मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर

श्री गोपाल जांगिड, गांधी नगर

श्री राजेन्द्र कुमार डभाण, खेड़ा

श्री ओम प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

श्री अरूण कुमार डभाण, खेड़ा

श्री कैलाश चंद्र शर्मा, डभाण, खेड़ा

श्री मदन लाल सुथार, भरूच

श्री महेन्द्र जांगिड, भरूच

श्री कन्हैया लाल, (ओजटू वाले) बैंगलुरू

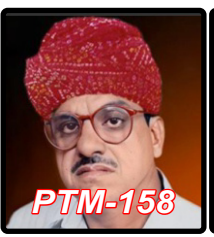

श्री शंकरलाल जांगिड, झुंझुनूं

श्रीमती उषा बड़वा धर्मपत्नी श्री आनन्द बड़वा, कोटा राज0

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

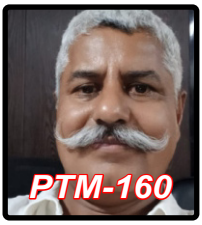

श्री देवेन्द्र शर्मा, उदयपुर, राजस्थान

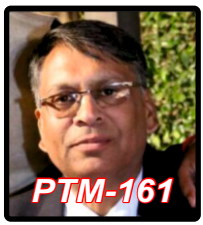

श्री नरोत्तम लाल जांगिड, फरीदाबाद, हरियाणा

श्री हजारी लाल शर्मा, जयपुर, राज0

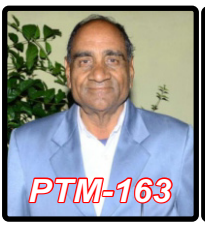

श्री भागीरथ मल जांगिड, जयपुर, राज0

श्री मदनलाल शर्मा, रायपुर छ0गढ़

श्री पतराम शर्मा , गुरूग्राम, हरियाणा

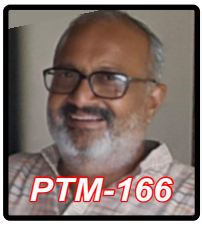

श्री बजरंग शर्मा , दुर्ग, छतीसगढ़

श्री विरदी चन्द शर्मा , रायपुर, छतीसगढ़

श्री ओमप्रकाश जांगिड, रायपुर, छतीसगढ़

श्री संतलाल शर्मा, बैंगलुरू, कर्नाटक

श्री जगन नाथ जांगिड, रेवाड़ी, हरियाणा

श्री राजकुमार चोयल,पोलो ग्राउंड, सीकर

श्री गोपालदास शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री विनोद कुमार शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर, राज0

श्री प्रहलाद राय जांगिड, दूजोद, सीकर, राज0

श्री भोलाराम शर्मा, दुर्ग, छतीसगढ़

श्री रमेश शर्मा, रायपुर, छतीसगढ़

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री अनुराग नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री ओम प्रकाश जांगिड, वापी वलसाड, गुज0

श्री शिवपाल जांगिड, बेटमा, इन्दौर, मध्य प्रदेश

श्री उमेदराम जांगिड, वापी, वलसाड, गुजरात

श्री द्वारका प्रसाद शर्मा, वापी, वलसाड, गुजरात

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

श्री अरुण कुमार, आया नगर,दिल्ली

श्री सुरेश जांगिड, दक्षिणी दिल्ली

श्री श्रीराम जांगिड, वाजवा, वडोदरा, गुजरात

वर चाहिए

1. Wanted a suitable match for Jangid Brahmin girl in Delhi **D.O.B-** 16/11/1994, Ht-5'3", **Permanent Residence:** Gurgaon, originally from VPO, Chang, Bhiwani, Haryana. **Educational Qualification:-** Graduation: B.A. (Hons.) Political Science – Maharishi Dayanand University (MDU), **Post Graduation:** M.A. Political Science – University of Delhi, Doctorate (Ph.D.): Lovely Professional University, **Job Details:**Profession: Assistant Professor, Organization: Lovely Professional University, Family Details: Father's Occupation: Own Business Mother's Occupation: Homemaker, **Gotra Self**-Krothwal, **Mother's Gotra:** Berwal, **Dadi's Gotra:** Khanderwal, **Nani's Gotra:** Selwal **Contact Details:** Father: 9990248595, Mama: 9312273823

वर चाहिए

2. Wanted a suitable match (PG Doctor preferably) for Jangid Brahmin girl **D.O.B-** 10.01.1997, Ht-5'4", **Permanent Residence:** Village - Kheri Saffa, PO - Kharak Bhura, Tehsil - Uchana Distt. - Jind (Haryana) – 126115, **Present address:** Noida (UP) **Educational Qualification:-**MD (2022-25) - Anaesthesiology & Critical care from SMS Medical College, Jaipur, Rajasthan, and MBBS (2015-20) from BPS Govt. Medical College, Khanpur Kalan (Sonipat), Haryana. **Job Details:** Senior Resident at Dr. Sampurnanand Medical College, Jodhpur (Raj) since February 2026. **Family Details:** Father's profession: Senior Manager - Quality, Chambal Fertilisers and Chemicals Ltd., Delhi Mother's profession: Home maker **Gotra Self**-Bhere, **Mother's Gotra:** Tyongrah, **Dadi's Gotra:** Jale, **Nani's Gotra:** Khandelwall **Contact Details:** Father: K.K. Jangra- 9411876458

वधु चाहिए

1. Wanted a suitable match for Jangid Brahmin boy **D.O.B-** 11.09.1999, Ht-6'0", **Permanent Residence:** Village - Kheri Saffa, PO - Kharak Bhura, Tehsil - Uchana Distt. - Jind (Haryana) – 126115, **Present address:** Noida (UP). **Educational Qualification:-**M Tech (2022-24) - Production & Industrial Engineering from National Institute of Technology, Kurukshetra (Gold Medalist) B Tech (2017-21) - Mechanical Engineering from JSS Academy of Technical Education, Noida, Uttar Pradesh **Job Details:**Profession: Senior Manufacturing Engineer in John Deere India Pvt. Ltd, Pune (Mah), **Family Details:** Father's profession: Senior Manager - Quality, Chambal Fertilisers and Chemicals Ltd., Delhi Mother's profession: Home maker **Gotra Self**-Bhere, **Mother's Gotra:** Tyongrah, **Dadi's Gotra:** Jale, **Nani's Gotra:** Khandelwall **Contact Details:** Father: K.K. Jangra- 9411876458

2. Wanted a suitable match for Jangid Brhamin Boy in Alwar, Rajasthan. **DOB**-06/10/1994, Ht-5'8''. **Education**- BTech, M.A., Appointed as Asst. Manager in Govt Bank. Prefered Jaipur Zone districts. **Gotra-** Dahmiwal, Samriwal, Dosodiya, Harsoliya. Contact Detials: Ramanand Sharma 8005721411, 9414906614

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के तत्वावधान में ग्राम चौसला में आयोजित सामूहिक विवाह , कैमरे की विहंगम दृष्टि में

BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS

Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

SHARMA
Group of companies

25 YEARS OF DRIVEN EXCELLENCE
SHARMA HYUNDAI
SINCE 1998

LATE SHREE
KANHAIYALAL
SHARMA
(CHOYAL)

FOUNDER

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road
Call : 9099978327

Satellite
Call : 9099978334

Parimal Garden
Call : 9099978328

Naroda
Call : 9099938777

TOYOTA

Authorised Toyota Dealer : NARMADA TOYOTA
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MG

MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31

Posted at:L.P.C. DELHI
R.M.S., Delhi-06

Total Page-64

Registered With The Registrar of
News Papers For INDIA,
Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2024-26
of Post without prepayment of postage

Mahindra Rise

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

भागीरथ मोटर्स (इं) प्रा.लि.

पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

Bhagirth & Brothers

Bus & Truck Body Manufacture Since 1960

Organization :

Audi Automobiles, Pithampur
Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore

Adm. Office
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax” 0731-2538841

Works:
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com

Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 March 2026
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006